Āraṇyaka-Gānam

Note:

This preliminary PDF file is **not printable** due to copyright reasons.
This file must not be offered for download elsewhere on the internet.

The corrected final edition of this work will be published in due course as a printed book available through the book trade.

http://www.sanskritweb.net

ॐ

सामवेद कौथुमशाखीय

आरण्यक गानम्

Āraṇyaka-Gānam

Edited by

Subramania Sarma, Chennai

Chennai 2006

Preface

This work is primarily based on the following work

- *Āraṇyaka Gānam, Nārāyaṇasvāmi Dīkṣita, Svādhyāya Maṇḍalaṁ, 1942, Aundh*

This work will not exist except for the support provided by Mihail Bayaryn who tirelessly worked on providing me with support throughout the whole project.

As this is only a preliminary version there could be some errors. Users are requested to report any corrections or mistakes to srothriyan@yahoo.co.in.

I also thank the people at Omkarananda Ashram who have generously put their Itranslator software in the public domain thereby making this project feasible.

I conclude by thanking the various institutions and individuals who have lent, procured or presented to me various versions of the texts and also by once again thanking Mr. Ulrich Stiehl for having made this project possible.

Subramania Sarma

May 2, 2006

ॐ

अथारण्यक गानम्।

(गेय गानम्।)

अथार्क पर्व

(१।१) ॥ अष्टौ वैरूपाणि (अष्टो वैरूपम्)। वैरूपो बृहतीन्द्र इन्द्रसूर्यौ वा॥

ओम्॥ यद्यावई॥ द्रताऽ३१उवाऽ२३। शाऽ२३४ताम्। हाहाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४डा।

शतंभूमीः। उताऽ३१उवाऽ२३। सीऽ२३४यूः। हाहाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४डा॥

नत्वावज्रिन्त्सहस्रꣳसू। रियाऽ३१उवाऽ२३॥ आऽ२३४नू। हाहाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४डा।

नजातम। ष्टरोऽ३। आउ। वाऽ२३। दाऽ२३४सी। हाहाऽ३१उवाऽ२३॥

इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १०। प. २२। मा. १३) १ (फि।१)

(१।२) ॥ ह्रस्वावैरूपम्।

यद्यावइन्द्रतेशतम्। ए। शतंभूमीरुत। स्योवा॥ नात्वावज्रिन्। सहस्रꣳसूरियाऽ२आनूऽ२॥

नाजाऽ२तमा॥ ष्टरोऽ२३। दाऽ२साऽ२३४औहोवा॥ दिशंविशꣳहस। अश्वाशिशुमतीऽ३।

इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १२। मा. ७) २ (फे।२)

(१।३) ॥ पञ्चनिधनम् वैरूपम्॥

यद्याव इन्द्रते शतम्। ए। शतंभूमीरुत। स्योवा॥ ओवाऽ२। ह्ꣳऽ२। ह्ꣳऽ२। ह्ꣳऽ२।
ओवाऽ३। हाउवा। नत्वावज्रिन्त्सहस्रꣳसूर्याअनु। ओवाऽ२। ह्ꣳऽ२। (त्रिः)। ओवाऽ३।
हाउवा। नजातमष्टरोदसी। ओवाऽ२। ह्ꣳऽ२। (त्रिः)। ओवाऽ३। हाउवा। दिशंविशꣳहस्॥
ओवाऽ२। ह्ꣳऽ२। (त्रिः)। ओवाऽ३। हाउवा। अश्वाशिशुमती। ओवाऽ२। ह्ꣳऽ२। (त्रिः)।
ओवाऽ३॥ हाउवाऽ३। इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. २३। प. ३९। मा. १०) ३ (ढौ।३)

(९।४) ॥ षण्णिधनं वैरूपम्॥

यद्याव इन्द्रते शतम्। ए। शतंभूमीरुत। स्योवा॥ हाउहाउहाउवा। नत्वावज्रिन्त्सहस्रꣳसूर्याअनु।
हाउ(३)वा। नजातमष्टरोदसी। हाउ(३)वा। दिशंविशꣳहस्॥ हाउ(३)वा। अश्वाशिशुमती।
हाउ(३)वा। युवतिश्चकुमारिणी। हाउ(३)वाऽ३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १५। प. १६। मा. २३) ४ (पि।४)

(९।५) ॥ सप्तनिधनं वैरूपम्॥

यद्याव इन्द्रते शतम्। ए। शतंभूमीरुत। स्योवा। हाउ(३)वा। नत्वावज्रिन्त्सहस्रꣳसूर्याअनु।
हाउ(३)वा। नजातमष्टरोदसी। हाउ(३)वा। दिशंविशꣳहस्॥ हाउ(३)वा। अश्वाशिशुमती।
हाउ(३)वा। सूवः। हाउ(३)वा। ज्योतिः। हाउहाउहाउवाऽ३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १५। प. १८। मा. २८) ५ (बै।५)

(९।६) ॥ अष्टा निधनं वैरूपम्॥

यद्यावइन्द्रतेशतम्। ए। शतंभूमीरुत। स्योवा॥ हाउ(३)वा। नत्वावज्रिन्त्सहस्रꣳसूर्याअनु। हाउ(३)वा। नजातमष्टरोदसी। हाउ(३)वा। दिशंविशꣳहस्॥ हाउ(३)वा॥ अश्वाशिशुमती। हाउ(३)वा। युवतिश्चकुमारिणी॥ हाउ(३)वा। सूवः। हाउ(३)वा। ज्योतिः। हाउहाउहाउवाऽ३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १७। प. २०। मा. ३१) ६ (जा।६)

(१।७) ॥ द्वादश निधनं वैरूपम्॥

यद्यावइन्द्रतेशतम्। ए। शतंभूमीरुत। स्योवा॥ ओहहाउहाउ। ओहहाउवा। नत्वावज्रिन्त्सहस्रꣳसूर्याअनु। ओहाओहा। ओहाओहा। ओहाओहाऽ३। हाउवा। नजातमष्टरोदसी। ओहहाउहाउ। ओहहाउवा। दिशंविशꣳहस्॥ ओहाओहा। ओहाओहा। ओहाओहाऽ३। हाउवा॥ अश्वाशिशुमती। ओहहाउहाउ। ओहहाउवा। सूवाः। ओहाओहा। ओहाओहा। ओहाओहाऽ३। हाउवा। ज्योतिः। ओहहाउहाउ। ओहहाउवा। ईडा। ओहाओहा। ओहाओहा। ओहाओहाऽ३। हाउवा। इट्स्थिइडा। ओहहाउहाउ। ओहहाउवाऽ३॥ हौऽ३। आऽ३। ऊऽ३। ईऽ२३४५॥

(दी. ६८। प. ४२। मा. ३८) ७ (ठै।७)

(१।८) ॥ पुष्यम् वैरूपम्॥

यद्यावइन्द्रतेशतम्। ए। शतंभूमीरुत। स्योवा॥ हाओवा। (द्विः)। हुवे। हाओवा। हुवे। हाओऽ२३४वा। नत्वावज्रिन्त्सहस्रꣳसूर्याअनु। हाओवा। [त्रिः]। हुवे। हाओवा। [द्वे द्विः]। हुवे। हाओऽ२३४वा। नजातमष्टरोदसी। हाओवा। (चतुः)। हुवे। हाओवा। [द्वे चतुः]॥

नाजातमष्टरोदसाइ। ऐहोइ। आऽ२३४इही। (त्रीणिएवंचतुः)॥ हाओवा। (पञ्चकृत्वः)। हुवे।

हाओवा। [द्वे पञ्चकृत्वः]। हैहेहेहोवाऽ३। हाउवाऽ३॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ११५। प. ६३। मा. ४४) ८ (र्बी।८)

(२।१) ॥ आन्तरिक्षे द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

हाउपिबासुता॥ स्यरसि। नाः। औहौहोवाऽ२। इहा। मत्स्वानइन्द्रगोम। ताः। औहौहोवाऽ२।

इहा। आपिर्नोबोधिसधमाद्येवृ। धाइ। औहौहोवाऽ२। इहा॥ अस्मा२अ। वा।

औहौहोवाऽ२॥ इहा। तुताइ। धाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ सुष्टुभस्तुभोश्वाशिशुमक्राऽ३न्।

इट्ऽस्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. २६। प. २१। मा. १०) ९ (कौ।९)

(२।२)

पिबासुता॥ स्यरसिनः। मात्स्वाऽ१नाईऽ२। आ। औऽ३होवाहाउवाऽ३। ईऽ३४डा।

द्रगोमतः। आपिर्नोबोऽ२। आ। औऽ३होवाहाउवाऽ३। ईऽ३४डा। धिसधमाद्येवृधे॥

आस्मा२ऽ१अवाऽ२। आ। औऽ३होवाहाउवाऽ३। ईऽ३४डा॥ तुताइ।

धाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ विष्टुस्तुभोश्वाशिशुमक्राऽ३न्। इट्ऽस्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १५। प. २०। मा. ११) १० (म।१०)

(३।१) ॥ अरिष्टे द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्जगती सोम देवा जगती ब्रह्मणस्पतिर्वा॥

हाह। होइया। [द्वे त्रिः]। पावी। त्रंताइ। विततोऽ३०ब्र। ह्मणस्पाऽ२३४ताइ॥ प्राभूः। गात्रा।

णीऽ३परियाइ। षिवाइश्वाऽ२३४ताः॥ आता। मता। नूऽ३र्नतदा। मोअश्नूऽ२३४ताइ॥

शार्ता। सआइत्। वहन्तः। सम्। तदाशाऽ२३४ता। हाह। होइया। [द्वि त्रिः]॥ होइडा।

(द्विः)। होऽ२३४५इ। डा॥

(दी. २६। प. ३३। मा. २२) ११ (गा।११)

(३।२)

हाह। हौऽ३४५। [द्वि त्रिः]। पावी। त्रंताइ। विततोऽ३०ब्र। ह्मणस्पाऽ२३४ताइ॥ प्राभूः।

गात्रा। णीऽ३परियाइ। षिवाइश्वाऽ२३४ताः॥ आता। ष्ठता। नूऽ३र्न्नतदा।

मोअश्नूऽ२३४ताइ॥ शार्ता। सआइत्। वहन्तः। सम्। तदाशाऽ२३४ता। हाह। हौऽ३४५।

[द्वि त्रिः]। होइडा। (द्विः)। होऽ२३४५इ। डा॥

(दी. १४। प. ३३। मा. १६) १२ (दू।१२)

(४।१) ॥ अहरीते द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः ऋभुर्वा॥

हावाभी॥ त्वापूर्वपीत। याइ। इहाऽ३। हाउवाऽ३। बृऽ२३४हात्। इन्द्रास्तोमाइ। भिरायवाः।

इहाऽ३। हाउवाऽ३। बृऽ२३४हात्॥ समाइचीना। सऋभवाः। समाऽ२स्वरान्। इहाऽ३।

हाउवाऽ३। बृऽ२३४हात्॥ रुद्रागृणा। तपूर्वियाम्। इहाऽ३। हाउवाऽ३। बृऽ२३४हात्॥ ए।

बृहत्॥

(दी. ८। प. २४। मा. १७) १३ (ढे।१३)

(४।२)

अभीहाउ॥ त्वापूर्वपीतयाइ। इह। हाऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४वाः। इन्द्रस्तोमेभिरायवाः॥

इह। हाऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४वाः। समी। चीनासऋभवस्समस्वरान्। इह।

हाऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४वाः॥ रुद्रागृणन्तपूर्वियाम्। इह। हाऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४वाः॥
एऽ३। सुवाऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. २०। मा. १५) १४ (ङु।१४)

॥ चतुर्दश, प्रथमः खण्डः॥१॥

(५।१) ॥ वरुणस्य देयस्थानम्। वरुणो बृहतीन्द्रः॥

हाउपिबासुता॥ स्यरसिनाऽ३ः। होइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउवा। सहोनरः।
मत्स्वानइन्द्रगोमताऽ३ः। होइ। (त्रिः)। हाउ(३)वा। सत्यमोजः। आपिर्नोबोधिसधमाऽ३।
होइ। (त्रिः)। हाउ(३)वा। स्वर्ज्योतिः॥ दियेवृधेऽ३। होइ। (त्रिः)। हाउ(३)वा॥ एस्थादिदम्।
(त्रिः)। अस्मा॰अवन्तुतेधियाऽ३ः। होइ। (त्रिः)। हाउ(३)वा॥
द्यौरक्रान्भूमिरततनत्समुद्र॰समचूकुपत्। इट्ऽस्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. २३। प. ३४। मा. ४४) १५ (ढौ।१५)

(६।१) ॥ बृहद्देवस्थानम् प्रजापतिः बृहती मरुतः॥

हाउहाउहाउ। बृहात्। (त्रिः)। बृहत्। (त्रिः)। बृहात्। (त्रिः)। बृहदिन्द्रायऽ३गायाऽ१ताऽ२॥
मरुतोवृत्रऽ३हान्ताऽ१माऽ२म्॥ येनज्योतिरजनायनृऽ३तावाऽर्द्धाऽ२ः॥
देवन्देवायऽ३जागृऽ१वीऽ२३। हाउहाउहाउ। बृहात्। (त्रिः)। बृहत्। (त्रिः)। बृहात्। (द्विः)।
बृहाऽ३१उ। वाऽ२॥ ए। बृहत्। [द्वे त्रिः]॥

(दी. १६। प. ३१। मा. २९) १६ (को।१६)

(७।१) ॥ ऐरयदैरिणे द्वे। वरुणो बृहती सोमः॥

ऐरायाऽ२त्। (द्विः)। ऐरायाऽ२३त्। सुवराऽ३४। हाहोइ। पुनानःसोमऽ३धाराऽ१याऽ२॥
अपोवसानोऽ३आर्षाऽ१सीऽ२॥ आरन्तधायोनिमृतस्यऽ३साइदाऽ१सीऽ२॥
उत्सोदेवोहिऽ३राण्याऽ१याऽ२ः। ऐरायाऽ२त्। (द्विः)। ऐरायाऽ२३त्। सुवराऽ३४। हाहाऽ३४।
औहोवा॥ एऽ३। देवादिवाज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. २५। प. १७। मा. ११) १७ (फा।१७)

(८।१) ॥ वरुणो गायत्रीन्द्रः॥

हावौवोहाउ। अभित्वावार्षाऽ३भासुताइ। अभित्वावा। षाभासुताइ। अभित्वावार्षाऽ३भासुताइ॥
औहोहावौहोऽ२। सुतश्सृजामीऽ३पीतयाइ। सुतश्सृजा। मीपीतयाइ।
सुतश्सृजामीऽ३पीतयाइ॥ हावौहोहाउ। तृंपावियाश्नूऽ३हीमदाम्। तृंपाविया। श्नूहीमदाम्।
तृम्पावियाश्नूऽ३हीमदाम्॥ औहोहावौहोऽ२। उहुवाऽ३हाउ। वाऽ३॥ हस्॥

(दी. ३४। प. १९। मा. १३) १८ (धि।१८)

(९।१) ॥ आङ्गिरसे द्वे। अंगिरा बृहती सोमः॥

हाउहाउहाउ। हौवाआऽ२३४वा। हाहाऽ३१उवाऽ२। पुनानःसोमधारया। श्रवोबृहदिहाइडा॥
अपोवसानोअर्षसि। श्रवोबृहदिहाइडा॥ आरत्नधायोनिमृतस्यसीदसि। श्रवोबृहदिहाइडा॥
उत्सोदेवोहिरण्ययः। श्रवोबृहदिहाइडा। हाउहाउहाउ। हौवाओऽ२३४वा।
हाहाऽ३१उवाऽ२॥ सुवर्जगन्महस्पृथिव्यादिवमाश्नकेमवाजिनोयमम्। हस्।
इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. ३९। प. १७। मा. १९) १९ (थो।१९)

(९।१) ॥ आङ्गिरसे द्वे (तत्रोत्तरम्)।

औहोवाऔहोवाऔहोऽ३वा। तवेदिन्द्रावमंवसु॥ त्वंपुष्यसिमध्यमम्॥
सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि॥ नकिष्ट्वागोषुवृण्वते। औहोवाऔहोवाऔहोऽ३वा॥
सुवर्जगन्मदेवानामवसावयश्शकेमवाजिनोयमम्। सुवर्जगममहस्पृथिव्यादिवमा।
हस्स्थिबृहन्नमाऽ२३४५ः॥

(दी. ३०। प. ९। मा. ८) २० (भे।२०)

(९।२) ॥ बार्हस्पत्यम्। बृहस्पतिर्बृहतीन्द्रः॥

औहोऔहोऽ३वा। (त्रिः)। इडाऽ२३भिराऽ३४। औहोवा। तवेदिन्द्रावमंवसु॥
त्वंपुष्यसिमध्यमम्॥ सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि॥ नकिष्ट्वागोपुवृण्वते। औहोऔहोऽ३वा।
(त्रिः)। इडाऽ२३भिराऽ३४। औहोवा॥ इडासुवोबृहन्नमाऽ२३४५ः॥

(दी. ३१। प. १५। मा. ८) २१ (ङे।२१)

(१०।२) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजो बृहतीन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। औहोआत्वासहस्रमाशताम्॥ हाउहाउहाउ। युक्ताराऽ१थाऽ२३इ।
हाउहाउहाउ। हिराण्याऽ१याऽ२३इ। हाउहाउहाउ। ब्रह्मायूऽ१जाऽ२३ः॥ हाउहाउहाउ।
हारयइ। द्रकाइश्चाऽ१इनाऽ२३ः॥ हाउहाउहाउ। वहान्तूऽ१सोऽ२३॥ हाउहाउहाउ।
मषीऽ३। ताऽ२३४याइ। उहुवाऽ६हाउ। वा॥ हस्॥

(दी. २६। प. १९। मा. ३३) २२ (घि।२२)

(११।१) ॥ आथर्वणम्। अथर्वा गायत्री आपः॥

उहुवाओहो। औहोवा। श्नोदेवीः॥ उहुवाओहा। औहोवाहाउ। वा। आवत्।

अभिष्टाऽ२३याऽ३इ॥ उहुवाओहा। औहोवा। श्नोभवा॥ उहुवाओहा। औहोवाहाउ। वा।

सूवः। तुपीताऽ२३याऽ३इ॥ उहुवाओहा। औहोवा। शंयोरभी॥ उहुवाओहा। औहोवाहाउ।

वा। ज्योतिः। स्रवन्तूऽ२३नाऽ३ः। उहुवाओहा। औहोवाहाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ४३। प. २८। मा. १८) २३ (ड्रै।२३)

(१२।१) ॥ नारद्वसवम्। नरद्वसुर्बृहतीन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। औहोइन्द्रज्येष्ठन्नआभराऽ३ए॥ हाउहाउहाउ। औहोऽ२। ओऽ२। जिष्ठंपूपारा।

औहोवाश्रावाः॥ हाउहाउहाउ। औहोऽ२। याऽ२त्। दिधृक्षेमाव। ज्रहस्त। औहोवारोदासी॥

हाउहाउहाउ। औहोऽ२। ओऽ२। भेसुशाइप्रा। औहोवापाप्राः। हाउहाउहाउ। औहोऽ२।

आऽ२। उहुवाऽ३हाउ। वाऽ३॥ हस्॥

(दी. ३६। प. २४। मा. २४) २४ (घी।२४)

(१३।१) ॥ बृहती वामदेव्ये द्वे। वामदेवो गायत्रीन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। बृहद्वामम्। (त्रिः)। बृहत्पार्थिवम्। (त्रिः)। बृहदन्तरिक्षम्। (त्रिः)। बृहद्दिवम्।

(त्रिः)। बृहद्वामम्। (त्रिः)। कयानश्चित्रऽ३आभूऽ१वाऽ२त्॥ ऊतीसदावृऽ३धाःसाऽ१खाऽ२॥

कयाशचिष्ठऽ३यावाऽ१र्ताऽ२३॥ हाउहाउहाउ। बृहद्वामम्॥ (त्रिः)। बृहत्पार्थिवम्। (त्रिः)।

बृहदन्तरिक्षम्। (त्रिः) बृहद्दिवम्। (त्रिः)। बृहद्वामम्। (द्विः)। बृहद्वामम्। औहोवाहाउ। वा॥

ए। बृहद्वामम्। ए। बृहद्भ्योवामम्। ए। वामेभ्योवामम्। ए। वामम्॥ वामम्। वामम्॥

(दी. ४५। प. ४७। मा. ४५) २५ (फु।२५)

(१३।२)

बृहद्वामम्। (त्रिः)। कयानश्चाइ। त्रआऽ२भूऽ२३४वात्॥ ऊताइसदा। वार्द्धःसाऽ२३४खा॥
कयाशचाइ। ष्ठयाऽ२वाऽ२३४र्ता। बृहद्वामम्। (द्विः)॥ बृहत्। वामाऽ३उवा। ए। बृहद्वामम्॥
[द्वे त्रिः]॥

(दी. १०। प. १९। मा. १५) २६ (भु।२६)

(१४।१) ॥ भरद्वाजस्य बृहत्साम भरद्वाजो बृहतीन्द्रः॥

औहोइत्वामिद्धिहवामहाऽ३ए॥ सातौवाजा। स्याकाराऽ२३४वाः। तुवाऽ३४। औहोवा।
वृत्राइषुवाइ। द्रासाऽ३१त्। पतिन्नाऽ२३४राः॥ त्वांकाष्टाऽ३४। औहोवा॥ सूऽ२आर्वाऽ२३४।
ताऽः। उहुवाऽ६हाउ। वा॥ हस्॥

(दी. १३। प. १५। मा. ११) २७ (ण।२७)

॥ त्रयोदश द्वितीयः खण्डः॥२॥

॥ इति (ग्रामे) आरण्यकगाने प्रथमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(१५।१) ॥ वसिष्ठजमदग्न्योरर्कौ द्वावगस्त्य-जमदग्न्योर्वा वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

इयाऽ३होइ। (त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि। ताहवन्ताइ॥ यत्पारियाः। युनजा। ताइधियस्ताः॥
शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्वकामाइ॥ आगोमताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। इयाऽ३होइ। (द्विः)।
इयाऽ३होऽ२। याऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. २०। मा. १३) १ (ड्री।२८)

(१५।२) ॥ जमदग्निस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

ओहोइया। (त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि। ताहवन्ताइ॥ यत्पारियाः। युनज। ताइधियस्ताः॥

शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्वकामाइ॥ आगोमताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। ओहोइया। (द्विः)।

ओहोऽ३४५याऽ६५६॥ ईऽ२३४५॥

(दी. २५। प. १९। मा. १२) २ (भ्रा।२९)

(१६।१) ॥ स्वाशिरामर्कः स्वाशिरा गायत्री सोमेन्द्रौ॥

अयामायाम्। अयामायाम्। अयामायाम्। स्वादिष्ठयाऽ२। मदाइष्ठाऽ२३४५या॥

पवस्वसोऽ२। मधाराऽ२३४या॥ इन्द्रायपाऽ२। तवाइसूऽ२३४ताः॥ अयामायाम्।

अयामायाम्। अयाम्। आऽ२। याऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १६। मा. ९) ३ (प्रो।३०)

(१७।१) ॥ दीर्घतमसोऽर्कः दीर्घतमा जगती सोमः॥

हाउहाउहाउ। औहोवाएहियाहाउ। धार्त्ता। दाइवःपवतेकृत्वियः। रसोरसो। रसः॥

हाउहाउहाउ। औहोवाएहियाहाउ। दाक्षाः। दाइवानामनुमादियः। नृभीर्नृभीः। नृभीः॥

हाउ(३)। औहोवाएहियाहाउ। हारीः। सार्जानोअत्योनस। त्वभीस्त्वभीः। त्वभीः॥ हाउ(३)।

औहोवाएहियाहाउ। वार्था। पाजाꣳसिकृणुषेनदी। षुवाषुवा। षुवा। हाउ(३)।

औहोवाएहियाऽ३हाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ५३। प. २८। मा. ३७) ४ (ड्रे।३१)

(१८।१) ॥ मरुतामर्कौ द्वौ मरुतो बृहती मरुतः॥

हाउहाउहाउ। प्रवइन्द्रायबृहाताइ। हाताइ। (द्विः)॥ हाउ(३)। मरुतोब्रह्मअर्चाता। चाता।
चाता॥ हाउहाउहाउ। वृत्रꣳहनतिवृत्रहाशतक्रातूः। क्रातूः। क्रातूः॥ हाउ(३)।
वज्रेणशतपर्वाणा। र्वाणा। र्वाणा। हाउ(३)। वाऽ३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १६। प. १९। मा. २४) ५ (धी।३२)

(१८।२) ॥ मरुतां संस्तोभः मरुतो बृहती मरुतः॥

हाउहाउहाउ॥ सन्त्वानोनवुः। (त्रिः)। अनोनवुः। (त्रिः)। मरुतः। (त्रिः)। विश्वस्मात्। (त्रिः)।
प्रवइन्द्रायबृहाताइ। हाताइ। (द्विः)॥ मरुतोब्रह्मअर्चाता। चाता। चाता॥
वृत्रꣳहनतिवृत्रहाशतक्रातूः। क्रातूः। क्रातूः॥ वज्रेणशत्पर्वाणा। र्वाणा। र्वाणा। हाउहाउहाउ।
सन्त्वानोनवुः। (त्रिः) अनोनवुः। (त्रिः)। मरुतः। (त्रिः)। विश्वस्मात्। (द्विः)।
वाइश्वस्माऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३५। प. ३९। मा. ३९) ६ (भ्रो।३३)

(१९।१) ॥ अग्नेरर्कः अग्निः गायत्र्यग्निः॥

होहोवा। ई। ईया। (त्रीणि त्रिः)। अग्निर्मूर्द्धादिऽ३वाःकाऽ१कूऽ२त्॥
पतिःपृथीविऽ३याआऽ१याऽ२म्॥ अपाꣳरेताꣳसिऽ३जाइन्वाऽ१तीऽ२॥ होहोवा। ई। ईया।
(त्रीणि द्विः)। होहोवा। ई। ईऽ२। याऽ२३४। औहोवा॥ ए। अग्निर्मूर्द्धाभवाद्दिवः॥

(दी. ११। प. २५। मा. ५) ७ (ङु।३४)

(२०।१) ॥ प्रजापतेरर्कः प्रजापतिरनुष्टुप् द्यावापृथिवी॥

होवा। ईया। औऽ२३होआऽ३। आयाम्। पूषाऽ२। रयिर्भाऽ२३४गाः॥ सोमाः। पुनाऽ२।
नोअर्षाऽ२३४ती॥ पातीः। विश्वाऽ२। स्यभूमाऽ२३४नाः॥ वाया। ख्यद्रोऽ२।
दसीऊऽ२३४भाइ। होवा। ईया। औऽ२३होआऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ६। प. २०। मा. १०) ८ (डौ।३५)

(२१।१) ॥ इन्द्रस्यार्कौ द्वौ इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हावीन्द्राः॥ राजा। जगतः। चर्षणीनाम्। नाम्। नाम्। नाओइनम्। (त्रिः)। नाहोइनम्।
(त्रिः)। हावौहोहाउ। अधिक्षमा। विश्वरू। पंयदस्या। स्या। स्या। स्याओइनम्। (त्रिः)।
स्याहोइनम्। (त्रिः)। औहोहावौहोऽ२॥ ततोददा। तीऽ३दाशु। षाइवसूनी। नी। नी।
नाओइनम्। (त्रिः)। नाहोइनम्। (त्रिः)। हावोहोहाउ॥ चोदद्राधाः। उपस्तु। तंचिदर्वा। र्वा।
र्वा। र्वाओइनम्। (त्रिः)। र्वाहोइनम्। (त्रिः)। औहोहावौहोऽ३। हाउवाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ६६। प. ५१। मा. ७०) ९ (क्रौ।३६)

(२१।२)

इन्द्रोहाउ॥ राजा। जगतः। चर्षणीनाम्। नाम्। नाम्। नोवा। (त्रिः)। नोवाहाइ। (त्रिः)।
हाओऽ३। हाऽ३हाउ। अधिक्षमा। विश्वरू। पंयदस्या। स्या। स्या। स्योवा। (त्रिः)।
स्योवाहाइ। (त्रिः)। हाओऽ३। हाऽ३हाउ॥ ततोददा। तीऽ३दाशु। षाइवसूनी। नी। नी।
नोवा। (त्रिः)। नोवाहाइ। (त्रिः)। हाओऽ३। हाऽ३हाउ॥ चोदद्राधाः। उपस्तु। तंचिदर्वा। र्वा।
र्वा। र्वोवा। (त्रिः)। र्वोवाहाइ। (त्रिः)। हाओऽ३। हाऽ३हाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ७२। प. ५५। मा. २७) १० (त्रे।३७)

(२२।१) ॥ अर्कशिरः अर्को गायत्रीन्द्रः॥

हाउयास्या॥ इदमारजोयूऽ१जाऽ२ः॥ तुजेजनेवनाश्सूऽ१वाऽ२ः॥ आइन्द्रस्याऽ३४५राऽ६५६॥ तियंबृहत्॥

(दी. ३। प. ५। मा. ५) ११ (णु।३८)

(२२।२) ॥ अर्कग्रीवाश्च अर्को यजुरर्कः॥

पातीऽ२ः। (त्रिः)। दिवआ॥ पातीऽ२ः। (त्रिः)। अन्तरिक्ष। स्या। पातीऽ२ः। (त्रिः)। पार्थिव। स्या॥ पातीऽ२ः। (त्रिः)। अपामोषधी। नाम्॥ पातीऽ२ः। (त्रिः)। विश्वस्यभूत। स्या। पातीऽ२ः। पातीऽ२३ः। पाऽ२। ताऽ२३४। औहोवा॥ ए। पतिर्दिवः। ए। पतिरन्तरिक्षस्य। ए। पतिःपार्थिवस्य। ए। पतिरपामोषधीनाम्। ए। पतिर्विश्वस्यभूतस्य। ए। सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. २०। प. ४१। मा. २२) १२ (पा।३९)

(२३।१) ॥ वरुणगोतमयोरर्कः वरुणगोतमौ त्रिष्टुप् वरुणादित्यौ॥

हाउहाउहाउ। आयुश्चक्षुर्ज्योतिः। औहोवा। ईया। उदुत्तमंवरुणपाशमाऽ२३स्मात्॥ अवाधमंविमध्यमश्श्रथाऽ२३या॥ अथादित्यव्रतेवयंताऽ२३वा॥ अनागसोअदितयोसियाऽ२३माऽ३। हाउहाउहाउ। आयुश्चक्षुर्ज्योतिः। औहोवा। ईऽ२। याऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. २१। प. १५। मा. १०) १३ (डौ।४०)

(२४।१) ॥ अर्कपुष्पे द्वे प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

इय। होइ। इयइयईऽ३या। (त्रीणि त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि। ताह्वताइ॥ यत्पारियाः।
युनजा। ताइधियस्ताः॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्चकामाइ। आगोमताइ। व्रजेभ।
जातुवन्नाः। इय। होइ। इयइयईऽ३या। (त्रीणि द्विः)। इय। होइ। इयइय। ईऽ२।
याऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. ३४। मा. २४) १४ (घ्री।४१)

(२४।२)

उव। होइ। उवउवऊऽ३वा। (त्रीणि त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि। ताह्वन्ताइ॥ यत्पारियाः।
युनजा। ताइधियस्ताः॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्चकामाइ॥ आगोमताइ। व्रजेभ।
जातुवन्नाः। उव। होइ। उवउवऊऽ३वा। (त्रीणि द्विः)। उव। होइ। उवउव। ऊऽ२।
वाऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. ३४। मा. २४) १५ (घ्री।४२)

॥ पञ्चदशस्तृतीयः खण्डः॥३॥

(२५।१) ॥ ज्येष्ठ साम आज्यदोहम् अग्निर्वै श्वानरस्त्रिष्टुवग्निर्वैश्वानरः॥

हाउहाउहाउ। आज्यदोहम्। (त्रिः)। मूर्द्धानन्दाइ। वाऽ३अर। तिंपृथिव्याः॥ वैश्वानराम्।
ऋतआ। जातमग्नीम्॥ कविंस्सम्रा। जाऽ३मति। थिंजनानाम्॥ आसन्नःपा। त्राऽ३०जन।
यन्तदेवाः। हाउ(३)। आज्यदोहम्। (द्विः)। आज्यदोऽ५हाउ। वा॥ ए। आज्यदोहम्। (द्वे
द्विः)। ए। आज्यदोहाऽ२३४५म्॥

(दी. ३२। प. २७। मा. २३) १६ (छि।४३)

(२५।२) ॥ ईनिधनमाज्यदोहम्। (इति वैदिकसंकेतः)॥

२र र र र १ २ १ २ १ २ २र १र २^ १ २ ३ ४ ५
हाउहाउहाउ। हिम्स्थिचिदोहम्। चिदोहम्। चिदोहम्। मूर्द्धानन्दाइ। वाऽ३अर। तिंपृथिव्याः॥

२र १र २ १ र २र ३ ४ ५ २ १ २ ^ १ २ ३ ४र ५ २र १
वैश्वानराम्। ऋतआ। जातमग्नीम्॥ कविंॅसम्रा। जाऽ३मति। थिंजनानाम्॥ आसन्नःपा।

२^ १ २ ३४र ५ २र र र र १ २ १ २ न २ ^
त्राऽ३०जन। यन्तदेवाः। हाउहाउहाउ। हिम्स्थिचिदोहम्। चिदोहम्। चिदोऽ३हाउ। वाऽ३॥

३ १ १ १
ईऽ२३४५॥

(दी. १७। प. २२। मा. २२) १७ (छ्रा।४४)

(२५।३) ॥ ऋत-निधनमाज्यदोहम्। (इति वैदिकसंकेतः)॥

२र १ २ र १र २ ^ १ २ ३ ४ ५ २र १र २ १ र
हाउ(३)। च्योहम्। (त्रिः)। मूर्द्धानन्दाइ। वाऽ३अर। तिंपृथिव्याः॥ वैश्वानराम्। ऋतआ।

२र ३ ४ ५ २ १ २ ^ १ २ ३ ४र ५ २र १ २ ^ १ २ ३४र ५
जातमग्नीम्॥ कविंॅसम्रा। जाऽ३मति। थिंजनानाम्॥ आसन्नःपा। त्राऽ३०जन। यन्तदेवाः।

२र १ २ न २ २^ २ १
हाउ(३)। च्योहम्। (द्विः)। च्योऽ३हाउ। वाऽ३॥ एऽ३। ऋतम्॥

(दी. १५। प. २३। मा. २१) १८ (ब।४५)

(२६।१)॥ रुद्रस्य त्रय ऋषभाः, तत्रेदं प्रथमं रैवतऋषभःरुद्रो गायत्री प्रजापतिः॥

२र १ २ र २ १ र २ र १ र ३ २ र १
सुरूपकृत्नुमूतये। (त्रिः)। सुदुघामिवगोदुहे। जुहूमसाइ॥ द्याविद्यवाइ॥ (द्विः)।

२र १ २^ १
द्याविद्यावाऽ३१उ। वाऽ२३॥ उम्। (त्रिः)॥

(दी. १५। प. १२। मा. ७) १९ (फे।४६)

(२७।१) ॥ वैराजऋषभमिदं द्वितीयम् रुद्रो विराडिन्द्रः॥

२र र र १ २ १ २ १र र
हाउहाउहाउ। आइही। (त्रिः)। आइ। (त्रिः)। इयाहाउ। (त्रिः)। पिबासोमाम्। इन्द्र।

२ ३ ४ ५ २ १र २^ १ २ ३ ४ ५ २र १ र २^ १ २र ३ ४ ५
मन्दतुत्वा॥ यन्तेसुषा। वाऽ३हरि। अश्वअद्रीः॥ सोतुर्बाहू। भ्याऽ३ॅसुय। तोनअर्वा॥

हाउ(३)। आइही। (त्रिः)। आइ। (त्रिः)। इयाहाउ। (द्विः)। इयाऽ३हाउ। वाऽ३॥

ईऽ२३४५॥

(दी. १२। प. ३१। मा. २८) २० (त्रै।४७)

(२८।१) ॥ शाक्करऋषभमिति तृतीयम् रुद्रःपङ्क्तिरिन्द्रः॥

ओऽ३१म्। (त्रिः)। स्वादोरेइत्थाएविषूएवतआ। शंयोः। शंयोः॥ मधारेपिबाएन्तिगोएरियआ।
हविः। (द्विः)। याआएन्द्रेणाएसयाएवरिया। सुवः॥ (द्विः)। वृष्णाएमदाएन्तिशोएभथाआ।
ज्योतिः॥ (द्विः)। वस्वीरेअनूएस्वराएजियमा। ओऽ३१म्। (द्विः)। ओऽ३१२३४। वा॥

इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. ३८। प. २१। मा. ३२) २१ (टा।४८)

(२९।१)॥ अतीषंगानि त्रीणि, इन्द्रस्य त्रयोऽतीषंगाः, अथापरं रौद्रः रुद्र इन्द्रोनुष्टुप् गायत्री सोमः॥

एपुरोजिती॥ वोअन्धसस्सुतायमादयाऽ२इत्नवाइ। इडा॥ ऊच्चा॥ तेजातमाऽ२न्धसाः। अथा॥
दाइवी॥ सद्भूमियाऽ२ददाइ। अथा॥ ऊग्रम्॥ शर्ममहाऽ२इश्रवाः। अथा।
अपश्वानःश्नथाऽ१इष्टाऽ३ना॥ सखायोदीर्घजाऽ२३होइ॥ ह्वायमाऽ३१उवाऽ२३॥

इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १२। प. १६। मा. १३) २२ (चि।४९)

(३०।१) ॥ वासवः इन्द्रस्त्रिष्टुप् गायत्री सोमश्येनौ॥

एआसा॥ जिवक्वारथ्येयथाऽ२जाउ। इडा॥ आसा॥ व्यꣳशुर्मदाऽ२या। अथा॥ धाया॥

मनोताप्रथमामनाऽ२इषा। इडा॥ आप्सू॥ दक्षोगिराऽ२इष्ठाः। अथा॥ दाशा॥

स्वसारोअधिसानोऽ२अव्याइ। इडा॥ श्याइनो॥ नयोनिमाऽ२सदात्। अथा॥ मार्जा॥

तिवह्निꣳसदनेषुवाऽ२च्छाऽ३१उ। वाऽ२३॥ इट्स्थीडाऽ२३४५॥

(दी. ११। प. २२। मा. १२) २३ (खा।५०)

(३१।१) ॥ पार्जन्यो वैश्वदेवो वा इन्द्रोऽनुष्टुप् गायत्री सोमेन्द्रौ॥

एआभी॥ नवन्तआऽ२। द्रुहआऽ३१उवाऽ२। तरत्समन्दीधावति॥ प्रायम्॥ इन्द्रस्यकाऽ२।

मियमाऽ३१उवाऽ२। धारासुतस्यान्धसः॥ वात्सम्॥ नपूर्वआऽ२। युनियाऽ३१उवाऽ२।

तरत्समन्दीधावति॥ जातम्॥ रिहन्तिमाऽ२। तरआऽ३१उवाऽ२३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. ८। प. १६। मा. १४) २४ (टी।५१)

(३२।१)॥ प्राजापत्याश्चत्वारः पदस्तोभाः गोतमा वा वैश्वामित्रावैन्द्राग्ना विश्वेदेवाः वा।

अष्टेडपदस्तोभमिदम्। (प्रथममिति वैदिकसंकेतः)॥ प्रजापतिः जगती सोमः।

हाह। हौवाओऽ२३४वा। (द्वे त्रिः)। ए। औहोहोवाहाउ। वा। ईडा।

धर्त्तादिवःपवतेकृत्व्योरसः। ईडा॥ ईडा। दक्षोदेवानामनुमाद्योनृभिः। ईडा॥ ईडा।

हरिःसृजानोअत्योनसत्वभिः। ईडा॥ ईडा। वृथापाजाꣳसिकृणुषेनदीषुवाऽ१। हाह।

हौवाओऽ२३४वा। (द्वे त्रिः)। ए। औहोहोवाहाउ। वा॥ ईडा॥

(दी. ४७। प. ३०। मा. १२) २५ (ञा।५२)

(३२।२) ॥ षडिडपदस्तोभः (द्वितीयमिति वैदिकसंकेतः) गोतमः।

हाउहाउहाउ। हौवाओऽ२३४वा। ए। औहौहोवाहाउ। वा। धर्त्तादिवःपवा। ईडा।

तेकृत्व्योरसः॥ ईडा। दक्षोदेवानामनुमाद्योनृभिः। ईडा॥ हरिःसृजानआ। ईडा।

त्योनसत्वभिः॥ ईडा। वृथापाजाꣳसिकृणुषेनदीषुवाऽ१। हाउ(३)। हौवाओऽ२३४वा। ए।

औहौहोवाहाउ। वा॥ ईडा॥

(दी. ४४। प. २२। मा. १४) २६ (थी।५३)

(३२।३) ॥ चतुरिडपदस्तोभः (तृतीयमिति वैदिकसंकेतः) विश्वामित्रः।

औहौहोवाऽ२। ओवाऽ२। ए। औहौहोवाहाउ। वा। धर्त्तादिवःपवा। ईडा। तेकृत्व्योरसः॥

दक्षोदेवानामा। ईडा। नुमाद्योनृभिः॥ हरिःसृजानआ। ईडा। त्योनसत्वभिः॥

वृथापाजाꣳसिकृ। ईडा। औहौहोवाऽ२। ओवाऽ२। ए। औहौहोवाहाउ। वा॥

णुषेनदीषुवाऽ१॥

(दी. ४२। प. २२। मा. ६) २७ (छू।५४)

(३२।४) ॥ द्विरिडषदस्तोभः (चतुर्थमिति वैदिकसंकेतः)॥ इन्द्राग्नी वा।

आऔहोवाहाइ। ए। औहौहोवाहाउ। वा। धर्त्ता। दीऽ२। वःप। वा। तेकृत्व्यः॥ रसः।

दक्षोदेवानामनुमाद्यानृभिः। ईडा॥ हरिः। सा। जानोआ। त्योन॥ सत्वभिः।

वृथापाजाꣳसिकृणुषेनदीषुवाऽ१। आऔहोवाहाइ। ए। औहौहोवाहाउ। वा॥ ईडा॥

(दी. ३०। प. २३। मा. १२) २८ (बा।५५)

॥ त्रयोदश चतुर्थः खण्डः॥४॥

॥ इति (ग्रामे) आरण्यकगाने प्रथमः प्रपाठकः॥१॥

(३३।१)॥ दश्वसंसर्पाणि, महासर्पाणि, सर्पसामानि वा, सर्पम्। अथापरं वाभ्रवाणि चत्वारि अग्निर्जगतीन्द्रः। (तत्र प्रथममिदम्)॥

अभाइमाहे। (त्रिः)। चर्षणीघृतंमघवानऽ३मूक्थाऽ१याऽ२म्॥
इन्द्रंगिरोबृहतीरभ्यऽ३नूषाऽ१ताऽ२॥ वावृधानंपुरुहूतꣳसुऽ३वाक्तोऽ१इभीऽ२ः॥
अमर्त्यंजरमाणंदिऽ३वाइदाऽ१इवेऽ२। अभाइमाहे। (द्विः)। अभाऽ२३इ। माऽ२। हाऽ२३४।
औहोवा॥ सर्पसुवाऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १४। मा. १२) १ (भा।५६)

(३३।२)॥ पृथिव्याश्च सर्पम् (प्रसर्पम्)। अथापरं वाभ्रवाणि चत्वारि पृथिवीजगतीन्द्रः। (तत्रद्वितीयम्)॥

अभिप्रमꣳहिऽ३राइमाहे। (त्रिः)। चर्षणीघृतंमघवानऽ३मूक्थाऽ१याऽ२म्॥
इन्द्राङ्गिरोबृहतीरभ्यऽ३नूषाऽ१ताऽ२॥ वावृधानंपुरुहूतꣳसुऽ३वाक्तोऽ१इभीऽ२ः॥
अमर्त्यंजरमाणंदिऽ३वाइदाऽ१इवेऽ२। अभिप्रमꣳहिऽ३राइमाहे। (द्विः)।
अभिप्रमꣳहिऽ३राऽ२३इ। माऽ२। हाऽ२३४। औहोवा॥ प्रसर्पसुवाऽ२३४५ः॥

(दी. १०। प. १४। मा. १२) २ (भा।५७)

(३३।३)॥ वायोश्च सर्पम् (उत्सर्पम्)। किञ्च अथापरं वाभ्रवाणि चत्वारि वायुर्जगतीसोमः। (तत्र तृतीयमिदम्)।

हाउहाउहाउवा। चर्षणीधृतंमघवानमुक्त्यम्॥ हाउ(३)वा। इन्द्रंगिरोबृहतीरभ्यनूषत॥
हाउ(३)वा। वावृधानंपुरुहूतꣳसुवृक्तिभिः॥ हाउ(३)वा। अमर्त्यंजरमाणन्दिवेदिवे। हाउ(३)वा॥
उत्सर्पसुवाऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. १०। मा. १८) ३ (ङै।५८)

(३४।१)॥ अन्तरिक्षस्य सर्पम् अन्तरिक्षोबृहतीन्द्रः। किञ्च अथापरं व्राभ्रवाणि चत्वारि। (तत्र तुरीयमिदम्)॥

हाउ(३)वा। सुवस्सꣳसर्पन्तः। तवेदिन्द्रावमंवसु॥ हाउ(३)वा। सुवस्सꣳसर्पन्तः।
त्वंपुष्यासिमध्यमम्। हाउ(३)वा। सुवस्सꣳसर्पन्तः। सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि॥ हाउ(३)वा।
सुवस्सꣳसर्पन्तः। नकिष्ट्वागोषुवृण्वते। हाउ(३)वा॥ सुवस्सꣳसर्पन्तः। ए।
सर्पतप्रसर्पतसुवर्गमेमत्तेवयम्॥

(दी. १०। प. १६। मा. २२) ४ (पा।५९)

(३४।२)॥ आदित्यम्, आदित्यस्य च सर्पम् आदित्योबृहतीन्द्रः। किञ्च अथापरं पावमानानि चत्वारि। (तत्र प्रथममिदम्)॥

सुवस्सꣳसार्पसꣳसर्पाऽ२। (द्विः)। सुवस्सꣳसार्पसम्। साऽ२। पाऽ२३४। औहोवा।
तवेदिन्द्रावमंवसु॥ त्वंपुष्यसिमध्यमम्॥ सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि॥ नकिष्ट्वागोषुवृण्वते।
सुवस्सꣳसार्पसꣳसर्पाऽ२। (द्विः)। सुवस्सꣳसार्पसम्। साऽ२। पाऽ२३४। औहोवा॥ एऽ३।
सुवर्गमेमाऽ२३४५॥

(दी. १२। प. १८। मा. ३) ५ (जि।६०)

(३५।१)॥ दिवश्च सर्पम् द्यौर्जगती सूर्यः। किश्च अथापरं पावमानानि चत्वारि। (तत्र द्वितीयमिदम्)॥

सृपायप्रसृ। पा। इहा। ईऽ३या। (चत्वारि त्रिः)। अभिप्रियाणिपवतेचऽ३नोहाऽ१इताऽ२ः॥ नामानियह्वोअधियेषुऽ३वार्द्धाऽ१ताऽ२इ॥ आसूर्यस्यबृहतोबृऽ३हानाऽ१धीऽ२॥ रथंविष्वंचमरुहद्विऽ३चाक्षाऽ१णाऽ२ः। सृपायप्रसृ। पा। इहा। ईऽ३या। (चत्वारि द्विः)। सृपायप्रसृ। पा। इहा। ईऽ२। याऽ२३४। औहोवा॥ ए। सृपायप्रसृपाय। (द्वे द्विः)। ए। सृपायप्रसृपायाऽ२३४५॥

(दी. २६। प. ३६। मा. ५) ६ (कु।६१)

(३६।१) ॥ अपां सर्पसाम। आपः त्रिष्टुप्सोमः लिंगोक्ता वा॥

सृपायप्रसृ। पा। ओहा। ईऽ३या। (चत्वारि त्रिः)। त्वयावयंपवमानेनसोमा॥ भरेकृतंविचिनुयामशश्वात्॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामहान्ताम्॥ अदितिस्सिन्धुःपृथिवीउताद्यौः। सृपायप्रसृ। पा। ओहा। ईऽ३या। (चत्वारि द्विः)। सृपायप्रसृ। पा। ओहा। ईऽ२। याऽ२३४। औहोवा॥ ए। सुवः। ए। सुवः। ए। सुवाऽ२३४५ः॥

(दी. २७। प. ३६। मा. ७) ७ (चे।६२)

(३६।२) ॥ समुद्रस्य सर्पसाम। समुद्रःत्रिष्टुप्सोमः लिंगोक्ता वा॥

सृपायप्रसृ। पा। ओहा। (त्रीणि त्रिः)। त्वयावयंपवमानेनसोमा॥ भरेकृतंविचिनुयामशश्वात्॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामहान्ताम्॥ अदितिस्सिन्धुःपृथिवीउताद्यौः। सृपायप्रसृ। पा। ओहा। (त्रीणि

द्विः)। सृपायप्रसृ। पा। ओऽ२। हाऽ२३४। औहोवा। सुवः। ए। सुवः। ए। सुवः।

एऽ२३४५॥

(दी. २६। प. ३०। मा. ७) ८ (ङे।६३)

(३७।१) ॥ मांडवे द्वे, स२सर्पे द्वे वा। द्वयोःमण्डुःपङ्क्तिरिन्द्रः॥

स्वादोरित्थाविषूवताएहाउ॥ मधोःपिबन्तिगौरियाएहाउ। याइन्द्रेणसयावराएहाउ॥

वृष्णामदन्तिशोभथाएहाउ॥ वस्वीरनुस्वराजियामेऽ३हाउ। वा। ए। दिशःप्रदिशःक। पाऽ२।

ताऽ२३४। औहोवा॥ ए। राजंगमेमस्वराजंगमेमाऽ२३४५॥

(दी. २६। प. १३। मा. १०) ९ (गो।६४)

(३७।२)

स्वादोरित्थाविषूवताओहाउ॥ मधोःपिबन्तिगौरियाओहाउ। याइन्द्रेणसयावराओहाउ॥

वृष्णामदन्तिशोभथाओहाउ॥ वस्वीरनुस्वाराजियामोऽ३हाउ। वा। ए। उद्दिशोविदिशःक।

पाऽ२। ताऽ२३४। औहोवा॥ ए। विराजंगमेमस्वराजंगमेमाऽ२३४५॥

(दी. २७। प. १३। मा. १०) १० (जौ।६५)

॥ दश पञ्चमः खण्डः॥५॥

(३८।१)॥ त्रिषंधि। बृहत्साम रथन्तरम् वामदेव्यम् एवं रूपम् प्रजापतिःपथ्याबृहतीन्द्रः॥

औहोइत्वामिन्द्रप्रतूर्त्तिषूऽ३ए॥ अभाइवाइश्वाः। आसिस्पाऽ२३४र्द्धाः॥ श्री॥

आशस्तिहाजनितावृ। त्रतूऽ२३रसाइ॥ श्री॥ तुवाऽ२३०तूर्या॥ तरौहोऽ३। हिम्माऽ२॥

ष्याऽ२तोऽ३५हाइ॥

(दी. ७। प. ९। मा. ८) ११ (झै।६६)

(३९।१) ॥ यज्ञसारथिप्रजापतिर्बृहती सूर्यः॥

एबाण्मा॥ हा२असिसूऽ२रिया। इडा। बृ। हाउवा। आथा॥ बाडा॥ दित्यमहा२ऽ२असाइ। इडा। हरिः। हाउवा। आथा॥ माहः॥ तेसतोमहिमापनाऽ२इष्टमा। इडा। मतिः। हाउवा। आथा॥ माह्वा॥ देवमहाऽ२२असाइ॥ इडाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. २१। मा. १२) १२ (पा।६७)

(४०।१) ॥ वृषाप्रजापतिरेकपदात्रिष्टुब् विश्वेदेवाः॥

इमाओवा। (त्रिः)। इमाऽ३। ओइ। इमाऽ३। ओइ। इमाऽ३। ओऽ२३४वा॥ वृषाओवा। (त्रिः)। वृषाऽ३। ओइ। (द्वे द्विः)। वृषाऽ३। ओऽ२३४वा। णंकृणावता। एकाओवा। (त्रिः)। एकाऽ३। ओइ। (द्वे द्विः)। एकाऽ३। ओऽ२३४वा॥ इन्माऽ२३४५म्॥

(दी. ३५। प. २९। मा. १६) १३ (भू।६८)

(४१।१) ॥ एकवृष प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः॥

हाहिम्। (त्रिः)। योवा। (त्रिः)। योवाहाइ। (त्रिः)। यएकइद्विदयते। एक२समैरयद्धधे॥ वसुमर्त्तायदाशुषे। एक२समैरयन्मह॥ ईशानोअप्रतिष्कृतः। एकोवृषाविराजति॥ इन्द्रोंग। हाहिम्। (त्रिः)। योवा। (त्रिः)। योवाहाइ। (द्विः)। योवाऽ३हाउ। वाऽ३। ईऽ२३४५॥

(दी. ५९। प. २७। मा. १७) १४ (थ्रे।६९)

(४२।१) ॥ विद्रथंप्रजापतिः ककुबिन्द्रः॥

होवाहाइ। योनः॥ होवाहाइ। (त्रिः)। औहोवाहाइ। (त्रिः)। इदामे। (द्विः) पुराए। होवाहाइ।

(त्रिः)। औहोवाहाइ। (त्रिः)। प्रवाए। स्यआए। निनाए। होवाहाइ। (त्रिः)। औहोवाहाइ।

(त्रिः)। यतामे। उवाए। स्तुषाए॥ होवाहाइ। (त्रिः)। औहोवाहाइ। (त्रिः)। सखाए। यआए।

द्रमूए। तयाए। होवाहाइ। (त्रिः)। औहोवाहाइ। (द्विः)। औहोवाऽ३हाउ। वाऽ३॥

हस्स्थिबृहन्नमाऽ२३४५ः॥

(दी. ८९। प. ४७। मा. ४६) १५ (थू।७०)

(४३।१) ॥ अभ्रातृव्यम् (भ्रातृव्यम् वा) प्रजापतिः ककुबिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। हुवेविराजश्स्वराजम्। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)। हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)।

हाउवा। महत्सामअजीजने। अभ्रातृव्योअनात्वम्॥ महद्भद्रमजीजने।

अनापिरिन्द्रजनुषासनाद॥ स्यभ्रातृव्यमजीजने। युधेदापित्वमिच्छसे॥ हाउ(३)।

हुवेविराजश्स्वराजम्। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)। हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)। हाउ(३)वाऽ३॥

एऽ३। अभिभूरसीऽ२३४५॥

(दी. ५४। प. २८। मा. २७) १६ (दे।७१)

(४४।१) ॥ रैवते द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्गायत्रीन्द्रः॥

हाउरेवा॥ तीर्नाः। इहा। सधमादाऽ२। हाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ३४डा॥ इन्द्राऽ२इसन्तू॥

इहा। तुविवाजाऽ२ः। हाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ३४डा॥ क्षुमाऽ२न्तााया॥ इहा। भिर्मदेमाऽ२।

हाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ३४डा॥

(दी. ५। प. १६। मा. ७) १७ (पे।७२)

(४४।२)

रा॥ वताऽ२इः। नाः। इहा। औहौहो। इडा। सधाऽ२। मादाइ। इहा। औहौहो। इहा॥

इन्द्राऽ२इ। सन्तू। इहा। औहौहो। इडा॥ तुवाऽ२इ। वाजाः। इहा। औहौहो। इडा॥

क्षुमाऽ२। तोया। इहा। औहौहो। इडा॥ भिर्म्माऽ२। देमा। इहा। औहौहो। इडा॥ एरा।

एबृ। एरेऽ२३४५॥

(दी. ११। प. ३४। मा. ७) १८ (धे।७३)

(४५-४७।१) ॥ शाक्वरवर्णम्॥ शाक्वरवर्णो सोमः॥

एऊच्चा॥ तेजातमन्धसोदिविसद्भूमियाऽ२ददाइ। इडा। उग्रꣳशर्ममहाऽ१इश्राऽ३वाः॥ श्री॥

सानः॥ इन्द्राययज्यवेवरुणायमरूऽ२द्भियाः। इडा। वरिवोवित्पराऽ१इस्राऽ३वा॥ श्री॥

आइना। विश्वान्यर्यआद्युम्नानिमानुषाऽ२णाम्। इडा॥ सिषासन्तोवनाऽ२३होइ॥

माहाऽ३१उवाऽ२३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १४। प. १४। मा. १३) १९ (धि।७४)

(४८।१) ॥ नित्यवत्साः (नित्यवत्सम्) प्रजापतिरित्यष्टिस्सोमः॥

एआया॥ रुचाहरिण्यापुनानोविश्वाद्वेषाꣳसितरतिसयूऽ२ग्वभाइः। इडा।

सूरोनसयूऽ१ग्वाऽ३भीः॥ धारा॥ पृष्ठस्यरोऽ२चताइ। इडा॥ धारा॥ पृष्ठस्यरोऽ२चताइ।

अथा॥ धारा॥ पृष्ठस्यरोऽ२चताइ। इडा। पुनानोअरुषोऽ१हाऽ३रीः।

विश्वायद्रूपापरियासियाऽ३। क्वाभीः। सप्तास्येभिराऽ२३हो। क्वाभिराऽ३१उवाऽ२३।

इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १७। प. १९। मा. १२) २० (झा।७५)

(४९।१) ॥ वसिष्टस्य च रथन्तरम्। वसिष्ठो बृहतीशानेन्द्रौ॥

आभित्वाशुरनोनुमोवा॥ आदुग्धाइवधेनवईशानमस्यजगतः। सुवा ऽ२३र्दृशाम्॥

आइशानमा ऽ२३इन्द्रा ऽ३॥ तास्थू ऽ२३४षा। ओवा ऽ६। हाउवा॥ अस्॥

(दी. १०। प. ८। मा. ८) २१ (बै।७६)

(५०।१) ॥ जमदग्नेश्च सप्तहम्। जमदग्निः बृहतीन्द्रः॥

अयंवायाउ। (त्रिः) त्वामिद्धाइ। हावामहाइ॥ (त्रिः) सातौवाजा। स्याकारवाः॥ (त्रिः)।

त्वांवृत्राइ। षूइन्द्रसात्। पातिंनरा॥ (त्रिः)। त्वांकाष्ठा। सूअवर्ताः। (त्रिः)। अयंवायाउ। (द्विः)।

अयम्। वा ऽ२। या ऽ२३४। औहोवा॥ ए। त्रिवृतंप्रवृतम्। (द्वे द्विः)। ए।

त्रिवृतंप्रवृता ऽ२३४५म्॥

(दी. ३१। प. ३२। मा. २८) २२ (खे।७७)

॥ द्वादश षष्ठः खण्डः॥६॥

(५१।१) ॥ पञ्चपविमन्ति (महासामानि) रुद्रसूक्तम्। रुद्रिस्त्रष्टुबिन्द्रः॥

आक्रन्दयंकुरुघोषमहान्तꣳहरीइन्द्रस्याभियोजयाशू।

मर्म्माविधन्ददतामन्योअन्यꣳशल्यात्मापततुश्लोकमच्छ। प्रयच्चक्रमराव्णेसनताअभ्यवर्त्तयत्।

ज्योगित्तिस्रओहातैशयातैकेशवच्छिरः॥

(स्वरितम् २। उदात्तम् २। धारि १५) २३ (छु।७८)

(५१।२)

आ। क्रन्दय। कुरु। घोषम्। महान्तम्॥ हरीइति। इन्द्रस्य। अभि। योजय। आशूइति॥
मर्माविधम्। मर्म। विधम्। ददताम्। अन्यः। अन्। यः। अन्यम्। अन्। यं॥ शल्यात्मा।
शल्य। आत्मा। पततु। श्लोकम्। अच्छ॥ प्र। यत्। चक्रम्। अराव्णे। आ। राव्णे॥ सनते।
अभ्यवर्त्तयत्। अभि। अवर्तयत्॥ ज्योक्। इत्। तिस्रः। ओहाते॥ शयाते। केशवत्। शिरः॥

(आद्युदात्तम् ११। अवग्रहम् ६। पदम् ४३) २४ (कि।७९)

(५१।३)॥ पञ्च पविमन्ति महासामानि (तत्र प्रथममिदं)। शर्वस्य प्रथमोत्तमे (तत्र प्रथममिदं)।
अथापरमग्नेर्हरसी द्वे (तत्राप्याद्यमिदम्) शर्वस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

आक्रन्दयोवा। कुरुघोषंमहाऽ२। आन्ताऽ२म्। हरीइन्द्रस्याभियोजयाऽ२। आशूऽ२॥
मर्म्माविधंददतामन्योऽ२। आन्ताऽ२म्॥ शल्यात्मापततुश्लोकमाऽ२३। आऽ२। च्छाऽ२३४।
औहोवा। अस्॥

(दी. १२। प. १२। मा. ४) २५ (छी।८०)

(५१।४)॥ पञ्च पविमन्ति महासामानि। (तत्र द्वितीयमिदं) रुद्रस्य त्रीणि (तत्राद्यमिदम्)।
अग्नेर्हरसी द्वे (तत्र द्वितीयमिदम्) रुद्रो अनुष्टुबिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। अस्। (त्रिः) फट्। (त्रिः)। मृस्। (त्रिः)। हस्। (त्रिः)। प्रायऽ२त्। चक्रऽ२म्।
आराऽ२। आव्णाऽ२इ॥ सानऽ२। ताअऽ२। भ्यावऽ२। तायऽ२त्॥ जीयोऽ२क्। इत्तिऽ२॥
स्राओऽ२। हातेऽ२। शायाऽ२। तैकेऽ२। शावात्ऽ२। शाइरऽ२ः। हाउहाउहाउ। अस्।
(त्रिः)। फट्। (त्रिः)। मृस्। (त्रिः)। हस्। (द्विः)। हाऽ२३४। औहोवा॥ एअस्। एफट्।
एमृस्। एहस्। ईऽ२३४५॥

(दी. ३३। प. ४८। मा. ४४) २६ (ड्री।८१)

(५१।४)॥ पञ्च पविमन्ति महासामानि (तत्र तृतीयमिदं)। रुद्रस्य त्रीणि (तत्र द्वितीयमिदम्)।

क्षुरस्य हरसी द्वे (तत्र प्रथममिदं) रुद्रोनुष्टुबिन्द्रः॥

अभ्याभूः। (त्रिः)। प्रायऽ२त्। चक्रऽ२म्। आराऽ२। आव्णाऽ२इ॥ (त्रिः)। सानऽ२।

ताअऽ२। भ्यावऽ२। तयिऽ२त्॥ (त्रिः)। जीयोऽ२क्। इत्तिऽ२। स्नाओऽ२। हातेऽ२। (त्रिः)।

शायाऽ२। तैकेऽ२। शावऽ२त्। शाइरऽ२ः। (त्रिः)। अभ्याभूः। (द्विः)। अ। भ्याऽ२।

भूऽ२३४। औहोवा। हस्स्थिप्रहस्स्थिएऽ३चक्षूऽ२३४५ः॥

(दी. ३५। प. ३४। मा. २६) २७ (भू।८२)

(५१।६)॥ पञ्च पविमन्ति महासामानि (तत्र चतुर्थमिदं)। रुद्रस्य त्रीणि (तत्र तृतीयमिदं)।

क्षुरस्य हरसी द्वे (तत्र द्वितीयमिदम्) रुद्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। क्षुरोहरोहरोहरः। (त्रिः)। वृश्चप्रवृश्चप्रच्छिन्धि। (त्रिः)। हाउहाउहाउवा।

प्रयच्चक्रमराव्णे॥ सनताअभ्यवर्त्तयत्॥ ज्योगित्तिस्नओहाते॥ शयातेकेशवच्छिरः।

हाउहाउहाउ। क्षुरोहरोहरोहरः। (त्रिः)। वृश्चप्रवृश्चप्रच्छिन्धि। (त्रिः)। हाउ(३)वा॥ ए।

वृश्चप्रवृश्चप्रच्छिन्धि। (द्वे द्विः)। ए। वृश्चप्रवृश्चप्रच्छिन्धीऽ२३४५॥

(दी. ३७। प. २६। मा. २२) २८ (चा।८३)

(५२।१) ॥ पञ्च पविमन्ति महासामानि (तत्र पञ्चममिदं)। शर्वस्य प्रथमोत्तमे

(तत्रोत्तममिदं)। मृत्योर्हरः लोकानां शान्तिरुत्तम(र)म्॥

हाउहाउहाउ। वयोबृहदृतꣳहविर्भद्राꣳस्वधाꣳस्वयꣳस्कृण्वइषमूर्जꣳरजःसुवः। हिम्। (त्रिः)।

हो। (त्रिः)। हꣳ । (द्विः)। हꣳऽ२३४। औहोवा। अभित्वाशूरनोनुमोहस्॥

अदुग्धाइवधेनवोहस्॥ ईशानमस्यजगतस्स्वर्दृशꣳहस्॥ ईशानमिन्द्रतस्थुषोहस्। हाउहाउहाउ।

वयोबृहदृतꣳहविर्भद्राꣳस्वधाꣳस्वयꣳस्कृण्वइषमूर्जꣳरजःसुवः। हिम्। (त्रिः)। हो। (त्रिः)। हꣳ।

(द्विः)। हꣳऽ२३४। औहोवा॥ ए। वाक्। ए। इडा। ए। सुवः। ए। बृहत्। ए। भाः। ए।

अर्कमर्चतदेवावृधꣳहस्॥

(दी. ४१। प. ४०। मा. २६) २९ (ङू।८४)

(५३।१) ॥ पञ्चनिधनं वामदेव्यम्। वामदेवो गायत्री विश्वेदेवाः॥

होवाऽ३हाऽ३। आऽ२इ। हियाऽ२३४५। हाउहाउहाउ। एहियाहाउ। (द्विः)।

एहियाआऽ३४। औहोवा। इहप्रजामिहरयिꣳरराणोहस्। होवाऽ३हाऽ३। आऽ२इ।

हियाऽ२३४५। हाउहाउहाउ। एहियाहाउ। (त्रिः)। कयानश्चाइ। त्रआऽ२भूऽ२३४वात्॥

होवाऽ३हाऽ३। आऽ२इ। हियाऽ२३४५। हाउहाउहाउ। एहियाहाउ। (द्विः)। एहियाऽ३४।

औहोवा। रायस्पोषायसुकृतायभूयसेहस्। होवाऽ३हाऽ३। आऽ२इ। हियाऽ२३४५।

हाउहाउहाउ। एहियाहाउ। (त्रिः) । ऊताइसदा। वार्द्धस्साऽ२३४खा॥ होवाऽ३हाऽ३।

आऽ२इ। हियाऽ२३४५। हाउहाउहाउ। एहियाहाउ। (द्विः) एहियाऽ३४। औहोवा।

आगन्वाममिदंबृहद्भस्। होवाऽ३हाऽ३। आऽ२इ। हियाऽ२३४५। हाउहाउहाउ।

एहियाहाउ। (त्रिः)। कयाशचाइ। ष्ठयाऽ२वाऽ२३४र्त्ता॥ होवाऽ३हाऽ३। आऽ२इ।

हियाऽ२३४५। हाउहाउहाउ। एहियाहाउ। (द्विः)। एहियाऽ३४। औहोवा।

इदंवाममिदंबृहद्धस्। होवाऽ३हाऽ३। आऽ२इ। हियाऽ२३४५। हाउहाउहाउ। एहियाहाउ।

(त्रिः)। कयाश्चाइ। ष्ठयाऽ२वाऽ२३४र्त्ता। होवाऽ३हाऽ३। आऽ२इ। हियाऽ२३४५।

हाउहाउहाउ। एहियाहाउ। एहियाहाउ। एहियाऽ३४। औहोवा॥

चराचरायबृहतइदंवाममिदंबृहद्धस्॥

(दी. १२७। प. ८१। मा. ७०) ३० (चौ।८५)

(५४।१) ॥ इन्द्रस्य महावैराजं वसिष्ठस्य वा। इन्द्रो विराडिन्द्रः॥

होइयाहोइयाहोइयाऽ३४३पिब॥ मत्स्वाहाउ। ओजोहाउ। सहोहाउ। बलꣳहाउ। इन्द्रोहाउ।

वयोहाउ। बृहद्धाउ। ऋतꣳहाउ। स्वर्हाउ। ज्योतिर्हाउ। दाऽ३धे। हाउहाउहाउ। औहोऽ१इ।

(त्रिः)। सोमाम्। इन्द्रमा ं। दतुत्वा। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। औहोऽ१इ। (त्रिः) पिबासोमाम्।

इन्द्रमा ं। दतुत्वा। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। औहोऽ१इ। (त्रिः) पिबासोमाम्। इन्द्रमा ं।

दतुत्वा। (त्रिः)। मत्स्वाहाउ। ओजोहाउ। सहोहाउ। बलꣳहाउ। इन्द्रोहाउ। वयोहाउ।

बृहद्धाउ। ऋतꣳहाउ। स्वर्हाउ। ज्योतिर्हाउ। दाऽ३धे। हाउहाउहाउ। औहोऽ१इ। (त्रिः)।

यन्तेसुषा। वाहरिया। श्वाद्रिऽ२ः। श्वाद्रिऽ२ः। श्वाद्रिः। हाउहाउहाउ। औहोऽ१इ। (त्रिः)।

यन्तेसुषा। वाहरिया। श्वाद्रिऽ२ः। श्वाद्रिऽ२ः। श्वाद्रिः। हाउहाउहाउ। औहोऽ१इ। (त्रिः)

यन्तेसुषा। वाहरिया। श्वाद्रिऽ२ः। श्वाद्रिऽ२ः। श्वाद्रिः। मत्स्वाहाउ। ओजोहाउ। सहोहाउ।

बलꣳहाउ। इन्द्रोहाउ। वयोहाउ। बृहद्धाउ। ऋतꣳहाउ। स्वर्हाउ। ज्योतिर्हाउ। दाऽ३धे।

हाउहाउहाउ। औहोऽ१इ। (त्रिः)। सोतिर्बाहू। भ्याꣳसूयतो। नार्वाऽ२। नार्वाऽ२। नार्वा।

हाउहाउहाउ। औहोऽ१इ। (त्रिः)। सोतुर्वाहू। भ्याꣳसुयतो। नार्वाऽ२। नार्वाऽ२। नार्वा॥

हाउहाउहाउ। औहोऽ१इ। (त्रिः)। सोतुर्बाहू। भ्याऽ॰सुयतो। नार्वाऽ२। नार्वाऽ२। नार्वा॥

सधमे। सधमे। साधाऽ३माइ। ऋतमे। ऋतमे। आर्त्ताऽ३माइ। इयाहाउ। इयाहाउ।

इयपिबमत्स्वाऽ३। हाउवाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १२६। प. १२६। मा. १०४) ३१ (त्री।८६)

(५५।१) ॥ अग्नेश्च प्रियम्। अग्निर्गायत्र्यग्निः॥

हाउहाउहाउ। प्रियहोइ। (त्रिः)। प्रियमोइ। (त्रिः)। अग्नआयाहिऽ३वाइताऽ१वाऽ२इ॥

गृणानोहव्यऽ३दाताऽ१याऽ२इ॥ निहोतासत्सिऽ३बार्हाऽ१इषीऽ२३॥ हाउहाउहाउ। प्रियहोइ।

(त्रिः)। प्रियमोइ। (द्विः)। प्रि। याऽ२म्। आऽ२३४। औहोवा॥ ए। प्रियम्। (द्वे त्रिः)। ए।

ब्राह्मणानांयन्मनस्तन्मयिब्राह्मणानाम्। ए। पशूनांयन्मनस्तन्मयिपशूनाम्। ए।

योषितांयन्मनस्तन्मयियोषिताऽ२३४५म्॥

(दी. ३३। प. ३२। मा. २९) ३२ (ठो।८७)

(५६।१) ॥ सर्प साम कल्माषं वा वामदेव्यम्। प्रजापतिर्गायत्री विश्वेदेवाः॥

वीहायवाइ। (त्रिः)। वीहायवाइ। (त्रिः)। कयानश्चाइ। त्रआऽ२भूऽ२३४वात्॥ ऊताइसदा।

वार्द्धस्साऽ२३४खा॥ कयाशचाइ। ष्ठयाऽ२वाऽ२३४र्त्ता॥ वीहायवाइ। (त्रिः)। वीहायवाइ।

(द्विः)। वीहा। याऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ ए।

संयमन्नव्यायमन्वियमन्नसमायमन्०स्थियेकेचोदरसर्पिणस्तेभ्योनमाऽ२३४५ः॥

(दी. ३७। प. २३। मा. १८) ३२ (जै।८८)

(५७।१) ॥ स्वर्ग्यम्, सेतुषाम् पुरुषगतिर्वा, विशोकं वा। प्रजापतिस्त्रिष्टुबात्मा॥

हाउहाउहाउ। सेतूꣳस्तर। (त्रिः)। दुस्त। रान्। (द्वे त्रिः)। दानेनादानम्। (त्रिः)।
हाउहाउहाउ। अहमस्मिप्रथमजाऋताऽ२३स्याऽ३४५॥ हाउहाउहाउ। सेतूꣳस्तर। (त्रिः)।
दुस्त। रान्। (द्वे त्रिः)। अक्रोधेनक्रोधम्। (द्विः)। अक्रोधेनक्रोधम्। हाउहाउहाउ।
पूर्वंदेवेभ्योअमृतस्यनाऽ२३माऽ३४५॥ हाउहाउहाउ। सेतूꣳस्तर। (त्रिः)। दुस्त। रान्। (द्वे
त्रिः)। श्रद्धयाश्रद्धाम्। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। योमाददातिसइदेवमाऽ२३वाऽ३४५त्॥
हाउहाउहाउ। सेतूꣳस्तर। (त्रिः)। दुस्त। रान्। (द्वे त्रिः)। सत्येनानृतम्। (त्रिः)।
हाउहाउहाउ। अहमन्नमदन्तमाऽ२३द्मीऽ३४५। हाउहाउहाउ॥ एषागतिः। (त्रिः)। एतदमृतम्।
(त्रिः)। स्वर्गच्छ। (त्रिः)। ज्योतिर्गच्छ। (त्रिः)। सेतूꣳस्तीर्त्वाचतुराऽ२३४५ः॥

(दी. १०६। प. ७४। मा. ६२) ३४ (घा।८९)

[अर्कपर्वणि ८९ सामानि]

॥ सप्तमः खण्डः॥७॥

॥ इति ग्रामे आरण्यकगाने द्वितीयस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

॥ इति अर्कनाम प्रथमं पर्व समाप्तम्॥

(५८।१) ॥ वसिष्ठस्य प्राणापानौ द्वौ। वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। (निश्वसेत्। त्रिः)। आयुः। (त्रिः)। सात्यम्। (त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि।
ताह्वन्ताइ॥ यत्पारियाः। युनज। ताइधियस्ताः॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्चकामाइ॥

आगोमताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। हाउहाउहाउ। (निश्वसेत्। त्रिः)। आयुः। (त्रिः)। सात्यम्।
(द्विः)। सत्याऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. २८। प. ३४। मा. २४) १ (द्वी।९०)

(५८।२)

हाउहाउहाउ। (उच्छ्वसेत्। त्रिः)। आनोहिय। (त्रिः)। मनदोहम्। (त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि।
ताहवन्ताइ॥ यत्पारियाः। युनज। ताइधियस्ताः। शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्वकामाइ॥
आगोमताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। हाउ(३)। (उच्छ्वसेत्। त्रिः)। आनोहिय। (त्रिः)। मनदोहम्।
(द्विः)। मनाऽ२३दोहाऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३५। प. ३४। मा. १८) २ (भ्रे।९१)

(५८।३) ॥ इद्रेस्यैन्यौ द्वौ। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउ(३)। एन्यौ। (त्रिः)। एन्याहाउ। (त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि। ताहवन्ताइ॥ यत्पारियाः।
युनज। ताइधियस्ताः॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्वकामाइ॥ आगोमताइ। व्रजेभ।
जातुवन्नाः। हाउ(३)। एन्यौ। (त्रिः)। एन्याहाउ। (द्विः)। एन्याऽ३हाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३८। प. २८। मा. १९) ३ (ड्रो।९२)

(५८।४)

हाउहाउहाउ। आहोएन्यौ। (त्रिः)। आहोऽ२एन्याउ। (त्रिः) इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि।
ताहवन्ताइ॥ यत्पारियाः। युनज। ताइधियस्ताः॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्वकामाइ॥

आगोमताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। हाउ(३)। आहोएन्यौ। (त्रिः)। आहोऽ२एन्याउ। (द्विः)।

आहोऽ२एन्याऽ३हाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ५१। प. २८। मा. ३१) ४ (ग्रा।९३)

(५८।५) ॥ प्रजापतेर्व्रतपक्षौ द्वावहोरात्रयोर्वा। प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउ(३)। हꣳहꣳहꣳहꣳ। (त्रिः)। हाउ(३)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि। ताहवन्ताइ॥ यत्पारियाः।

युनज। ताइधियस्ताः॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्चकामाइ॥ आगोमताइ। व्रजभ। जातुवन्नः।

हाउहाउहाउ। हꣳहꣳहꣳहꣳ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १८। प. २४। मा. १९) ५ (द्रो।९४)

(५८।६)

हाउहाउहाउ। इहा। हꣳहꣳहꣳ। (द्वे त्रिः)। हाउहाउहाउ। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि।

ताहवन्ताइ॥ यत्पारियाः। युनज। ताइधियस्ताः॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्चकामाइ॥

आगोमताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। हाउहाउहाउ। इहा। हꣳहꣳहꣳ। (द्वे त्रिः)। हाउहाउहाउ।

वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १८। प. ३०। मा. १९) ६ (ग्रो।९५)

(५८।७) ॥ इन्द्राण्या उल्बजरायुणी द्वे। अहोरात्रयेरिन्द्राणी त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हावीन्द्राम्॥ नरोनेमधिताह। वाऽ२ऽ१। ताऽ२इ। यात्पाऽ२। र्यायुनजतेधि। याऽ२ऽ१ः।

ताऽ२ः॥ शूरोऽ२। नृषाताश्रवसश्च। काऽ२ऽ१। माऽ२इ॥ आगोऽ२। मतिव्रजेभजातु।

वाऽ२३। आऽ२। नाऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १९। मा. ५) ७ (घु।९६)

(५८।८)

उवा। ओवा। (द्वे द्विः)। उवा। ओवाऽ३। आइन्द्राम्। नरोनेमधिताहवाऽ२३न्ताऽ३इ॥ यात्पा। र्यानुजतेधियाऽ२३स्ताऽ३ः॥ शूरो। नृषाताश्रवसश्चकाऽ२३माऽ३इ॥ आगो। मतिव्रजेभजातुवाऽ२३न्नाः। उवा। ओवा। (द्वे द्विः)। उवा। ओऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. २३। मा. ६) ८ (ग्रू।९७)

(५९।१)॥ बृहस्पतेर्बलमिदि द्वे, इन्द्रस्य वा उद्भिद्वा अनयोः पूर्वम्। बृहस्पतिर्गायत्रीन्द्रः॥

होवाइ। (द्विः)। होवाऽ३हाइ। उपत्वाजाऽ३माऽ३योगिरः॥ होवाइ। (द्विः)। होवाऽ३हाइ। देदिशतीऽ३र्हाऽ३विष्कृतः॥ होवाइ। (द्विः)। होवाऽ३हाइ। वायोरनीऽ३काऽ३अस्थिरन्॥ होवाइ। (द्विः)। होवाऽ३हाऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. २७। प. १७। मा. १५) ९ (छु।९८)

(५९।२) ॥ बृहस्पतेर्लभित्। बृहस्पतिर्गायत्रीन्द्रः॥

ओवा। (द्विः)। ओवाऽ३हाइ। उपत्वाजाऽ३माऽ३योगिरः॥ ओवा। (द्विः)। ओवाऽ३हाइ। देदिशतीऽ३र्हाऽ३विष्कृतः। ओवा। (द्विः) ओवाऽ३हाइ। वायोरनीऽ३काऽ३अस्थिरन्॥ ओवा। (द्विः)। ओवाऽ३हाऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. २७। प. १७। मा. ७) १० (छ्रे।९९)

॥ प्रथमः खण्डः॥१॥

(६०।१) ॥ भर्गयशसी द्वे, तत्राद्यमिदं भर्गम् भर्गो वा। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

हाउधामयत्। हाहाउधामधामायत्। हाहाउबृहद्धामधामायत्। बृहदीन्द्रा। यगाऽ२याऽ२३४ता॥

मरुतोवृ। त्रहाऽ२न्ताऽ२३४माम्॥ येनज्योतिरजनयन्। ऋताऽ२वाऽ२३४र्द्धाः॥ देवान्देवा।

यजाऽ२गृऽ२३४वी। हाउधामयत्। हाहाउधामधामयत्। हाहाउबृहद्धामधा। माऽ२।

याऽ२३४। औहोवा॥ एऽ३। भर्गोऽ२३४५ः॥

(दी. २९। प. १९। मा. १५) ११ (धु।१००)

(६१।१) ॥ द्वितीयश्चैतद् यशःसाम। गायत्र्यग्नि (प्रजापति बृहतीन्द्रः)॥

हाउहाउहाउ। यशोहाउ। (त्रिः)। वर्चोहाउ। (त्रिः)। आस्मिन्स्थिहाइ। (द्विः)।

आस्मिन्स्थिहाऽ३१उ। वाऽ२। तवेदिन्द्रावमंवसु॥ त्वंपुष्यसिमध्यमम्॥

सत्राविश्वस्यपरमस्यराजसि॥ नकिष्ट्वागोषुवृण्वते। हाउहाउहाउ। यशोहाउ। (त्रिः)। वर्चोहाउ।

(त्रिः)। आस्मिन्स्थिहाइ। (द्विः)। आस्मिन्स्थिहाऽ३१उ। वाऽ२॥

आयुर्विश्वायुर्विश्वंविश्वमायुरशीमहिप्रजांत्वष्टरधिनिधह्यस्मेशतंजीवेमशरदोवयन्तेऽ२३४५॥

(दी. ४७। प. २७। मा. ३१) १२ (छा।१०१)

(६२।१) ॥ यामे द्वे। यमो बृहत्यग्निः॥

कायमानोवनातुवाम्॥ यन्मातॄरजगानाऽ१पाऽ२ः। औऽ२। हौऽ२। हुवाइ।

औऽ३होऽ२३४वा॥ नतत्तेअग्नेप्रमृषेनिवार्त्ताऽ१नाऽ२म्। औऽ२। हौऽ२। हुवाइ।

औऽ३होऽ२३४वा॥ यद्दूरेसन्निहाभूऽ१वाऽ२ः। औऽ२। हौऽ२। हुवाइ।

औऽ३होऽ२३४५वाऽ६५६॥ ए। राजश्स्वराजाऽ२३४५म्॥

(दी. १४। प. १८। मा. ९) १३ (दो।१०२)

(६२।२)

औहोवाऽ२। (द्विः)। औ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। कायमानोवनात्वम्॥

यन्मातॄरजगन्नपः॥ नतत्तेअग्नेप्रमृषेनिवर्तनम्॥ यद्दूरेसन्निहाभुवः। औहोवाऽ२॥ (द्विः)॥ औ।

होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ ए। विराजश्स्वराजाऽ२३४५म्॥

(दी. २९। प. १८। मा. ६) १४ (दू।१०३)

(६३।१) ॥ घर्मतनू द्वे। प्रजापतिर्बृहत्सोमः॥

हाउहाउहाउ। प्रसोमदेवऽ३वाइताऽ२३इ॥ हाउहाउहाउ। सिन्धुर्न्नपिप्येऽ३आर्ण्णाऽ१साऽ२३॥

हाउहाउहाउ। अश्शोःपयसामदिरोनऽ३जागृऽ१वीऽ२३ः॥ हाउहाउहाउ।

अच्छाकोशंमऽ३धूश्चूऽ१ताऽ२३म्। हाउहाउहाउ। वा।

घर्मःप्रवृक्तस्तन्वासमानृधेवृधेसुवाऽ२३४५ः॥

(दी. २४। प. ११। मा. २१) १५ (ता।१०४)

(६३।२)

औहोऽ३वा। (त्रिः)। ईऽ३या। (त्रिः)। आइहीऽ२। (त्रिः) प्रसोमदे। ववाऽ२इताऽ२३४याइ॥

सिन्धुर्न्नपि। प्येआऽ२र्ण्णाऽ२३४सा॥ अश्शोःपयसामदिरः। नजाऽ२गृऽ२३४वीः॥

अच्छाकोशम्। मधूऽ२श्चूऽ२३४ताम्। ओहोऽ३वा। ईऽ३या। (त्रिः)। आइहीऽ२।

आइहीऽ२३। (त्रिः)। आऽ२इ। हाऽ२३४। औहोवा॥

घर्मःप्रवृक्तस्तन्वासमानशेमहेसुवाऽ२३४५ः॥

(दी. १३। प. २१। मा. १४) १६ (ढी।१०५)

(६४।१) ॥ प्रजापतेश्चक्षूꣳषि त्रीणि। प्रजापतिरनुष्टुप्सोमः॥

अयंपूषाऽ३ओऽ२३४वा॥ रयिर्भगः। रयिर्भागाऽ३ओऽ२३४वा। चाऽ२३४क्षूः॥

सोमःपुनाऽ३ओऽ२३४वा। नोअर्षति। नोअर्षाताऽ३ओऽ२३४वा। सूऽ२३४वाः।

पतिर्विश्वाऽ३ओऽ२३४वा। स्यभूमनः। स्यभूमानाऽ३ओऽ२३४वा। ज्योऽ२३४तीः॥

वियख्यद्रोऽ३ओऽ२३४वा। दसीउभे। दसीऊभाऽ३ओऽ२३४वा॥ चाऽ२३४क्षूः॥

(दी. ९। प. १६। मा. १८) १७ (तै।१०६)

(६४।२)

अयम्। पूऽ२षाऽ२३४औहोवा॥ रयिर्भगः। रयिः। भाऽ२गाऽ२३४औहोवा।

सोमःपुनानोअर्षति। नोअ। षाऽ२ताऽ२३४औहोवा। पतिर्विश्वस्यभूमनः॥ स्यभू।

माऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ व्यख्यद्रोदसीउभे। दसी। ऊऽ२भाऽ२३४औहोवा। चाऽ२३४क्षूः।

औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४वा। सूऽ२३४वाः। औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४वा।

ज्योऽ२३४तीः। औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४वा॥ चाऽ२३४क्षूः॥

(दी. २३। प. २४। मा. १९) १८ (ढो।१०७)

(६४।३)

एअयम्पूषारयिर्भगाः॥ सोमःपुना। इहा। नोऽ२अर्षा। इडा। ताइपतिर्विश्वस्यभूऽ१माऽ३नाः॥

वियख्यद्रादसाऽ२३होइ॥ ऊभआऽ३१उवाऽ२३॥ इट्स्थीडाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ९। मा. ९) १९ (भो।१०८)

(६५।१) ॥ वार्षाहराणि त्रीणि। वृषाहरिर्गायत्री सोमः॥

हाउत्वमेतात्॥ एतदेतात्। आधाराऽ२३४याः। कृष्णासुरोहिणाऽ१इषूऽ३चा॥ पुरुष्णाऽ२३इषू॥

रुशत्। पाऽ२याऽ२३४औहोवा॥

(दी. ८। प. ७। मा. ८) २० (ठै।१०९)

(६५।२)

त्वमेतद्धोहाइ॥ होइ। आधाऽ१रायाऽ२ः। होइ। कार्ष्णाऽ१सुरोऽ२। होइ। हाइणीऽ१षुचाऽ२॥

होइ। पारुष्णाऽ१इषूऽ२॥ होइ। रुशत्। पाऽ२याऽ२३४औहोवा॥

(दी. ३। प. १२। मा. ११) २१ (ठा।११०)

(६५।३)

आइत्वमेतात्॥ आआधाऽ१रायाऽ२ः। आइकार्ष्णाऽ१सुरोऽ२। आइहाइणीऽ१षुचाऽ२॥

आइपारुष्णाइषूऽ२॥ आइ। रुशत्। पाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ अभिस्फूर्ज्जयंद्विष्मः।

समोषाभिस्फूर्ज्जयंद्विष्मः।अस्मभ्यंगातुवित्तमाऽ२३४५म्॥

(दी. ९। प. ११। मा. १५) २१ (तु।१११)

॥ द्वादश द्वितीयः खण्डः॥२॥

इति (ग्रामे) आरण्यकगाने द्वितीयः प्रपाठकः॥२॥

(६६।१) ॥ द्यौते द्वे, द्यौगते वा। द्युतो बृहतीन्द्रः॥

हाउयच्छाक्रासी॥ पारावाऽ२३४ती। ईऽ४य। इयाऽ२३४। इयाहाउ॥ यादर्वाऽ२३४वा।
ताइवृत्राऽ२३४हान्। ईऽ४य। इयाऽ२३४। इयाहाउ॥ आतस्त्वाऽ२३४गी।
भाइद्यूर्गाऽ२३४दी। द्राकेशाऽ२३४इभीः। ईऽ४य। इयाऽ२३४। इयाहाउ॥
सूतावा॰२३४आ। वाइवासाऽ२३४ती। ईऽ४य। इयाऽ२३४। इयाऽ५हाउ। वा॥
अश्वमिष्टयेऽ३हस्॥

(दी. २। प. २३। मा. १३) १ (जि।११२)

(६६।२)

ईऽ४य। इयाऽ२३४५। (द्वे त्रिः)। इयाहाउ। याच्छा। क्राऽऽ। सीऽ३पाऽ३रावति॥ यादा।
र्वाऽऽ। वाऽ३ताऽ३इवृत्रहन्॥ आताः। त्वाऽऽ। गीर्भिर्द्युगदीऽ३न्द्राऽ३केशिभिः॥ सूता।
वा॰ऽऽ। आऽ३वीऽ३वासति। ईऽ४य। इयाआऽ२३४५॥ (द्वे त्रिः)। इयाऽ५हाउ। वा॥
अश्वदिष्टयेऽ३हस्॥

(दी. ४। प. २८। मा. ७) २ (दे।११३)

(६७।१)॥ तास्येन्द्रे द्वे, तास्विन्द्रे तास्पन्द्रे वा। तस्येन्द्र तस्पन्द्रो वा अनुष्टुप्सोमः सोमेन्द्रौ वा॥

आऽ। भीनव। तआऽ२१२। द्रुहआऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४डा॥ प्रा। यमिन्द्र। स्यकाऽ२१२।
मियमाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४डा॥ वा। त्संनपू। र्वआऽ२१२। युनियाऽ३१उवाऽ२३।
ईऽ२३४डा॥ जा। त॰रिह। तिमाऽ२१२। तरआऽ३१उवाऽ२३॥ इट्स्थि-इडाऽ२३४५॥

(दी. २। प. २०। मा. ९) ३ (जो।११४)

(६७।२)

अभीनव। तआऽ३१उवाऽ२३। दूऽ२३४हाः। होइ। हो। वाहाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४डा॥
प्रियमिन्द्र। स्यकाऽ३१उवाऽ२३। मीऽ२३४याम्। होइ। हो। वाहाऽ३१उवाऽ२३।
ईऽ२३४डा॥ वत्संनपू। वंआऽ३१उवाऽ२३। यूऽ२३४नी। होइ। हो। वाहाऽ३१उवाऽ२३।
ईऽ२३४डा॥ जातश्रिह। तिमाऽ१उवाऽ२३। ताऽ२३४राः। होइ। हो। वाहाऽ३१उवाऽ२३॥
इट्स्थि-इडाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. २८। मा. १८) ४ (जै।११५)

(६८।१) ॥ तौरश्रवसे द्वे। तुरश्रवाः बृहतीन्द्रः॥

यदिन्द्रशासोअव्राताम्॥ च्यावयासदाऽ३साऽ२३स्पराइ। आऽ२३स्मा। कम।
शुंमाघाऽ१वाऽ२३न्। पूरूऽ२स्पृऽ२३४हाम्॥ वसाव्याआऽ३४। औहोवा॥ धाऽ२३इवाऽ३।
हाऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ याऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ११। मा. ८) ५ (टै।११६)

(६८।२)

याऽ५दिन्द्र। शाऽ३सोऽ३अव्राताम्॥ च्यावयासाऽ२। दसास्पाऽ१राऽ२इ। उवाऽ३।
ओऽ३वा। अस्माकाऽ१माऽ२। शुंमाघाआऽ१वाऽ२न्। उवाऽ३। ओऽ३वा। पुरूस्पृऽहाऽ२म्॥
वसाव्याऽ१याऽ२। उवाऽ३। ओऽ३वाऽ३॥ धिबोवा। हाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. २। प. १६। मा. ६) ६ (चु।११७)

(६९।१) ॥ (धेनुपयसी द्वे), धेनुसाम। प्रजापतिर्गायत्री सोमः सोमेन्द्रौ वा॥

हाउहाउहाउ। ओहा। (द्विः)। ओहाइ। इयाहाउ। (त्रिः)। औहोऽ१इ। (त्रिः)। भुवत्। इडा।
स्वादिष्ठया। मादिष्ठया॥ जनत्। इडा। पवस्वसो। माधारया॥ वृधत्। इडा। इन्द्रायपा।
तावाइसुताः॥ करत्। इडाऽ२३। हाउहाउहाउ। ओहा। (द्विः)। ओहाइ। इयाहाउ। (त्रिः)।
औहोऽ१इ। (द्विः)। औहोऽ१२। याऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। धेनु॥

(दी. ३३। प. ३७। मा. २६) ७ (ठू।११८)

(७०।१) ॥ पयस्साम। प्रजापतिर्गायत्र्यग्निः (प्रजापतिः)॥

इयोऽ३। इया। इयोऽ२इया। इयोऽ३। इया। अग्नेयुङ्क्ष्वाहीऽ३येतवा। अग्नेयुङ्क्ष्वा।
हीयतवा। अग्नेयुङ्क्ष्वाहीऽ३येतवा॥ इयोऽ३। इया। इयोऽ२इया। इयोऽ३। इया।
अश्वासोदाइवाऽ३साधवाः। अश्वासोदाइ। वासाधवाः। अश्वासोदाइवाऽ३साधवाः॥ इयोऽ३।
इया। इयोऽ२इया। इयोऽ३। इया। अरंवहान्तीऽ३आशवाः। अरंवहा। तीयाशवाः।
अरंवहान्तीऽ३आशवाः॥ इयोऽ३। इया। इयोऽ२इया। इयोइयाऽ३उवाऽ३॥ आऽ२। (त्रिः)।
हस्स्थिएऽ३पयाऽ२३४५ः॥

(दी. २८। प. ३५। मा. १९) ८ (णो।११९)

(७१।१) ॥ स्वर्ज्योतिषी द्वे। प्रजापतिर्जगती आदित्यः सोमो वा॥

हाउहाउहाउ। स्वर्विश्वम्। (त्रिः)। अरूरुचत्। (त्रिः)। उषसःपृश्निराऽ२ग्रायाः॥ हाउहाउहाउ।
स्वर्विश्वम्। (त्रिः)। उक्षामिमे। (त्रिः)। तिभुवनेषुवाऽ२जायूः॥ हाउहाउहाउ। स्वर्विश्वम्। (त्रिः)।
मायाविनः। (त्रिः)। ममिरेअस्यमाऽ२याया॥ हाउहाउहाउ। स्वर्विश्वम्। (त्रिः)। नृचक्षसः।

(त्रिः)। पितरोगर्भमाऽ२दाधूः। हाउहाउहाउ। स्वर्विश्वम्। (द्विः)। सुवाऽ२३र्विश्वाउ। वाऽ३॥

एऽ३। सुवाऽ२३४५ः॥

(दी. ३३। प. ३९। मा. ४४) ९ (ढी।१२०)

(७१।२)

हाउहाउहाउ। ज्योतिर्विश्वम्। (त्रिः)। अरूरुचत्। (त्रिः)। उषसःपृश्निराऽ३। ग्रायाः॥

हाउहाउहाउ। ज्योतिर्विश्वम्। (त्रिः)। उक्षामिमे। (त्रिः)। तिभुवनेषुवाऽ३। जायूः॥

हाउहाउहाउ। ज्योतिर्विश्वम्। (त्रिः)। मायाविनः। (त्रिः)। मभिरेअस्यमाऽ३। याया॥

हाउहाउहाउ। ज्योतिर्विश्वम्। (त्रिः)। नृचक्षसः। (त्रिः)। पितरोगर्भमाऽ३। दाधूः।

हाउहाउहाउ। ज्योतिर्विश्वम्। (द्विः)। ज्योताऽ२३इर्विश्वाउ। वाऽ३॥ एऽ३। ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ४९। प. ४३। मा. ४५) १० (दु।१२१)

॥ दश तृतीयः खण्डः॥३॥

(७२।१) ॥ यण्वम्। प्रजापतिर्गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रमिद्गाथिनोबृहत्। एऽ२। इन्द्रमर्केभिः। अर्किणोवा॥ औहोवाऔहोवाऔहोवा।

औहोहाइ। (त्रिः)। इन्द्रंवाणीरनूऽ२३षताउ। वाऽ३। ईऽ२३४डा॥ श्री॥ औहोवा(३)।

औहोहाइ। (त्रिः)। इन्द्रइद्धर्योऽ२३ःसचाऽ३। संमिश्लआवचोऽ२३युजाऽ३॥ औहोवा(३)।

औहोहाइ। (त्रिः)। इन्द्रोवज्रीहिराऽ२३ण्ययाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४डा॥ श्री॥ औहोवा(३)।

औहोहाइ। (त्रिः)। इन्द्रवाजेषुनोऽ२३अवाऽ३। सहस्रप्रधनाऽ२३इषुचाऽ३॥ औहोवा(३)।

औहोहाइ। (त्रिः)। उग्रउग्राभिरूऽ२३तिभाउ। वाऽ३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. ७१। प. ३७। मा. ३६) ११ (खू।१२२)

(७३।१) ॥अपत्यम्। प्रजापतिर्गायत्री सोमः॥

हाउहाउहाउ। उच्चातेजातमाऽ२३०धसाऽ३ः॥ हाउहाउहाउ। दिविसद्भूमियाऽ२३ददाऽ३इ।

हाउहाउहाउ। उग्रꣳशर्मर्महाऽ२३इश्रवाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४डा॥ श्री॥ हाउहाउहाउ।

सनइन्द्रायययाऽ२३ज्यवाऽ३इ॥ हाउहाउहाउ। वरुणायमरूऽ२३द्भियाऽ३ः॥ हाउहाउहाउ।

वरिवोवित्पराऽ२३इस्रवाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४डा॥ श्री॥ हाउहाउहाउ।

एनाविश्वानिआऽ२३र्यआऽ३॥ हाउहाउहाउ। द्युम्नानिमानुषाऽ२३णाऽ३म्॥ हाउहाउहाउ।

सिषासन्तोवनाऽ२३महाउ। वाऽ३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. ४१। प. २४। मा. ४१) १२ (घा।१२३)

(७४।१) ॥ आयुर्नवस्तोभे द्वे, आयुस्साम। प्रजापतिर्विष्टारपंक्तिरिन्द्रः॥

हाउहाउहाउवा। विश्वतोदावन्विश्वतोनआभर॥ हाउ(३)वा। यन्वाशविष्ठमीमहे। हाउ(३)वा।

आयुः। हाउ(३)वा॥ सूवः। हाउ(३)वा॥ ज्योतिः। हाउहाउहाउवाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १२। मा. २२) १३ (फ्रा।१२४)

(७४।२) ॥ नव स्तोभम्॥

विश्वतोदावन्विश्वतोनआ। भराओवा। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)। हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)।

हाउवा॥ विश्वतोदावन्विश्वतानआभर। भराओवा। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)।

हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)। हाउवा। यन्वाशविष्ठमीमहे। महाओवा। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)।

हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)। हाउवा। ईडा। इडाओवा। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)।

हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)। हाउवा॥ सूवः। सुवाओवा। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)।

हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)। हाउवा॥ ज्योतिः। ज्योताओवा। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)।

हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)। हाउवाऽ३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १२६। प. ६१। मा. ५९) १४ (को।१२५)

(७५।१)॥ रायो वाजीयबार्हद्गिरे द्वे, रायो वाजीयम्। रायोवाआजः पंक्तिरिन्द्रः॥

एस्वादोः॥ इत्थाविषूवतोमधोःपिबन्तिगौऽ२रियाः। इडा। याइन्द्रेणसयाऽ१वाऽ३रीः।

वृष्णामदन्तिशोऽ३। भाथा॥ वस्वीरनुस्वराऽ२३होइ॥ जायमाऽ३१उवाऽ२३॥

इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ९। मा. ७) १५ (ढे।१२६)

(७६।१)   ॥ बार्हद्गिरम्। बृहद्गिरिः पथ्यापंक्तिरिन्द्रः॥

इन्द्रोमदा॥ यवावृधेशवसेवृत्रहाऽ२नृभाइ। अथा। तमिन्महत्सुवाऽ१जाऽ३इषू।

ऊतिमर्भेहवाऽ३। माहाइ॥ सवाजेषुप्रनाऽ२३होइ॥ वाइषदाऽ३१उवाऽ२३॥ आऽ२३४था॥

(दी. ८। प. ९। मा. ६) १६ (ढू।१२७)

(७७।१) ॥ संकृति पार्थुरश्मे द्वे, संकृति। प्रजापतिः देवा वा पंक्तिरिन्द्रः॥

एस्वादोः॥ इत्थाविषूऽ२३होऽ२३। वताऽ२३ः। हाओवा। (त्रिः)। हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)।

हाउवा। मधोःपिबन्तिगौर्यः। याइन्द्रेणसयावरीः॥ वृष्णामदन्तिशोभथा॥ वस्वीरनुस्वराज्यम्।

हाओवा। (त्रिः)। हाऽ३ओऽ२३४वा। (द्विः)। हाउवाऽ३। हौऽ३। आऽ३। ऊऽ३।

ईऽ२३४५॥

(दी. ३०। प. २३। मा. १८) १७ (ब्रै।१२८)

(७७।२) ॥ पार्थुरश्मम्। पृथुरश्मिः प्रजापतिः पंक्तिरिन्द्रः॥

एस्वादोः। ओऽ२३४वा॥ इत्थाविषूऽ२वताः। अथा। एमधोः। ओऽ२३४वा॥ पिबान्तिगौऽ२रियाः। अथा॥ एयाई। ओऽ२३४वा॥ द्रेणस्याऽ२वराइ। अथा॥ एवृष्णा। ओऽ२३४वा॥ मदन्तिशोऽ२भथा। अथा॥ एवस्वीः। ओऽ२३४वा॥ अनुस्वराऽ२जियाम्। अथाऽ२३४५॥

(दी. २। प. २०। मा. ८) १८ (जै।१२९)

(७८।१) ॥ श्येन-वृषके द्वे, (श्येनम्)। षट् प्रजापतिपदानि जगतीन्द्रः॥

ऊभाइ॥ यदिन्द्ररोऽ२दसाइ। इडा॥ आपा॥ प्राथउषाऽ२इवा। इडा॥ माहा॥ तन्वामहाऽ२इनाम्। इडा॥ साम्रा॥ जंचर्षणाऽ२इनाम्। इडा॥ देवी। जनित्र्यजाऽ२इजनात्। इडा॥ भाद्रा॥ जनित्र्यजाऽ२इजनात्॥ इडाऽ२३४५॥

(दी. २। प. १८। मा. १२) १९ (जा।१३०)

(७९।१) ॥ वृषकम्। प्रजापतिः पंक्तिरिन्द्रः॥

एस्वादोः। (द्विः)। इत्थाविषूऽ२वताः। इडा॥ एमधोः॥ (द्विः)। पिबन्तिगौऽ२रियाः। इडा॥ एयाई॥ (द्विः)। द्रेणसयाऽ२वराइ। इडा॥ एवृष्णा। (द्विः)॥ मदन्तिशोऽ२भथा। इडा॥ एवस्वीः। (द्विः)। अनुस्वराऽ२जियाम्॥ इडाऽ२३४५॥

(दी. २। प. २०। मा. १२) २० (आ।१३१)

(८०।१) ॥ भर्द्रम्। प्रजापतिर्भुवनो द्विपदाविराड्विश्वे देवाः॥

होइहा। (त्रिः)। इहोइहा। (त्रिः)। औहोऽ२। इहा। (द्वे द्विः)। औहोइहाऽ३४। औहोवा॥
इमानुकुंभुवनासीषधेमाऽ३। इहा। इन्द्रश्चविश्वेचदेवाऽ३ः। इहा। होइहा। (त्रिः)। इहोइहा।
(त्रिः)। औहोऽ२। इहा। (द्वे द्विः)। औहोइहाऽ३४॥ औहोवा॥ एऽ३। भद्रम्॥

(दी. ४२। प. ३०। मा. १६) २१ (ञू।१३२)

(८०।२) ॥ श्रेयस्साम। विराट् प्रजापतिर्विश्वे देवाः॥

होइया। (त्रिः)। इयोइया। (त्रिः)। औहोऽ२। इया। (द्वे द्विः)। औहोइयाऽ३४। औहोवा॥
इमानुकंभुवनासिषधेमाऽ३। इया। इन्द्रश्चविश्वेचदेवाऽ३ः। इया। होइया। (त्रिः)। इयोइया।
(त्रिः)। औहोऽ२। इया। (द्वे द्विः)। औहोइयाऽ३४। औहोवा॥ एऽ३। श्रेयाऽ२३४५ः॥

(दी. ४३। प. ३०। मा. १६) २२ (णू।१३३)

(८१।१) ॥ तन्वोतुनी द्वे, (तन्तुसाम)। प्रजापतिर्गायत्री सोमः॥

हाउतन्तुः। (त्रिः)। हाउविश्वम्। (त्रिः)। अचिक्रदद्वार्षाहराइः॥ महान्मित्रोनादर्शताः॥
सꣳसूरियेणादिद्युताइ॥ हाउतन्तुः। (त्रिः)। हाउविश्वम्। (द्विः)। हाउ। वाऽ२इ। श्वाऽ२३४।
औहोवा॥ एऽ३। तन्तूऽ२३४५ः॥

(दी. २२। प. २०। मा. २९) २३ (ञो।१३४)

(८१।२) ॥ ओतु साम॥

हावोतुः। (त्रिः)। हावेही। (त्रिः)। अचिक्रदद्वार्षाहराइः॥ महान्मित्रोनादर्शताः॥
सꣳसूरियेणादिद्युताइ॥ होवातुः। (त्रिः)। हावेही। (द्विः)। हाउ। आऽ२इ। हाऽ२३४।
औहोवा॥ एऽ३। ओतूऽ२३४५ः॥

(दी. ३९। प. २०। मा. १३) २४ (नि।१३५)

(८२।१) ॥ सहोमहसी द्वे, सहस्साम। प्रजापतिर्विराडिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। पिबासोमसाम्। इन्द्र। मन्दतुत्वा॥ हाउहाउहाउ। यन्तेसुषा। वाऽ३हरि।
अश्वाअद्रीः। हाउहाउहाउ। सोतुर्बाहू। भ्याऽ३ꣳसुय। तोनअर्वा॥ हाउहाउहाउ। वा। ए।
दिशः॥ हाउहाउहाउ। वा। ए। प्रदिशः। हाउहाउहाउ। वा। ए। उद्दिशः। हाउ(२)। वाऽ३॥
एऽ२। सहाऽ२३४५ः॥

(दी. १८। प. २८। मा. २९) २५ (डो।१३६)

(८२।२) ॥ महस्साम। प्रजापतिर्विराडिन्द्रः॥

हाउहाउहाउवा॥ पिबासोममिन्द्रमन्दतुत्वा। हाउ(३)वा॥ यन्तेसुषावहर्यश्वाद्रिः॥ हाउ(३)वा।
सोतुर्बाहुभ्याꣳसुयतोनार्वा। हाउ(३)वा। एभूमिः॥ हाउ(३)वा॥ एअन्तरिक्षम्। हाउ(३)वा॥
एद्यौः। हाउहाउहाउवाऽ३। एऽ३महाऽ२३४५ः॥

(दी. १७। प. १४। मा. २७) २६ (झे।१३७)

(८३।१) ॥ वार्कजम्भे द्वे। वृकजम्भो बृहतीन्द्रः॥

हाउप्रवइन्द्रायबृहाताइ॥ मरुत्रोब्रह्मअर्चता। हाउ। वृत्रꣳहन्तिवृत्रहा। हाउ। शाऽ३ताक्रातूऽ३ः।
हाउ॥ वाज्रेणशा। हाउ॥ ताऽ२पाऽ२३४औहोवा॥ र्वणाऽ३हस्॥

(दी. ६। प. ११। मा. ११) २७ (का।१३८)

(८३।२)

हाउहाउहाउ। विश्वेषाम्। (त्रिः)। भूतानाम्। (त्रिः)। स्तोभानाम्। (त्रिः)। प्रवइन्द्रायबृहाताइ। हाताइ॥ (द्विः)। मरुतोब्रह्मअर्चाता। चाता॥॥ (द्विः)। वृत्रꣳहनतिवृत्रहाशतक्रातूः। क्रातूः॥ (द्विः)। वज्रेणशतपर्वाणा। र्वाणा। (द्विः)। हाउहाउहाउ। विश्वेषाम्। (त्रिः)। भूतानाम्। (त्रिः)। स्तोभानाम्। (द्विः)। स्तोभानाऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ५९। प. ३४। मा. ३१) २८ (ध्रा१३९)

(८४।१) ॥ इषविश्वज्योतिषी द्वे, (इषःसाम)। प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाह। हाऽ३। ओऽ३४वा। (त्रीणी त्रिः)। आसा। विदाइ। वाऽ३ङ्गोऋ। जीकमन्धाः॥ नाया। स्मिन्नाइ। द्रोऽ३जनु। षेमुवोचा॥ बोधा। मसाइ। त्वाऽ३हरि। अश्वयज्ञैः॥ बोधा। नस्तो। माऽ३मन्ध। सोमदेषू। हाह। हाऽ३। ओऽ३४वा। (त्रीणि द्विः)। हाह। हाऽ३। ओऽ३४५वाऽ६५६॥ ईऽ२३४५ष्॥

(दी. १२। प. ३५। मा. ७) २९ (जे।१४०)

(८४।२) ॥ विश्वज्योतिस्साम। [सर्वाण्याद्यं पुनः]॥

ईऽ२यो। (त्रिः)। ऐही। (त्रिः)। हꣳ। (त्रिः)। ओहा। (द्विः)। ओहाइ। असाविदाइ। वंगोऋजीऽ२। कमाऽ२०धाः। ईऽ२यो। (त्रिः)। ऐही। (त्रिः)। हꣳ। (त्रिः)। ओहा। (द्विः)। ओहाइ। नियस्मिन्नाइ। द्रोजनुषेऽ२म्। उवोऽ२चा॥ ईऽ२यो। (त्रिः)। ऐही। (त्रिः)। हꣳ। (त्रिः)। ओहा। (द्विः)। ओहाइ। बोधामसाइ। त्वाहरियाऽ२। श्वयाऽ२ज्ञैः॥ ईऽ२यो। (त्रिः)। ऐही। (त्रिः)। हꣳ। (त्रिः)। ओहा। (द्विः)। ओहाइ। बोधास्नस्तो। मामंधसोऽ२। मदाऽ२इषू।

ईऽ२यो। (त्रिः)। ऐही। (त्रिः)। ह॰। (त्रिः)। ओहा। ओहा। ओऽ३हाउ। वाऽ३॥ एऽ३।

विश्वज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ६८। प. ७५। मा. १४) ३० (णी।१४१)

॥ दश पञ्चमः खण्डः॥५॥

॥ इति (ग्रामे) आरण्यकगाने तृतीयस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(८५।१) ॥ द्रविणविस्पर्द्धसी द्वे, (द्रविणम्)। प्रजापतिर्गायत्री मित्रावरुणोर्यमा॥

हाउमहि। (त्रिः) महीऽ२महि। (त्रिः)। माहेमाहे। (त्रिः) महित्रीणामवाऽ२रस्तू।

औहोहोवाऽ२॥ द्युक्षंमित्रस्याऽ२र्यम्णाः। औहोहोवाऽ२॥ दुराधर्षंवरूऽ२णस्या।

औहोहोवाऽ२३॥ हाउमहि। (त्रिः)। महीऽ२महि। (त्रिः)। माहेमाहे। (द्विः)। महि।

माऽ२हाऽ२३४औहोवा॥ ए। महि। (द्वे द्विः)। ए। महीऽ२३४५॥

(दी. ४३। प. ३१। मा. ८) १ (टै।१४२)

(८५।२) ॥ विस्पर्द्धस्साम। प्रजापतिर्गायत्री मित्रावरुणोर्यमा॥

हाउदिवि। (त्रिः)॥ दिवीऽ२दिवी। (त्रिः)। दाइवेदाइवे। (त्रिः)। महित्रीणामवाऽ२रस्तू॥

द्युक्षंमित्रस्याऽ२र्यम्णाः॥ दुराधर्षंवरूऽ२णस्या॥ हाउदिवि। (त्रिः)। दिवीऽ२दिवि। (त्रिः)।

दाइवेदाइवे। (द्विः)। दिवि। दाऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥ ए। दिवि। ए। दिवि। ए।

दिवीऽ२३४५॥

(दी. ३४। प. २८। मा. १९) २ (दो।१४३)

(८६।१)॥ याम-माधुच्छन्दसे द्वे, यामम्। [प्रथमस्य] यमस्त्रिष्टुबादित्यान्तर्गतः परः पुरुषः॥

औहोइ। इयाहाउ। औहौहोऽ३वा। नाकेसुषा। णमुपयत्पतंतम्॥ औहोइ। इयाहाउ।

औहौहोऽ३वा। हार्द्वाविना। तोअभ्यचक्षतत्वो॥ होइ। इयाहाउ। औहौहोऽ३वा। हाइरण्यपा।

क्षंवरुणस्यदूतम्॥ औहोइ। इयाहाउ। औहौहोऽ३वा॥ यामस्ययो। नौशकुनंभुरण्युम्।

औहोइ। इयाहाउ। औहौहोऽ३वाऽ३। हाउवाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३१। प. २५। मा. १६) ३ (ड्रू।१४४)

(८७।१) ॥ माधुच्छन्दसम्। मधुछन्दागायत्रीन्द्रः॥

सुरूपकृत्नुमूतयेसुदघामा॥ वगोऽ२। दुहयाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४डा। सूऽ२३४वाः॥

जुहूमाऽ२३सी॥ द्यविद्यवियाऽ३१उवाऽ२३॥ ज्योऽ२३४तीः॥

(दी. ५। प. ८। मा. ४) ४ (बी।१४५)

(८८।१) ॥ वसिष्ठ शफौ द्वौ। वसिष्ठस्त्रिष्टुप्सोम धातृविष्णवः॥

हाउप्राथाः॥ चयस्यसप्रथः। चनाऽ२। माऽ३उवाऽ३। ईहा। (त्रिः)। हुवाइ। ओऽ२३४वा।

ईऽ२३४डा। आनुष्टुभस्यहविषः। हवाऽ२इः। याऽ३उवाऽ३। ईहा। (त्रिः)। हुवाइ।

ओऽ२३४वा। ईऽ२३४डा॥ धातुर्द्युतानात्सवितुः। चवाऽ२इ। ष्णाऽ३उवाऽ३। ईहा। (त्रिः)।

हुवाइ। ओऽ२३४वा। ईऽ२३४डा॥ रथन्तरमाजभारा। वसाऽ२इ। ष्ठाऽ३उवाऽ३। ईहा।

(त्रिः)। हुवाइ। ओऽ२३४वा। ईऽ२३४डा॥ एऽ३। द्युत्॥

(दी. ३१। प. ३९। मा. १८) ५ (द्यै।१४६)

(८८।२)

प्राथाः॥ चयस्यसप्रथः। चनाऽ२। माऽ३१उवाऽ२३। ईडा। (त्रिः)। होइ। हो।
वाहाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४हा। आनुष्टुभस्यहविषः। हवाऽ२इः। याऽ३१उवाऽ२३। ईडा।
(त्रिः)। होइ। हो। वाहाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४हा॥ धातुर्द्युतानात्सवितुः। चवाऽ२इ।
ष्णाऽ३१उवाऽ२३। ईडा। (त्रिः)। होइ। हो। वाहाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४हा॥
रथन्तरमाजभारा। वसाऽ२इ। ष्ठाऽ३१उवाऽ२३। ईडा। (त्रिः)। होइ। हो।
वाहाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४हा॥ एऽ३। द्युताऽ२३४५ः॥

(दी. ३५। प. ४३। मा. २१) ६ (बा।१४७)

(८९।१) ॥ शुक्रचन्द्रे द्वे, शुक्रसाम। प्रजापतिर्गायत्रीवायुः॥

हाउहाउहाउ। शुक्रम्। (त्रिः)। शुक्रꣳशुक्रम्। (त्रिः)। शुक्रꣳशुक्रम्। (त्रिः)।
नियुत्वान्वायऽ३वागाऽ१हीऽ२॥ अयꣳशुक्रोअऽ३यामाऽ१इताऽ२इ॥
गन्तासिसुन्वऽ३तोगृऽ१हाऽ२३म्॥ हाउहाउहाउ। शुक्रम्। (त्रिः)। शुक्रꣳशुक्रम्। (त्रिः)।
शुक्रꣳशुक्रम्। (त्रिः)। शुक्रम्। शूऽ२। क्राऽ२३४। औहोवा॥ ए। शुक्रम्। (द्वे त्रिः)॥

(दी. १५। प. ३२। मा. ३१) ७ (फा।१४८)

(९०।१) ॥ चन्द्रसाम॥ प्रजापतिर्गायत्रीत्वष्टाचन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। चन्द्रम्। (त्रिः)। चन्द्रश्चन्द्रम्। (त्रिः)। चन्द्रश्चान्द्रम्। (त्रिः)।
अत्राहगोरऽ३मान्वाऽ१ताऽ२॥ तामत्वष्टुरऽ३पाइचाऽ१याऽ२म्॥
इत्थाचन्द्रमऽ३सोगृऽ१हाऽ२३इ॥ हाउहाउहाउ। चन्द्रम्। (त्रिः)। चन्द्रश्चन्द्रम्। (द्विः)।
चन्द्रश्चान्द्रम्। (द्विः)। चन्द्रम्। चाऽ२। द्राऽ२३४। औहोवा॥ ए। चन्द्रम्। (द्वे त्रिः)॥

(दी. १५। प. ३२। मा. ३०) ८ (फौ।१४९)

॥ अष्टौ षष्ठः खण्डः॥६॥

(९१।१) ॥ वायोः स्वरसामानि षट्। वायुरनुष्टुबिन्द्रः॥

एयज्ञायथाः॥ अपूर्विया। हाउ। मघवन्वृ। हाउ। त्रहत्याया। हाउ। तत्पृथिवीम्। हाउ। अप्रथयाः। हाउ। एऔहोवादीशाः॥ तदस्तभ्नाः। हाउ॥ उतोदिवाम्। हाउ। एऔहोवाऽ३॥ अस्स्थिपयाऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. १८। मा. १७) ९ (जे।१५०)

(९१।२) ॥ द्वितीयं स्वर साम॥

एहाउयज्ञायथाः॥ अपूर्विया। होइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। मघवन्वृ। होइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। त्रहत्याया। होइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। तत्पृथिवीम्। होइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। अप्रथयाः। होइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। एऔहोवादीशाः॥ तदस्तभ्नाः। होइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। उतोदिवाम्। होइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। एऔहोवाऽ३॥ हस्स्थिपयाऽ२३४५ः॥

(दी. १३। प. ३९। मा. ५३) १० (ढि।१५१)

(९१।३) ॥ तृतीयं स्वर साम॥

एहाउ। औहोऽ२। यज्ञायथाऽ३ः। अपूर्विया॥ होववाऽ२३होइ। मा। घवन्वृत्रहत्याया। होववाऽ२३होइ। तात्। पृथिवीमप्राथयाः। होववाऽ२३हो। एऔहोवादीशाः॥ होववाऽ२३होइ। तात्। अस्तभ्नाउतोदिवाम्। होववाऽ२३होइ। एऔहोवाऽ३॥ हस्स्थिइडापयाऽ२३४५ः॥

(दी. १७। प. १८। मा. १७) ११ (जे।१५२)

(९११४) ॥ चतुर्थ स्वर साम।

याज्ञायाज्ञा॥ यथाअपूर्वियाऔऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३हो। माघवन्वृत्रहत्यायाऔऽ३हो।

हाऽ२इया। औऽ३हो॥ तात्पृथिवीमप्राथयाऔऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३हो॥

तादस्तभ्नाउतोदिवामौऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३होवाहाउवाऽ३॥ एऽ३। पयाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. १५। मा. ११) १२ (ण।१५३)

(९११५) ॥ पञ्चम स्वर साम॥

हुवौहोऽ१इ। (त्रिः)। यज्ञायथाः। अपूर्विया॥ मघवन्वृ। त्रहत्याया॥ तत्पृथिवीम्।

अप्राथयाः॥ तदस्तभ्नाः॥ उतोदिवाम्। हुवौहोऽ१इ। (द्विः)। हुवौहोऽ१ऽ२। उहुवाऽ३हाउ।

वाऽ३॥ हस्॥

(दी. ७। प. १७। मा. १२) १३ (छू।१५४)

(९११६) ॥ षष्ठं स्वर साम॥

योरयिंवोराऽ३यिन्तमाः॥ योद्युम्नाऽ२३४इर्द्यू। म्नावत्तमाऽ२३ः। सोमाःसूऽ२३४ताः।

साइन्द्रतायेऽ॥ अस्तिस्वाऽ२३४धा॥ पतेऽ३। माऽ२३४दाः। उहुवाऽ६हाउ। वा॥ अस्॥

(दी. ४। प. ११। मा. ८) १४ (तै।१५५)

(१) ॥ विष्णोस्त्रीनि स्वरीयांसि पञ्चानुगानम्। पञ्चानां वायुरनुष्टुबिन्द्रः॥

हाउहोहाइ। (त्रिः)। अन्तरिक्षꣳसुवर्द्दिवंजग। न्मा। (द्वे त्रिः)। परात्परमैरय। ता। (द्वे द्विः)।

परात्परमैरय। त। औहोवाहाउ। वा॥ ए। यज्ञोदिवोमूर्द्धादेवमादनोघर्मोज्योतिः॥

(दी. २४। प. १९। मा. ८) १५ (धे।१५६)

(२)

हाउहोहाइ। (त्रिः)। अन्तरिक्ष॑सुवर्द्दिवंजग। न्मा। (द्वे त्रिः)। परात्परमैरय। ता। (द्वे त्रिः)।
परात्परमैरय। त। औहोवाहाउ। वा। ए।
पृथिव्यन्तरिक्षन्द्यौरापःकनिक्रदात्सिन्धुरापोमरुतोमादयन्तांघर्मोज्योतिः॥

(दी. २५। प. १९। मा. ८) १६ (भे।१५७)

(३)

हाउहोहाइ। (त्रिः)। अन्तरिक्ष॑सुवर्द्दिवंजग। न्मा। (द्वे त्रिः)। परात्परमैरय। ता। (द्वे त्रिः)।
दिवोमूर्द्धान॑समैरयन्। होयेऽ३। होऽ२३४वा॥ यशोघर्म्मोज्योतिः। यशःसमैरयन्। होयेऽ३।
होऽ२३४वा। तेजोघर्म्मोज्योतिः। तेजःसमैरयन्। होयेऽ३। होऽ२३४वा॥ सुवर्घर्म्मोज्योतिः।
सुवःसमैरयन्। होयेऽ३। होऽ२३४वा॥ ज्योतिर्घर्म्मोज्योतिः। ज्योतिःसमैरयन्। होयेऽ३।
होऽ२३४५वाऽ६५६। घर्म्मोघर्म्मोज्योतिः॥

(दी. ३६। प. ३५। मा. १६) १७ (डू।१५८)

(९३।१)

हाउहोहाइ। (त्रिः)। अन्तरिक्ष॑सुवर्द्दिवंजग। न्मा। (द्वे त्रिः)। परात्परमैरय। ता। (द्वे द्विः)।
परात्परमैरय। त। औहोवाहाउ। वा॥ ए। इडायच्छहस्कृतिंयच्छ। ए। मनआजोयच्छ। ए।
मनोमहिमानंयच्छ। ए। यशःस्त्विषिंयच्छ। ए। प्रजांवर्चोयच्छ। ए। पशून्विशंयच्छ। ए।
ब्रह्मक्षत्रंयच्छ। ए। स्वज्योतिर्यच्छ॥

(दी. ३१। प. ३३। मा. ८) १८ (गै।१५९)

(९३।२)

हाउहोहाइ। (त्रिः)। अन्तरिक्ष॰सुवर्द्दिवंजग। न्मा। (द्वे त्रिः)। परात्परमैरय। ताऽ। (द्वे त्रिः)।
यज्ञायथाअपूर्वाया॥ मघवन्वृत्रहत्याया॥ तत्पृथिवीमप्राथायाः॥ तदस्तभ्नाउतोदाइवाम्।
हाउहोहाइ। (त्रिः)। अन्तरिक्ष॰सुवर्द्दिवंजग। न्मा। (द्वे त्रिः)। परात्परमैरय। ता। (द्वे द्विः)।
परात्परमैरय। त। औहोवाहाउ। वा॥ ए।
तेजोघर्मःसंक्रीडन्तेशिशुमतोर्वायुगोपास्तेजस्वतीर्म्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रदुः॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥
ईऽ२३४५॥

(दी. ४५। प. ४०। मा. २०) १९ (म्रौ।१६०)

(९३।३) ॥ द्यनुगानम्। विष्णुः वायुरनुष्टुबिन्द्रः॥

हाउहोवा। (त्रिः)। परात्परमैरय। ता। (द्वे द्विः)। परात्परमैरय। त। औहोवाहाउ। वा॥
इन्द्रोधेनुः। (त्रिः)। आपोधेनुः। (त्रिः)। भूमिर्धेनुः। (त्रिः)। अन्तरिक्षन्धेनु। (त्रिः)। द्यौर्धेनुः।
(त्रिः)। परन्धेनु। (त्रिः)। व्रतधेनु। (त्रिः)। सत्यंधेनु। (त्रिः)। ऋतंधेनु। (त्रिः)। इडाधेनुः।
(त्रिः)। स्वर्धेनुः। (त्रिः)। ज्योतिर्धेनुः॥ (त्रिः)॥

(दी. ७१। प. ४७। मा. २५) २० (खु।१६१)

(९३।४)

हाउहोवा। (त्रिः)। परात्परमैरय। ताऽ। (द्वे त्रिः)। यज्ञायथाः। अपूर्विया। अपूर्वियाऽ३।
आपूर्वाऽ२३४या॥ मघवन्वृ। त्रहत्याया। त्रहत्यायाऽ३। त्राहत्याऽ२३४या। तत्पृथिवीम्।

अप्राथयाः। अप्राथयाऽ३ः। अप्राथाऽ२३४याः॥ तदस्तभ्नाः। उतोदिवाम्। उतोदिवाऽ३म्।
ऊतोदाऽ२३४इवाम्। हाउहोवा। (त्रिः)। परात्परमैरय। ताऽ। (द्वे द्विः)। परात्परमैरय। त।
औहोवाहाउ। वा॥ ए। तेजोघर्मःसंक्रीडन्तेवायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रदुः॥

(दी. ४७। प. ३८। मा. १८) २१ (जै।१६२)

(९३।५) ॥ चतुरनुगानम्। विष्णुः। वायुरनुष्टुबिन्द्रः॥

हाऽ२ऊवाक्। (त्रिः)। होवा। (द्विः)। होवाऽ३। हाउवा। ए।
तोकंप्रजाङ्गर्भोनायमदध्मह्याचपराचपथिभिश्चरन्ताऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. ९। मा. ८) २२ (झैं।१६३)

(१)

हाऽ२ऊवाक्। (त्रिः)। होवा। (त्रिः)। अयꣳसशिङ्तेऽ३। होइ।
यस्माद्यावापृथिवीभुवनानिचक्रदुः। होइ। अयꣳसशिङ्तेऽ३। होइ।
यस्मादापओषधयोभुवनानिचक्रदुः। होइ। अयꣳसशिङ्तेऽ३। होइ।
यस्मात्समुद्रियाभुवनानिचक्रदुः। होइ। अयꣳसशिङ्तेऽ३। होइ।
यस्माद्विश्वाभूताभुवनानिचक्रदुः। होइ। हाऽ२ऊवाक्। (त्रिः)। होवा। (द्विः)। होवाऽ३।
हाउवा॥ ए। आपः। आपः। आपाऽ२३४५ः॥

(दी. १९। प. ३३। मा. २९) २३ (दो।१६४)

(२)

हाऽ२ऊवाक्। (त्रिः)। होवा। (त्रिः)। येभिर्विया। श्वमैरायाऽ२ः॥ तेभिर्विया। श्नुहीमादाऽ२म्॥ येभिर्भूताम्। सहस्साहाऽ२ः॥ तेभिस्तेजआपः। आपाऽ२। येभिर्व्यन्तरिक्षमैरयाऽ३ः। हाउवा॥ ए। आपः। आपः। आपाऽ२३४५ः॥

(दी. १३। प. २०। मा. १७) २४ (णे।१६५)

(१)

हाऽ२ऊवाक्। (त्रिः)। होवा। (त्रिः)। यज्ञायथाअपूहोऽ२। वायाऽ२। मघवन्वृत्रहाहोऽ२। त्यायाऽ२॥ तत्पृथिवीमप्राहोऽ२। थायाऽ२ः॥ तदस्तभ्नाउतोहोऽ२इ। दाइवाऽ२म्।
हाऽ२ऊवाक्। (त्रिः)। होवा। (द्विः)। होवाऽ३। हाउवा॥ ए।
तेजोघर्मःसंक्रीडन्तेशिशुमतीर्वायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानिचक्रदूऽ२३४५ः॥

(दी. १६। प. २३। मा. २०) २५ (गौ।१६६)

[द्वन्द्वपर्वणि ७७ सामानि]

॥ सप्तमः खण्डः॥७॥

॥ इति (ग्रामे) आरण्यकगाने तृतीयः प्रपाठकः॥३॥

॥ इति द्वन्द्व-नाम द्वितीयं पर्व समाप्तम्॥

॥ अथ (वाचो-) व्रतपर्व॥

(१) ॥ वाचो व्रते द्वे। वाग्यजुर्वाक् वाक् त्रिष्टुप् वाक्॥

ओम्। हुवेवाचाम्॥ वाचंवाचꣳहुवेऽ२। वाक्श्रृणोतुश्रृणोतुवाऽ२क्। वाक्समैतुवाऽ२क्॥

वाग्रमताम्। रमताम्। रमाऽ२३। तुवाऽ३४औहोवा॥ ईहा॥ (त्रिः)॥

(दी. २१। प. ११। मा. ६) १ (कू।१६७)

(२)

हुवाइवाचाम्। वाचꣳहुवाइ॥ वाक्श्रृणोतूऽ२३। श्राऽ३र्णोतुवाक्। वाक्समैतूऽ२३।

साऽ३मैतुवाक्॥ वाग्रमताऽ२३म्॥ रम। तुवाऽ३४औहोवा॥ माऽ२३४५इ॥ (त्रिः)॥

(दी. १३। प. १२। मा. १०) २ (ठौ।१६८)

(९४।१) ॥ शशस्य कर्षूशवस्य व्रतम् कर्षूसाम। शशो गायत्रीन्द्रो वृत्रहा॥

आतूनाऽ२३इन्द्रवृत्रहन्हाउ॥ आस्माकमाहाउ। धामागहाहाउ॥ माहान्महाहाउ॥ भिरूऽ३।

ताऽ२३४इभाइ॥ उहुवाऽ६हाउ। वा॥ अस्थिफट्स्थिहस्स्थिवाक्। ऊऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. १३) ३ (र्डि।१६९)

(१) ॥ सत्रस्यर्द्धि साम॥ प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

औहोवाऔहोवाऔहोऽ३वा। अगन्मज्योतिः। (द्विः)। अगन्मज्योतिः॥ अमृताअभूम। (द्विः)।

अमृताअभूमा। तरिक्षंपृथिव्याअध्यारुहामा। (द्विः)। तरक्षंपृथिव्याअध्यारुहाम।

दिवमन्तरिक्षादध्यारुहाम। (त्रिः)। अविदामदेवान्। (त्रिः)। समुदेवैरगन्महि। (त्रिः)।

औहोवाऔहोवाऔहोऽ३वा॥ सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ६०। प. २१। मा. १७) ४ (पे।१७०)

(९५।१) ॥ प्रजापतेः प्रतिष्ठा साम। प्रजापतिः गायत्र्यग्निः॥

इममूषू॥ त्वमस्मा। काम्। संनिंगायत्रंनव्याꣳसम्॥ आग्नेदेवाइ॥ षुप्राऽ२वोऽ२३४औहोवा॥ चाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. ७। मा. ५) ५ (ठू।१७१)

(१) ॥ व्याहृतिः। प्रजापतिर्यजुरग्निस्त्रिष्टुबग्निः॥

हाउहाउहाउ। एवाहियेवाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। भूतायाऽ२३४५॥ भी॥ १॥

हाउहाउहाउ। एवाहियेवाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। रूपायाऽ२३४५॥ भी॥ २॥

हाउहाउहाउ। एवाहियेवाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। आयुषेऽ२३४५॥ धी॥ ३॥

हाउहाउहाउ। एवाहियेवाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। ज्योतिषेऽ२३४५॥ धी॥ ४॥

(दी. ३८। प. १६। मा. १६) ६ (टू।१७२)

(९६।१) ॥ परमेष्ठिनः प्राजापत्यस्य व्रतम्। परमेष्ठ्यनुष्टुप् परमेष्ठी॥

हाउहाउहाउ। आनोऽ२ब्रुवाइ। (द्विः)। आनोऽ२ब्रुवाऽ२। याऽ२३४औहोवा। रक्षतनोरक्षितारःऽ२३४५ः। हाउहाउहाउ। आनोऽ२ब्रुवाइ। (द्विः)। आनोऽ२ब्रुवाऽ२। याऽ२३४औहोवा। गोपायतगोपाइताराऽ२३४५ः। हाउहाउहाउ। आनोऽ२ब्रुवाइ। (द्विः)। आनोऽ२ब्रुवाऽ२। याऽ२३४औहोवा। मयिवर्चः। अथोयाऽ१शाऽ२ः॥ अथोयज्ञा। स्ययात्पाऽ१याऽ२ः॥ परमेष्ठी। प्रजापाऽ१तीऽ२ः॥ दिविद्यामि। वदृꣳहाऽ१तूऽ२३। हाउहाउहाउ। आनोऽ२ब्रुवाइ। (द्विः)। आनोऽ२ब्रुवाऽ२। याऽ३४औहोवा।

रक्षतनोरक्षिताराऽ२३४५ः। हाउहाउहाउ। आनोऽ२ब्रुवाइ। (द्विः)। आनोऽ२ब्रुवाऽ२।
याऽ२३४औहोवा। गोपायतगोपायिताराऽ२३४५ः। हाउहाउहाउ। आनोऽ२ब्रुवाइ। (द्विः)।
आनोऽ२ब्रुवाऽ२। याऽ२३४औहोवा। ए। रक्षतनोरक्षतारोगोपायतगोपायितारः। (द्वे द्विः)। ए।
रक्षतनोरक्षितारोगोपायतगोपायिताराऽ२३४५ः॥

(दी. ७५। प. ४८। मा. ४७) ७ (बे।१७३)

(१) ॥ परमेष्ठिनः प्राजापत्यस्य व्रतम् (कृष्ण व्रतम्)। अंगिरास्त्रिष्टुप् सोमः॥

सोमासोऽ३मा। (त्रिः)। यत्रचक्षुः। तदाभाऽ१राऽ२॥ यत्रश्रोत्रम्। तदाभाऽ१राऽ२॥ यत्रआयुः।
तदाभाऽ१राऽ२॥ यत्ररूपम्। तदाभाऽ१राऽ२॥ यत्रवर्चः। तदाभाऽ१राऽ२॥ यत्रतेजः।
तदाभाऽ१राऽ२॥ यत्रज्योतिः। तदाभाऽ१राऽ२॥ सोमासोऽ३मा। (द्विः)।
सोमाराऽ३जाऽ३न्। होऽ२हाऽ२३४औहोवा। इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. १३। प. २२। मा. ११) ८ (ठा।१७४)

(९७।१) ॥ सोम व्रतम्। सोमस्त्रिष्टुप्सोमः॥

ओवाऽ२। (त्रिः)। सन्तेपया। सीऽ३समु। यन्तुवाजाः॥ संवृष्णिया। नीऽ३अभि। मातिषाहाः॥
आप्यायमा। नोऽ३अमृ। तायसोमा॥ दिविश्रवा। सीऽ३उत्त। मानिधिष्वा। ओवाऽ२। (द्विः)।
ओऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ प्र्य [त्रिर्गसेत्]॥ ३॥

(दी. १६। प. २३। मा. ५) ९ (गु।१७५)

(९८।१) ॥ सोम व्रतम्। सोमो विराट् सोमः॥

हाउहाउहाउ। हौवाऽ३। (त्रिः)। हाह। हौवाऽ३। (द्वे त्रिः)। होवाऽ३। (त्रिः)।

होऽ३वाऽ३४५। (द्विः)। होऽ३वाऽ३४। औहोवा। त्वमिमाओषधीःसोमविश्वाः॥

त्वमपोअजनयस्त्वंगाः॥ त्वमातनोरुर्वन्तरिक्षम्॥ त्वंज्योतिषावितमोववर्थ। हाउहाउहाउ।

हौवाऽ३। (त्रिः)। हाह। हौवाऽ३। (द्वे त्रिः)। होवाऽ३। (त्रिः)। होऽ३वाऽ३४५। (द्विः)।

होऽ३वाऽ३४। औहोवा॥ ए। जनदिवमन्तरिक्षंपृथिवींविश्वभोजसंपुरुरूपाअजीजनः।

इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. ४०। प. ४१। मा. १४) १० (पी।१७६)

॥ दश प्रथमः खण्डः॥१॥

(९९।१) ॥ भारद्वाजस्य व्रतम्। भारद्वाजस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। वाग्ददद। ददाऽ२या। इन्द्रोराजा। जगतः। चर्षणीनाम्॥ अधिक्षमा। विश्वरू।

पंयदस्या॥ ततोददा। तीऽ३दाशु। षाइवसूनी॥ चोदद्राधाः। उपस्तु। तंचिदर्वाक्।

हाउहाउहाउ। वाग्ददद। ददाऽ२याऽ३। हाउवाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १५। प. २०। मा. १२) ११ (म्रा।१७७)

(१००।१) ॥ भारद्वाजिनां व्रतम्। भरद्वाजोऽनुष्टुप्सोमेन्द्री॥

हाउहाउहाउ। वाजऽ२म्। (द्विः)। वाजम्। एऽ२। वाजऽ२म्। (त्रिः)। वाजम्। एऽ२।

वाजऽ२म्। (त्रिः)। वाजम्। एऽ२। वाजऽ२म्। वाजमोऽ२इ। (द्वे त्रिः)। वाजम्।

विवीऽ२विवि। (त्रिः) विविहोऽ२इविवि। (त्रिः)। व्यश्नवाइवि। (त्रिः)।

अभीनवन्तआऽ२द्रूहाऽ२ः। द्रूहोद्रुहः। (त्रिः)। प्रियमिन्द्रस्काऽ२मायाऽ२म्। मियमियम्।

(त्रिः)। वत्सन्नपूर्वआऽ२यूनीऽ२। युनीयुनि। (त्रिः)। जातꣳरिहन्तिमाऽ२ताराऽ२ः। तरोतरः।
(त्रिः)। हाउहाउहाउ। वाजऽ२म्। (द्विः)। वाजम्। एऽ२। वाजऽ२म्। वाजमोऽ२इ। (द्वे त्रिः)। वाजम्। विवीऽ२विवि। (त्रिः)। विविहोऽ२इविवि। (त्रिः)। व्यश्नवाइवि। (द्विः)।
व्याऽ२३श्नवाउ। वा॥ ए। सुधामधाम। (द्वे द्विः)। ए। सुधामधामाऽ२३४५॥

(दी. ६३। प. ८५। मा. ६८) १२ (णे।१७८)

(१०१।१) ॥ यम व्रते द्वे, (यम व्रतम्)। यमो गायत्र्यग्निः॥

मनोहाउ। वयोहाउ। वर्चोहाउ। अग्निम्। ईडाऽ२इ। पुरोहाऽ३४इताम्॥ इहहाउ।
इडाहाउ। आयुर्हाउ। यज्ञ। स्यदाऽ२इ। वमृतीऽ२३४जाम्॥ स्वर्हाउ। ज्योतिर्हाउ।
ऋतꣳहाउ। होता। रꣳराऽ२३॥ त्वधाऽ३ताऽ५माऽ६५६म्॥ एऽ३। महाऽ२३४५ः॥

(दी. १८। प. २०। मा. १७) १३ (णे।१७९)

(१०२।१) ॥ आङ्गिरसाम् व्रतम्। अङ्गिरसस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। हाऽ३। ओऽ२३४वाक्। (द्वे त्रिः)। ओम्। (त्रिः)। ओम्। (त्रिः)। हाऽ३।
ओऽ२३४वाक्। (द्वे त्रिः)। एआयुः। (त्रिः) आयुः। (त्रिः)। इन्द्रन्नरोनेमधिताहवाऽ२न्ताइ॥
यत्पार्यायुनजतेधियाऽ२स्ताः॥ शूरोनृषाताश्रवसश्चकाऽ२माइ॥ आगोमतिव्रजेभजातुवाऽ२न्नाः।
हाउहाउहाउ। हाऽ३। ओऽ२३४वाक्। (द्वे त्रिः)। ओम्। (त्रिः)। ओम्। (त्रिः)। हाऽ३।
ओऽ२३४वाक्। (द्वे त्रिः)। एआयुः। (त्रिः)। आयुः। (द्विः)। आयूऽ३४। औहोवा॥ ए।
आयुर्द्धाअस्मभ्यंवर्चोधादेवेभ्याऽ२३४५ः॥

(दी. ४७। प. ५७। मा. ५३) १४ (छि।१८०)

(१०३।१) ॥ अश्विनो व्रते द्वे। अश्विनौ बृहत्यश्विनौ॥

होइहाऽ३। इहोहाऽ३। (द्वे त्रिः)। इमाउवांदिविष्टयाओहाउ॥ उस्राहवन्तेअश्विनाओहाउ॥
अयंवामह्वेवसेशचीवासूओहाउ॥ विशंविशꣳहिगच्छथाओहाउ। होइहाऽ३। इहोइहाऽ३। (द्वे
द्विः)। होइहाऽ३। इहोइहाऽ३४। औहोवा॥ ईऽ५हीहीहीहीहि॥

(दी. २८। प. १८। मा. २२) १५ (डा।१८१)

(१०३।२)

होइहा। इहोइहा। (द्वे त्रिः)। इमाउवांदिविष्टयाहोहहाउ॥ उस्राहवन्तेअश्विनाहोहाउ॥
अयंवामह्वेवसेशचीवसूहोहाउ॥ विशंविशꣳहिगच्छथाहोहाउ। होइहा। इहोइहा। (द्वे त्रिः)।
होइहा। इहोइहाऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२। (त्रिः)॥

(दी. १४। प. २०। मा. १८) १६ (नै।१८२)

(१०४।१) ॥ गवां व्रते द्वे। गावस्त्रिष्टुब्गावः॥

हाउहाउहाउ। गावोहाउ। (त्रिः)। वृषभपत्नीर्हाउ। (त्रिः)। वैराजपत्नीर्हाउ। (त्रिः)।
विश्वरूपाहाउ। (त्रिः)। अस्मासुरमध्वꣳहाउ। (त्रिः)। तेमन्वतप्रथमन्नामगोऽ२नाम्॥
त्रिःसप्तपरमन्नामजाऽ२नान्॥ ताजानतीरभ्यनूषताऽ२क्षाः॥ आविर्भुवन्नरुणीर्यशसागाऽ२वाः।
हाउहाउहाउ। गावोहाउ। (त्रिः)। वृषभपत्नीर्हाउ। (त्रिः)। वैराजपत्नीर्हाउ। (त्रिः)।
विश्वरूपाहाउ। (त्रिः)। अस्मासुरमध्वꣳहाउ। (द्विः)। अस्मासुरमध्वाऽ३ꣳहाउ। वा॥ ए।
गावोवृषभपत्नीर्वैराजपत्नीर्विश्वरूपाअस्मासुरमध्वाऽ२३४५म्॥

(दी. १२९। प. ४३। मा. ४६) १७ (दू।१८३)

(१०५।१)

हाउहाउहाउवा। अग्निमीडेपुरोहितम्। देवेषुनिधिमा२अहम्॥ हाउ(३)वा।

यज्ञस्यदेवमृत्विजम्। देवेषुनिधिमा२अहम्। हाउ(३)वा। होतार२रत्नधातमम्।

देवेषुनिधिमा२अहम्॥ हाउ(३)वा॥ ए। देवेषुनिधिमा२अहम्॥ (द्वे त्रिः)॥

(दी. २८। प. १६। मा. २७) १८ (टे।१८४)

(१०६।१) ॥ कश्यपस्य (सु)व्रते द्वे। कश्यपोऽनुष्टुप्सोमः॥

हाउहाउहाउ। प्सुवन्तरा। (त्रिः)। कोज्योतिः। अर्कोज्योतिः। अर्कोज्योतिः। सुवर्द्धेनः। (त्रिः)।

कश्यपस्यसुऽ३वार्वाऽ१इदाऽ२ः॥ यावाहुस्सयुऽ३जावाऽ१इतीऽ२॥

ययोर्विश्वमऽ३पाइव्राऽ१ताऽ२म्॥ यज्ञन्धीरानिऽ३चाआऽ१याऽ२३। हाउहाउहाउ। प्सुवन्तरा।

(त्रिः)। कोज्योतिः। अर्कोज्योतिः। अर्कोज्योतिः। सुवर्द्धेनूः। (द्विः)। सुवर्द्धेनुः। औहोवाहाउ।

वाऽ३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. ३७। प. २७। मा. २६) १९ (छू।१८५)

(१०६।२)

हाउहाउहाउ। ऊऽ२। (त्रिः)। कह्वाऽ२उ। (त्रिः)। कश्यपस्यसुवाऽ२३र्विदाः॥

यावाहुस्सयुऽ३जावाऽ१इतीऽ२॥ ययोर्विश्वमपाऽ२३इव्रताम्॥ यज्ञंधीरानिऽ३चाआऽ१याऽ२३।

हाउहाउहाउ। ऊऽ२। (त्रिः)। कह्वाऽ२उ। (द्विः)। कह्वाऽ२३उ। ह्वाउवाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. २०। मा. १८) २० (ड्रै।१८६)

॥ दश द्वितीयः खण्डः॥२॥

॥ इति (ग्रामे) आरण्यकगाने चतुर्थस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(१०७।१)   ॥ अङ्गिरसां व्रते द्वे। अङ्गिरसस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। इन्द्राऽ३१२३म्। हाउहाउहाउ। नरोनेमधिताहवान्ताइ। हवान्ताइ।
हवान्ताऽ३इ। ओइ। हवन्ताइ। वन्ता। औहोवा। एहिया॥ हाउहाउहाउ। यत्पाऽ३१२३।
हाउहाउहाउ। र्यायुनजतेधियास्ताः। धियास्ताः। धियास्ताऽ३ः। ओइ। धियस्ताः। यस्ता।
औहोवा। एहिया॥ हाउहाउहाउ। शूरोऽ३१२३। हाउहाउहाउ। नृषाताश्रवश्चकामाइ।
चकामाइ। चकामाऽ३इ। ओइ। चकामाइ। कामा। औहोवा। एहिया॥ हाउहाउहाउ।
आगोऽ३१२३। हाउहाउहाउ। मतिव्रजेभजातुवान्नः। तुवान्नः। तुवान्नाऽ३ः। ओइ। तुवन्नाः।
वन्ना। औहोवा। एहिया। हाउहाउहाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ५३। प. ४७। मा. ४८) १ (द्वै।१८७)

(१०८।१)

हाउहाउहाउ। हाहाउ। (त्रिः)। इहाहाउ। (त्रिः)। इयाहाउ। (द्विः)। इयाऽ३हाउ। वा।
अभित्वाशूरनोनुमोहस्॥ अदुग्धाइवाधेनवोहस्। ईशानमस्यजगतःस्वर्दृशश्हस्।
ईशानमिन्द्रतस्थुषोहस्॥ सहस्वान्त्सहसस्पतिरदिद्यवद्धस्॥ स्वर्जिद्वाजसातमोदिद्यवद्धस्।
हाउहाउहाउ। हाहाउ। (त्रिः)। इहाहाउ। (त्रिः)। इयाहाउ। (द्विः)। इयाऽ३हाउ। वा॥
इडाहस्स्थिहस्स्थिइडा॥ (त्रिः)॥

(दी. २८। प. ३१। मा. ३७) २ (टे।१८८)

(१०९।१)   ॥ अपां व्रते द्वे। आपो विराडिन्द्र आपस्त्रिष्टुबापः॥

हाउहाउहाउ। ऐरयत्। (त्रिः)। अपःसमैरयत्। (त्रिः)। भूतमैरयत्। (त्रिः)। अपाङ्गर्भोग्निरिडा।

पांगर्भोग्निरिडा। पांगर्भोग्निरिडा। पृथिव्यागर्भोग्निरिडा। (त्रिः)। समन्यायन्त्युपयन्तियाऽ२३न्याः॥

समानमूर्वंनद्यस्पृणाऽ२३०ती॥ तमूशुचिᳵशुचयोदीदिवाऽ२३ᳵसाम्॥

अपान्नपातमुपयन्तियाऽ२३पाऽ३ः। हाउहाउहाउ। ऐरयत्। (त्रिः)। अपःसमैरयत्। (त्रिः)।

भूतमैरयत्। (त्रिः)। अपांगर्भोग्निरिडा। पांगर्भोग्निरिडा। (द्विः)। पृथिव्यागर्भोग्निरिडा। (द्विः)।

पृथिव्यागर्भोग्निरिडाऽ३। हाउवा॥ ए। अग्निःशिशुक्कः। ए। शुक्रःशिशुक्कः। ए।

तेजःशक्रस्यशक्कम्। ए। तेजःसप्राःसमीचीः। ए। तेजउषोनजारः। ए। सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ८८। प. ४९। मा. ३५) ३ (ढु।१८९)

(१०९।२)

हाउहाउहाउ। ऐरयन्। (त्रिः)। समैरयत्। (त्रिः)। समस्वरन्। (त्रिः)।

समन्यायन्त्युपयन्तियाऽ२३न्याः॥ समानमूर्वंनद्यस्पृणाऽ२३न्ती॥

तमूशुचिᳵशुचयोदीदिवाऽ२३ᳵसाम्॥ अपान्नपातमुपयन्तियाऽ२३पाऽ३ः। हाउहाउहाउ।

ऐरयन्। (त्रिः)। समैरयन्। (त्रिः)। समस्वरन्। (द्विः)। समस्वराऽ३न्। हाउवाऽ३॥

ईऽ२३४५॥

(दी. २६। प. २६। मा. २८) ४ (क्रे।१९०)

(११०।१) ॥ अहोरात्त्रयोर्व्रते द्वे, (अहर्व्रतम्)। अहर्गात्रीसूर्यः॥

हाउ(३)वा। प्रागन्यदनुवर्ततेरजोपागन्यत्तमोपेषतिभ्यसा। हाउहाउहाउ।

उदुत्यञ्ञातऽ३वाइदाऽ१साऽ२३म्॥ हाउहाउहाउ।

प्रागन्यदनुवर्ततेरजोपागन्यत्तमोपेषतिभ्यसा। हाउहाउहाउ। देवंवहन्तिऽ३काइताऽ१वाऽ२३ः॥

हाउहाउहाउ। प्रागन्यदनुवर्ततेरजोपागन्यत्तमोपेषतिभ्यसा। हाउहाउहाउ।

दृशेविश्वायऽ३सूराऽ१याऽ२३म्॥ हाउहाउहाउ॥ ए।

अरूरुचद्धर्मोअरूरुचदुषसांदिविसूर्योविभातीऽ२३४५॥

(दी. ४२। प. १५। मा. २७) ५ (ञे।१९१)

(१११।१) ॥ रात्रेर्व्रतम्। रात्र्यनुष्टुप्रात्रिः॥

होऽ२इ। (त्रिः)। आप्रागाद्भद्रायुवतिः॥ होऽ२इ। (त्रिः)। अह्नःकेतून्त्समीर्त्सति॥ होऽ२इ।

(त्रिः)। अभूद्भद्रानिवेशनी॥ होऽ२इ। (त्रिः)। विश्वस्यजगतोरात्री। होऽ२इ। (त्रिः)। होऽ२।

वाऽ३। हाउवाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १४। प. २२। मा. १६) ६ (थू।१९२)

(११२।१) ॥ विष्णोर्व्रतम्। विष्णुर्जगती वैश्वानरः॥

हाउहाउहाउ। ऊऽ२। (द्विः)। ऊऽ२। वाऽ३। हाउवाऽ३। हस्स्थिहहस्।

अर्चिःशोचिस्तपोहरः। प्रक्षस्यवृष्णोअरुषस्यनूमाऽ२३हाः॥ प्रनोवचोविदथाजातवेदाऽ२३साइ॥

वैश्वानरायमतिर्नव्यसेशूऽ२३चीः॥ सोमइवपवतेचारुरग्नाऽ२३याऽ३इ। हाउहाउहाउ। ऊऽ२।

(द्विः)। ऊऽ२। वाऽ३। हाउवाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. २२। प. १९। मा. १७) ७ (झो।१९३)

(११३।१) ॥ विश्वेषां देवानां (वैश्वदेव) व्रतम्। विश्वेदेवाद्यावापृथिव्यौ (इन्द्र) बृहतीजगती विश्वेदेवाः॥

हाउहाउहाउ। आइही। (त्रिः)। आइहीऽ२। (त्रिः)। आइहीहाऽ२इ। (द्विः)। आइहिहाइ।

विश्वेदेवाममश्रृण्वन्तुयाऽ२३ज्ञाम्॥ उभेरोदसीअपान्नपाच्चमाऽ२३न्मा॥

मावोवचा(म्सिपरिचक्ष्याणिवोऽ२३चाऽ३म्॥ हाउहाउहाउ। आइही। (त्रिः)। आइहीऽ२।

(त्रिः)। आइहिहाऽ२इ। (द्विः)। आइहिहाइ। सुम्नेष्विद्वोअन्तमामदाऽ२इमाउवाऽ३॥

ईऽ२३४५॥

(दी. २१। प. २५। मा. ३६) ५ (डू।१९४)

(११४।१) ॥ वसिष्ठ व्रते द्वे। द्वयोर्वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। ऊऽ२। (त्रिः)। षि। (त्रिः)। इयाहाउ। (त्रिः)। उदुब्रह्मा। णीऽ३ऐर। तश्रवस्या॥

इन्द्र२समा। र्येऽ३मह। यावसिष्ठा॥ आयोविश्वा। नीऽ३श्रव। सातताना॥ उपश्रोता॥ मईव।

तोवचा२सी। हाउहाउहाउ। ऊऽ२। (त्रिः)। षि। (त्रिः)। इयाहाउ। (द्विः)। इयाऽ३हाउ।

वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १६। प. ३४। मा. १४) ९ (ग्री।१९५)

(११४।२)

हाउहाउहाउ। ऊऽ२। (त्रिः)। षि। (त्रिः)। इयो। (त्रिः)। इयोवा। (त्रिः)। इयोवाहाइ। (त्रिः)।

उदुऽ२। (द्विः)। उदु। उदोवा। (त्रिः)। उदोवाहाइ। (त्रिः) ब्रह्मा। णीऽ३ऐर। तश्रवस्या। स्या।

स्या। स्योवा। (त्रिः)। स्योवाहाइ। (त्रिः)॥ इन्द्रऽ२म्। (द्विः)। इन्द्रम्। इन्द्रोवा। (त्रिः)।

इन्द्रोवाहाइ। (त्रिः)। समा। र्येऽ३मह। यावसिष्ठा। ष्ठा। ष्ठा। ष्ठोवा। (त्रिः)। ष्ठोवाहाइ।

(त्रिः)॥ आयोऽ२। (द्विः)। आयः। आयोवा। (त्रिः)। आयोवाहाइ। (त्रिः)। विश्वा। नीऽ३श्रव।

सातताना। ना। ना। नोवा। (त्रिः)। नोवाहाइ। (त्रिः)॥ उपऽ२। (द्विः)। उप। उपोवा।

(त्रिः)। उपोवाहाइ। (त्रिः)। श्रोता। मईव। तोवचा२सी। सी। सी। सोवा। (त्रिः)।

सोवाहाइ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। ऊऽ२। (त्रिः)। षि। (त्रिः)। इयो। (त्रिः)। इयोवा। (त्रिः)।

इयोवाहाइ। (द्विः)। इयोवाऽ३हाउ। वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १५६। प. ११४। मा. ४२) १० (घ्रा।१९६)

॥ दश तृतीयः खण्डः॥३॥

(११५।१) ॥ इन्द्रस्य सञ्जयम्। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउहाउहाउ। विश्वाधनानिसंजित्यवृत्रहाभूर्यासुतिः। होइ। (द्वे त्रिः)। उरुंघोषंचक्रेलोकम्।

होइ। (द्वे त्रिः)। वृत्रमेभ्योलोकेभ्योनुनुदानः। होइ। (द्वे त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि।

ताहवन्ताइ॥ यत्पारियाः। युनजा। ताइधियस्ताः॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्चकामाइ॥

आगोमताइ। व्रजेम। जातुवन्नाः। हाउ(३)। विश्वाधनानिसंजित्यवृत्रहाभूर्यासुतिः। होइ। (द्वे

त्रिः)। उरुंघोषंचक्रेलोकम्। होइ। (द्वे त्रिः)। वृत्रमेभ्योलोकेभ्योनुनुदानः। होइ। (द्वे द्विः)।

वृत्रमेभ्योलोकेभ्योनुनुदानः। होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ए। वृत्रंजघन्वा२अपतद्ववारयत्तमः।

(द्वे द्विः)। ए। वृत्रंजघन्वा२अपतद्ववारयत्तमाऽ२३४५ः॥

(दी. ११०। प. ५७। मा. ५५) ११ (फु।१९७)

(११६।१) ॥ यशस्साम। अगस्त्ययशः ज्योतिष्मतीजगतीद्यावापृथिव्यौ॥

हाउहाउहाउवा। यशोमाद्यावापृथिवी॥ हाउ(३)वा। यशोमेन्द्रबृहस्पती॥ हाउ(३)वा।
यशोभगस्यविन्दतु॥ हाउ(३)वा। यशोमाप्रतिमुच्यताम्॥ हाउ(३)वा। यशःस्वियस्यास्स२सदः॥
हाउ(३)वा। अहंप्रवदितास्याम्। हाउ(३)वा॥ अश्वमिष्टयेऽ३हंस्॥

(दी. १५। प. १४। मा. २५) १२ (भु।१९८)

(१९७।१)   ॥ प्रजापतेस्त्रयस्त्रिंशत् सम्मितम्। प्रजापतिर्विराडिन्द्रः॥

एऽ३१। (चतुः)। प्रवोमहाइ। महेवृधाइभराऽ२३४ध्वाम्। क्षौ। (चतुः)॥ एऽ३१। (चतुः)।
प्रचेतसाइ। प्रसुमताङ्कृणूऽ२३४ध्वाम्। क्षौ। (चतुः)॥ एऽ३१। (चतुः)। विशःपूर्वाइ।
प्रचर्षणाऽ२३४इप्राः। क्षौ। (चतुः)॥ एऽ३१। (दिः)। एऽ३१२। आऽ२३४। औहोवा॥ ए।
व्रतमेसुवरेशकुनः॥

(दी. ९। प. ३७। मा. ११) १३ (थ।१९९)

(११८।१)   ॥ प्रजापतेश्चतुस्त्रिंशत् सम्मितम्। प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

एऽ२। (पञ्चकृत्वः)। योवा। (पञ्चकृत्वः)। योवाहाइ। (पञ्चकृत्वः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि।
ताहवन्ताइ। एऽ२। (पञ्चकृत्वः)। योवा। (पञ्चकृत्वः)। योवाहाइ। (चतुः)। योवाऽ३हाउ। वा।
क्षौ। (त्रिः)॥ एऽ२। (पञ्चकृत्वः)। योवा। (पञ्चकृत्वः)। योवाहाइ। (पञ्चकृत्वः)। यत्पारियाः।
युनज। ताइधियस्ताः। एऽ२। (पञ्चकृत्वः)। योवा। (पञ्चकृत्वः)। योवाहाइ। (चतुः)।
योवाऽ३हाउ। वा। क्षौ। (त्रिः)॥ एऽ२। (पञ्चकृत्वः)। योवा (पञ्चकृत्वः) योवाहाइ। (पञ्चकृत्वः)।
शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्चकामाइ। एऽ२। (पञ्चकृत्वाः)। योवा। (पञ्चकृत्वः)। योवाहाइ।
(चतुः)। योवाऽ३हाउ। वा। क्षौ। (त्रिः)॥ एऽ२। (पञ्चकृत्वः)। योवा। (पञ्चकृत्वः)। योवाहाइ।

(पञ्चकृत्वः)। आगोमताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। एऽ२। (पञ्चकृत्वः)। योवा। (पञ्चकृत्वः)।
योवाहाइ। (चतुः)। योवाऽ३हाउ। वा॥ ए। व्रतमेसुवरेशकुनः॥

(दी. २०४। प. १४७। मा. ४८) १४ (थै।२००)

(११९।१) ॥ जमदग्नेर्व्रतम्। जमदग्निर्बृहतीन्द्रः॥

हाउ(३)। हहाउ। (त्रिः)। हहहाउ। (त्रिः)। कपाऽ२३उ। (त्रिः)। हाऽ३ओऽ२३। (द्विः)।
हाऽ३१उवाऽ२। अभित्वाशूरनोऽ३। आउ। वाऽ२३। नूऽ२३४माः। ईडा। (त्रिः)।
ज्योतिष्पतस्स्वःपतान्तरिक्षंपृथिवींपञ्चप्रदिशऋषीन्देवान्वर्णम्॥ अदुग्धाइवधाऽ३१उवाऽ२३इ।
नाऽ२३४वाः। ईडा। (त्रिः)। ज्योतिष्पतस्स्वःपतान्तरिक्षंपृथिवींपञ्चप्रदिशऋषीन्देवान्वर्णम्॥
ईशानमस्यजगतस्सुवाऽ३१उवाऽ२३। दृऽ२३४शाम्। ईडा। (त्रिः)।
ज्योतिष्पतस्स्वःपतान्तरिक्षंपृथिवींपञ्चप्रदिशऋषीन्देवान्वर्णम्॥ हाउ(३)। हहाउ। (त्रिः)।
हहहाउ। (त्रिः)। कपाऽ२३उ। (त्रिः)। हाऽ३ओऽ२३। (द्विः)। हाऽ३१उवाऽ२॥ ए।।
व्रतमेसुवरेशकुनः॥

(दी. ६४। प. ५४। मा. ४९) १५ (धो।२०१)

(१२०।१) ॥ युगञ्च दशस्तोभम्। जमदग्निस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउ(३)। ओहा। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)। ऊऽ२। (त्रिः)। ओऽ२। (त्रिः)। हाउवाक्। (त्रिः)।
आयुर्यन्। (त्रिः)। एआयुः। (त्रिः)। आयुः। (त्रिः)। वयाः। (द्विः)। वयः।
इन्द्रन्नरोनेमधिताहवाऽ२न्ताइ॥ यत्पार्यायुनजतेधियाऽ२स्ताः॥ शूरोनृषाताश्रवसश्चकाऽ२माइ॥
आगोमतिव्रजेभजातुवाऽ२न्नाः। हाउ(३)। ओहा। (त्रिः)। हाओवा। (त्रिः)। ऊऽ२। (त्रिः)।

ओऽ२। (त्रिः)। हाउवाक्। (त्रिः)। आयुर्यन्। (त्रिः)। एआयुः। (त्रिः)। आयुः। (त्रिः)। वयाः।
(द्विः)। वाऽ२। याऽ२३४। औहोवा॥ ए। आयुर्द्धाअस्मभ्यंवर्चोधादेवेभ्याऽ२३४५ः॥

(दी. १५४। प. ६४। मा. ५१) १६ (भो।२०२)

(१२१।१) ॥ वार्त्रघ्नम्। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

वृत्रहत्याहोइ। (त्रिः)। अधृष्णवेहोइ। (त्रिः)। अपूरवेहोइ। (द्विः)। अपुरावाऽ२इ।
पृथिवीश्चाहोइ। (त्रिः)। विवर्त्तयाहोइ। (द्विः)। विवर्त्तायाऽ२। अन्तरिक्षꣳहोइ। (त्रिः)।
सुधारयाहोइ। (द्विः)। सुधारायाऽ२। दिवंवेपाहोइ। (त्रिः)। अवेपहोइ। (द्विः)। अवेपायाऽ२ः।
होइ। (द्विः)। हुवेऽ२। हाऽ३१उवाऽ२। इन्द्रऽ२। (द्विः)। इन्द्र। स्यनू। (द्विः)। स्यनूऽ३।
आउ। वाऽ२। वीर्याणि। प्रवा। (द्विः)। प्रवाऽ३१उ। वाऽ२३। चाऽ२३४५म्॥ योनिऽ२।
(द्विः)। योनि। चका। (द्विः)। चकाऽ३१उ। वाऽ२। रप्रथमा। निवा। (द्विः)। निवाऽ३१उ।
वाऽ२३। ज्रीऽ२३४५॥ अहऽ२न्। (द्विः)। अहन्। अहाइम्। (द्विः)। अहाऽ३१उ। वाऽ२।
अन्वपः। तता। (द्विः)। तताऽ३१उ। वाऽ२३। दाऽ२३४५॥ प्रवऽ२। (द्विः)। प्रव। क्षणाः।
(द्विः)। क्षणाऽ३१उ। वाऽ२। अभिनत्पा। र्वता। र्वताऽ३१उ। वाऽ२३। नाऽ२३४५म्।
वृत्रहत्यायहोइ। (त्रिः)। अधृष्णवेहोइ। (त्रिः)। अपूरवेहोइ। (द्विः)। अपूरावाऽ२इ।
पृथिवीश्चाहोइ। (त्रिः)। विवर्त्तयाहोइ। (द्विः)। विवर्त्तायाऽ२। अन्तरिक्षꣳहोइ। (त्रिः)।
सुधारयाहोइ। (द्विः)। सुधारायाऽ२। दिवंवेपाहोइ। (त्रिः)। अवेपहोइ। (द्विः)। अवेपायाऽ२ः।
होइ। (द्विः)। हुवेऽ२। हाऽ३१उवाऽ२॥ ए। वृत्रहासपत्नहा। (द्वे त्रिः)॥

(दी. ८५। प. १२१। मा. ७६) १७ (पू।२०३)

(१२२।१)   ॥ प्रजापतेश्चाष्टनिधनम्। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

अभिप्रघ्ना। तमोजसा। तमोजासाऽ२। (त्रीणि त्रिः)। तमोजसा। सुवोजासाऽ२। (द्वे द्विः)।
तमोजसा। सुवो। जाऽ२। साऽ२३४। औहोवा। असिप्राणएअसि। (त्रिः)। एअसि। (त्रिः)।
सत्यमित्थावृषाऽ२इदाऽ२३४सी। एअसि। (द्विः)। ए। आऽ२। साऽ२३४। औहोवा।
इडाङ्गच्छसूर्यङ्गच्छे। डाङ्गच्छसूर्यङ्गच्छे। डाङ्गच्छसूर्यङ्गच्छ॥ अभिप्रघ्ना। तमोजसा।
तमोजासाऽ२। (त्रीणि त्रिः)। तमोजसा। सुवोजसाऽ२। (द्वे द्विः)। तमोजसा। सुवो।
जाऽ२। साऽ२३४। औहोवा। असिचक्षुरेअसि। (त्रिः)। एअसि। (त्रिः)।
वृषजूतिर्नोऽवाऽ२३४इता। एविता।। (द्विः)। ए। वाऽ२इ। ताऽ२३४। औहोवा।
अन्तरिक्षंगच्छनाकेविभाहि। (त्रिः)॥ अभिप्रघ्ना। तमोजसा। तमोजासाऽ२। (त्रीणि त्रिः)।
तमोजसा। सुवोजासाऽ२। (द्वे द्विः)। तमोजसा। सुवो। जाऽ२। साऽ२३४। औहोवा।
असिश्रोत्रमेअसि। (त्रिः)। एअसि। (त्रिः)। वृषाह्युग्रशृण्विषेपराऽ२वाऽ२३४ती। एवति। (द्विः)।
ए। वाऽ२। ताऽ२३४। औहोवा। स्वर्गच्छज्योतिर्गच्छ। (त्रिः)॥ अभिप्रघ्ना। तमोजसा।
तमोजासाऽ२। (त्रीणि त्रिः)। तमोजसा। सुवोजासाऽ२। (द्वे द्विः)। तमोजसा। सुवो।
जाऽ२। साऽ२३४। औहोवा। असिज्योतिरेअसि। (त्रिः)। एअसि। (त्रिः)।
वृषोअर्वावताऽ२इश्रूऽ२३४ताः। एश्रुतः। (द्विः)। ए। श्रूऽ२। ताऽ२३४। औहोवा॥
अतिज्योतिर्विभाह्येअति। (द्विः)। अतिज्योतिर्विभाह्येअतीऽ२३४५॥

(दी. १४६। प. १३६। मा. ४०) १८ (कौ।२०४)

(१२३।१) ॥ इन्द्रस्य राजनम् रोहिणे द्वे, (राजनम्)। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हिम्। (त्रिः)। हो। (त्रिः)। हꣳ। (त्रिः)। ओहा। (त्रिः)। औहोइ। (त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि।

ताहवन्ताइ। (त्रीणि त्रिः)। वयोबृहत्। (त्रिः)। विभ्राष्टयेविधर्मणे। (त्रिः)॥ यत्पारियाः। युनज।

ताइधियस्ताः। (त्रीणि त्रिः)। सत्यमोजः। (त्रिः)। रजस्सुवः। (त्रिः)॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव।

सश्वकामाइ। (त्रीणि त्रिः)। भद्रꣳसुधा। (द्विः)। भद्रꣳसुधे। षमूर्जम्। इषमूर्जम्। (द्विः)॥

आगोमताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। (त्रीणि त्रिः)। बृहद्द्युशः। (त्रिः)। दिविदधेऽ३हस्। (द्विः)।

दिविदधेऽ३। हाउवा॥ वागीडासूवोबृहद्भाऽ२३४५ः॥

(दी. ६६। प. ७७। मा. ४६) १९ (खू।२०५)

(१२३।२) ॥ रौहिणम्। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउ(३)। आइही। (त्रिः)। आइहीया। (त्रिः)। आसाउ। (त्रिः)। आयाम्। (त्रिः)। नामाः।

(त्रिः)। किट्। (द्विः)। इन्द्रन्नरोनेमधिताहवाऽ२न्ताइ॥ यत्पार्यायुनजतेधियाऽ२स्ताः॥

शूरोनृषाताश्रवसश्वकाऽ२माइ॥ आगोमतिव्रजेभजातुवाऽ२न्नाः। मनाऽ२३होइ।

प्राणाऽ२३होइ। चक्षूऽ२३होइ। श्रोत्राऽ२३ꣳहोइ। घोषाऽ२३होइ। व्रताऽ२३ꣳहोइ।

भूताऽ२३होइ। पानाऽ२३ꣳहोइ। चित्ताऽ२३ꣳहोइ। धीताऽ२३ꣳहोइ। सुवाऽ२३होइ।

ज्योताऽ२३इहोऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. २६। प. ३६। मा. ३७) २० (कें।२०६)

॥ दश चतुर्थः खण्डः॥४॥

॥ इति (ग्रामे) आरण्यकगाने चतुर्थः प्रपाठकः॥४॥

(१) ॥ अग्नेरिलांदं पश्चानुगानम्, इरान्नं वा। अग्नयनुष्टुवात्मा॥

हाउ(३)। ऊऽ२। (त्रिः)॥ हुऊऽ२। (त्रिः)॥ इयाहाउ। (द्विः)। इयाऽ३हाउ। वाऽ३॥

इट्स्थिइडा२३४५॥

(दी. ३। प. १२। मा. १०) १ (ठौ।२०७)

(१२४।१)॥ अग्नेरिलांदं पश्चानुगानम्। अग्निस्त्रिष्टुबात्मा (अग्निःवा)। (तत्र द्वितीयमिदम्)॥

हाउ(३)वा। अग्निरस्मिजन्मनाजातवेदाः। इडा। सुवः। इडा॥ हाउ(३)वा।

घृतंमेचक्षुरमृतंमआसन्। इडा। सुवः। इडा॥ हाउ(३)वा। त्रिधातुरर्क्कोरजसोविमानः। इडा।

सुवः। इडा॥ हाउ(३)वा। अजस्रंज्योतिर्हविरस्मिसर्वम्। इडा। सुवः। इडा॥

(दी. १९। प. २०। मा. २१) २ (न।२०८)

(१२५।१) ॥ अग्नेरिलांदं पश्चानुगानम्। अग्निस्त्रिष्टुबग्निः (तत्र तृतीयमिदम्)॥

हाउ(३)। पात्यग्निविपोअग्रंपदंवेः। हाऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४वाः। इह। हाऽ३१उवाऽ२३।

ज्योऽ२३४तीः॥ हाउ(३)। पातियह्वश्चरणंसूरियास्या। हाऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४वाः। इह।

हाऽ३१उवाऽ२३। ज्योऽ२३४तीः॥ हाउ(३)। पातिनाभासप्तशीर्षाणमाग्निः। हाऽ३१उवाऽ२३।

सूऽ२३४वाः। इह। हाऽ३१उवाऽ२३। ज्योऽ२३४तीः॥ हाउ(३)। पातिदेवानामुपमादमार्ष्वः।

हाऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४वाः। इह। हाऽ३१उवाऽ२३। ज्योऽ२३४तीः॥

(दी. २८। प. २८। मा. ३२) ३ (डा।२०९)

(१२६।१) ॥ अग्नेरिलांदं पश्चानुगानम्। (तत्रचतुर्थमिदम्)॥

इयाऽ२। (त्रिः)। इयाहाउ। (त्रिः)। इन्द्रन्नरो। नेऽ३मधि। ताहवन्ताइ। हवन्तेऽ३।

हꣳहꣳहꣳहꣳहꣳ। (द्वे त्रिः)॥ हवन्ते। (त्रिः)॥ यत्पारियाः। युनज। ताइधियस्ताः। धियस्ताऽ३।

हꣳहꣳहꣳहꣳहꣳ। (द्वे त्रिः)। धियस्ताः। (त्रिः)॥ शूरोनृषा। ताऽ३श्रव। सश्चकामाइ।

चकामेऽ३। हꣳहꣳहꣳहꣳहꣳ। (द्वे त्रिः)। चकामे। (त्रिः)॥ आगोमताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः।

तुवन्नाऽ३ः। हꣳहꣳहꣳहꣳहꣳ। (द्वे त्रिः)। तुवन्नः। (त्रिः)। इयाऽ२। (त्रिः)। इयाहाउ। (द्विः)।

इयाऽ३हाउ। वा॥ ए। व्रतमेसुवरेशकुनः॥

(दी. ५१। प. ६३। मा. २६) ४ (गू।२१०)

(१२७।१) ॥ अग्निः पंक्तिरिन्द्रः॥

भ्राजोऔहोहोहाइ। त्यग्नेसमिधानादीऽ१दिवाऽ२ः॥ जिह्वाऔहोहोहाइ।

चरत्यंताराऽ१सानीऽ२॥ सन्नाऔहोहोहाइ। नोअग्नेपयसावसूऽ३वीत्॥ रयिंवर्चोदृशौहोऽ३।

हिंमाऽ२। दा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १३। प. १२। मा. १०) ५ (ठौ।२११)

(१)॥ देवव्रतानि त्रीणि (रौद्रे पूर्वे, वैश्वदेवं तृतीयम्, वैश्वदेवे वा पूर्वे, रौद्रं तृतीयम्)। द्वयो

रुद्रोऽनुष्टुप् रुद्रः। तृतीयस्य विश्वेदेवा अनुष्टुबिन्द्रः रुद्रः॥

अधिप। ताइ। मित्रप। ताइ। क्षत्रप। ताइ। स्वःपताइ। धनपताऽ२इ। नाऽ२माः॥

मन्युनावृत्रहासूर्येणस्वराड्यज्ञेनमघवादक्षिणास्यप्रियातनूराज्ञाविशंदाधार।

वृषभस्त्वष्टावृत्रेणशचीपतिरन्नेनगयःपृथिव्यासृणिकोग्निनाविश्वंभूतम।

भ्यभवोवायुनाविश्वाःप्रजाअभ्यपवथावषट्कारेणार्द्धभाक्सोमेनसोमपाःसमित्यापरमेष्ठी।

येदेवादेवाः। दिविषदः। स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनमः। येदेवादेवाः। अन्तरिक्षसदः।

स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनमः। येदेवादेवाः। पृथिवीषदः। स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनमः।

येदेवादेवाः। अप्सुषदः। स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनमः। येदेवादेवाः। दिक्षुसदः।

स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनमः। येदेवादेवाः। आशासदः। स्थतेभ्योवोदेवादेवेभ्योनमः।

अवज्यामिवधन्वनोवितेमन्युंनयामसिमृडतान्नइह॥ अस्मभ्यम्। इडाऽ२३भा॥

यइदंविश्वंभूतम्। युयोऽ३आउ। वाऽ२३॥ नाऽ२३४माः॥

(दी. १२६। प. ३७। मा. ३२) ६ (खा।२१२)

(२)

अधिप। ताइ। मित्रप। ताइ। क्षत्रप। ताइ। स्वःपताइ। धनपताऽ२इ। नाऽ२माः॥

नमउत्ततिभ्यश्चोत्तन्वानेभ्यश्चनमोनीषंगिभ्यश्चोपवीतिभ्यश्चनमोस्यद्भ्यश्चप्र।

तिदधानेभ्यश्चनमःप्रविध्यद्भ्यश्चप्रव्याधिभ्यश्चनमःत्सरद्भ्यश्चत्सारिभ्यश्चनमःश्रि।

तेभ्यश्चश्राइभ्यश्चनमस्तिष्ठद्भ्यश्चोपतिष्ठद्भ्यश्चनमोयतेचवियतेचनमःपथेचविपथायच।

अवज्यामिवधन्वनावितेमन्युन्नयामसिमृडतान्नइह॥ अस्मभ्यम्। इडाऽ२३भा॥

यइदंविश्वंभूतम्। युयोऽ३आउ। वाऽ२३॥ नाऽ२३४माः॥

(दी. २६। प. १९। मा. १५) ७ (घु।२१३)

(३)

अधिप। ताइ। मित्रप। ताइ। क्षत्रप। ताइ। स्वःपताइ। धनपताऽ२इ। नाऽ२माः।

नमोन्नायनमोन्नपतयएकाक्षायचावपन्नादायचनमोनमः।

रुद्रायतीरसदेनमःस्थिरायस्थिरधन्वनेनमःप्रतिपदायचपटरिणेचनमस्त्रियंबकायचक।

पर्दिनेचनमआश्रायेभ्यश्चप्रत्याश्रायेभ्यश्चनमःक्रव्येभ्यश्चविरिम्फेभ्यश्चनमःसंवृतेचविवृतेच।

अवज्यामिवधन्वनोवितेमन्युन्नयामसिमृडतान्नइह॥ अस्मभ्यम्। इडाऽ२३भा॥

यइदंविश्वंभूतम्। युयोऽ३आउ। वाऽ२३॥ नाऽ२३४माः॥

(दी. ३५। प. १९। मा. १६) ८ (भू।२१४)

(१२८।१) ॥ ऋतुष्ठायज्ञायज्ञीयम्। प्रजापतिर्बृहत्यृतवः॥

वाऽ५सन्तः। ईऽ३न्नूऽ३रन्तायाः॥ ग्रीष्मइन्नुराऽ१न्तीऽ३याः। वर्षाण्यनुश्राऽ३। हिम्॥ राऽ३दाः॥

हेमन्तश्शिशिरइन्नुराऽ२न्तियाउ॥ वाऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ८। मा. ८) ९ (डै।२१५)

(१२९।१) ॥ अजितस्य जितिस्साम। अजितो बृहतीन्द्रः प्रजापतिर्बृहतीन्द्रेशानौ॥

हाउ(३)। हुप्। (त्रिः)। बिबिबिबीऽ३। (त्रिः)। हीऽ२। (त्रिः)। हाउ(३)वा।

अभित्वाशूरनोनुमोहस्॥ अदुग्धाइवधेनवोहस्॥ ईशानमस्यजगतःस्वर्दृशꣳहस्॥

ईशानमिन्द्रतस्थुषोहस्। हाउ(३)। हुप्। (त्रिः)। बिबिबिबीऽ३। (त्रिः)। हीऽ२। (त्रिः)।

हाउ(३)वा॥ एअस्। एफट्। एमृस्। एहस्। ईऽ२३४५॥

(दी. २२। प. ३१। मा. २८) १० (च्रै।२१६)

(१३०।१) ॥ सोम व्रतम्। सोमस्त्रिष्टुप्सोमः॥

ईऽ२। (त्रिः)। सन्तेपया। सीऽ३समू। यन्तुवाजाः॥ संवृष्णिया। नीऽ३अभि। मातिषाहाः॥

आप्यायमा। नोऽ३अमृ। तायसोमा॥ दिविश्रवा। सीऽ३उत्त। मानिधिष्वा। ईऽ२। (द्विः)।

ईऽ२। आऽ२३४औहोवा॥ ह्॥

(दी. ११। प. २०। मा. ६) ११ (ङू।२१७)

(१३१।१) ॥ दीर्घतमसोऽर्कः। दीर्घतमास्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

आयाउ। (त्रिः)। अक्रान्त्समूद्रःप्रथमाइविधर्मान्। विधर्मान्। (द्विः)।

जनयन्प्राजाभुवनास्यगोपाः। स्यगोपाः। (द्विः) वृषापावित्रेअधिसानोअव्याइ। नोअव्याइ।

(द्विः)। आयाउ। (त्रिः)। बृहत्सोमोवावृधेसुवानोअद्राइ। नोअद्राइ। नोअद्राऽ३१उवाऽ२३॥

एऽ३। धेस्वानोअद्रीऽ२३४५ः॥

(दी. २०। प. २०। मा. २८) १२ (मै।२१८)

॥ द्वादश पञ्चमः खण्डः॥५॥

(१३२।१) ॥ पुरुषव्रतानि पञ्च। पुरुषोऽनुष्टुप्पुरुषः॥

उहुवाहाउ। (त्रिः)। सहस्रशीर्षाःपुरूऽ२३षाः॥ सहस्राक्षःसहस्राऽ२३पात्॥

सभूमिꣳसर्वतोवाऽ२३र्त्वा॥ अत्यतिष्ठद्दशाङ्गूऽ२३लाम्। उहुवाहाउ। (द्विः)। उहुवाऽ३हाउ।

वाऽ३॥ इट्स्थि-इडाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १२। मा. १०) १३ (खौ।२१९)

(१३३।१)

उहुवौहोवाऽ२। (त्रिः)। त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरूऽ२३षाः॥ पादोस्येहाभवत्पूऽ२३नाः॥ तथाविष्वाङ्वियक्राऽ२३मात्॥ अशनानशनेआऽ२३भी। उहुवौहोवाऽ२। (द्विः)। उहुवौ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। ईऽ२३४डा। उहुवौहोवाऽ२। (द्विः)। उहुवौ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। सूऽ२३४वा। उहुवौहोवाऽ२। (द्विः)। उहुवौ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। ऊऽ२३४५॥

(दी. ३७। प. २८। मा. ६) १४ (र्जू।२२०)

(१३४।१)

इयौहोवाऽ२। (त्रिः)। पुरुषएवेदꣳसाऽ२३र्वाम्॥ यद्भूतंयच्चभावाऽ२३याम्॥ पादोस्यसर्वाभूताऽ२३नी॥ त्रिपादस्यामृतंदाऽ२३इवी। इयौहोवाऽ२। (द्विः)। इयौ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। ईऽ२३४डा। इयौहोवाऽ२। (द्विः)। इयौ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। ज्योऽ२३४तीः। इयौहोवाऽ२। (द्विः)। इयौ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३७। प. २८। मा. ५) १५ (ज्ञु।२२१)

(१३५।१)

हाउ(३)। तावानस्य। महाऽ२३इमाऽ३॥ हाउ(३)। ततोज्यायाꣳश्चपूरुऽ२३षाऽ३ः॥ हाउ(३)। उतामृतत्वस्येशाऽ२३नाऽ३ः॥ हाउ(३)। यदन्नेनातिरोहाऽ२३तीऽ३। हाउ(३)। वाऽ३। इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. २३। प. १२। मा. ११) १६ (ठो।२२२)

(१३६।१)

हाउ(३)वा। ततोविराडजायत। हा(३)वा। विराजाअधिपूरुषः॥ हाउ(३)वा।

सजातोअत्यरिच्यत॥ हाउ(३)वा। पश्चाद्भूमिमथोपुरः। हाउहाउहाउवाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १०। मा. १९) १७ (ङ्रो।२२३)

(१३७।१)॥ पुरुषव्रते द्वे, पश्चानुगानश्चैकानुगानश्च। पुरुषोगायत्रीश्वरपुरुषः, विश्वेदेवा वा। (तत्रेदं द्वितीयमेकानुगानम्)॥

हाउ(३)। अस्मीनस्मिन्। (त्रिः)। नृम्णाइनृम्णम्। (त्रिः)। निधाइमाहे। (त्रिः)।

कयानश्चित्रऽ३आभूऽ१वाऽ२त्॥ ऊतीसदावृऽ३धाःसाऽ१खाऽ२॥

कयाशचिष्ठऽ३यावाऽ१र्त्ताऽ२३॥ हाउ(३)। अस्मीनस्मिन्। (त्रिः)। नृम्णाइनृम्णम्। (त्रिः)।

निधाइमाहे। (द्विः)। निधाऽ२३इ। माऽ२। हाऽ२३४। औहोवा॥ सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. १४७। प. २७। मा. ३३) १८ (थि।२२४)

(१३८।१)॥ द्यावापृथिव्योः (द्यौर्व्रतम्)। द्यौःज्योतिष्मती जगती द्यावापृथिव्यौ॥

हुवाइ। (त्रिः)। रूपम्। मन्येवांद्यावापृथिवीसुऽ३भोजाऽ१साऽ२उ॥

येअप्रथेथाममितमाभिऽ३योजाऽ१नाऽ२म्॥ द्यावापृथिवीभवऽ३ताꣳस्योऽ१नाऽ२इ॥

तेनोमुञ्चतऽ३माꣳहाऽ१साऽ२ः। हुवाइ। (त्रिः)। रूपाऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ए। रूपम्। (द्वे त्रिः)॥

(दी. २३। प. १९। मा. १६) १९ (द्रू।२२५)

(१३७।१)॥ त्रीणि लोकानां व्रतानि दिवोऽन्तरिक्षस्य पृथिव्याः। अन्तरिक्षं गायत्रीन्द्रः। (तत्रेदं द्वितीयमन्तरिक्षस्य व्रतमिति)॥

वाक्। (द्विः)। वागीयम्। कयानश्चित्रऽ३आभूऽ१वाऽ२त्॥ ऊतीसदावृऽ३धाःसाऽ१खाऽ२॥ कयाशचिष्ठऽ३यावाऽ१र्त्ताऽ२॥ वाक्। (द्विः)। वागीयाऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ए। अन्तरिक्षेसलिलंल्लेलायाऽ२३४५॥

(दी. १३। प. १२। मा. ८) २० (ठै।२२६)

(१३८।१)॥ विपरीते द्वे, तत्र द्वितीयमिदं पृथिवीव्रतम्। पृथिवीज्योतिष्मतीजगतीद्यावापृथिव्यौ॥

प्रतिष्ठासिप्रति। ष्ठा। (द्वे त्रिः)। वर्चोसिमनोसिऐही। मन्येवांद्यावापृथिवीसुभोजसावैही॥ येअप्रथेथाममितमभियोजनामैही॥ द्यावापृथिवीभवतꣳस्योनाऐही॥ तेनोमुञ्चतमꣳहसाऐही। प्रतिष्ठासिप्रति। ष्ठा। (द्वे त्रिः)। वर्चोसिमनोसिऐहीऽ३। हाउवा॥ ए। भूतम्। (द्वे त्रिः)॥

(दी. ४७। प. २५। मा. ९) २१ (ञो।२२७)

(१३९।१) ॥ ऋष्यस्यसाम व्रतम्। कश्यपोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

हरीतइन्द्रश्मश्रूणी॥ उतोतेहरिताऽ१उहाऽ३री॥ तन्त्वास्तुवन्तिकाऽ३। वायाः॥ पुरुषासोवनाऽ३। गावाः॥

ऋश्यासइन्द्रभुङ्क्तिमघवन्निन्द्रभुङ्क्तिभुङ्क्तिप्रभुङ्क्तीन्द्रस्तसरपूताऽ२३४५ः॥

(दी. ९। प. ७। मा. ६) २२ (थू।२२८)

॥ दश षष्ठः खण्डः॥६॥

॥ इति (ग्रामे) आरण्यकगाने पञ्चमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(१४०।१)॥ दिशां व्रतम् दशानुगानम्। दिशोऽनुष्टुप् आत्मा। (कश्यपगायत्रीन्द्रः)॥

हाउ(३)। अहमन्नम्। (त्रिः)। अहमन्नादो। हमन्नादो। हमन्नादो। हंविधारयो। (द्विः)।

हंविधारयः। हाउ(३)। यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥ यद्वावर्चोगवासु। ता॥ सत्यस्यब्रह्मणोव। चाः॥

तेनमास॰सृजाम्। साइ। हाउ(३)। अहमन्नम्। (त्रिः)। अहमन्नादो। हमन्नादो। (द्विः)।

हंविधारयो। (द्विः)। हंविधारयः। हाउ(३)। वा॥ ए। अहमन्नमहमन्नादोहंविधारयः। (द्वे त्रिः)।

ए। अह॰सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ५३। प. ३९। मा. २६) १ (ढू।२२९)

(१४०।२)

हाउ(३)। अह॰सहो। ह॰सहो। (द्विः)। ह॰सासहिः। अह॰सासहिः। (द्विः)।

अह॰सासहानो। ह॰सासहानो। ह॰सासहानः। हाउ(३)। यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥

यद्वावर्चोगवासु। ता॥ सत्यस्यब्रह्मणोव। चाः॥ तेनमास॰सृजाम। साइ। हाउ(३)।

अह॰सहो। ह॰सहो। (द्विः)। ह॰सासहिः। अह॰सासहिः। (द्विः)। अह॰सासहानो।

ह॰सासहानो। ह॰सासहानः। हाउहाउहाउ। वा॥ ए। अह॰सहोह॰सासहिरह॰सासहानः।

(द्वे त्रिः)। ए। अह॰सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ६२। प. ३९। मा. २६) २ (झू।२३०)

(१४०।३)

हाउ(३)। अहंवर्चो। हंवर्चो। हंवर्चः। हाउ(३)। यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥ यद्वावर्चोगवामु। ता॥
सत्यस्यब्रह्मणोव। चाः॥ तेनमासꣳसृजाम। साइ। हाउ(३)। अहंवर्चो। हंवर्चो। हंवर्चः।
हाउ(३)। वा॥ ए। अहंवर्चः। (द्वे त्रिः)। ए। अहꣳसुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. २६। प. २७। मा. २०) ३ (खौ।२३१)

(१४०।४)

हाउ(३)। अहंतेजो। हंतेजो। हंतेजः। हाउ(३)। यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥ यद्वावर्चोगवामु। ता॥
सत्यस्यब्रह्मणोव। चाः॥ तेनमासꣳसृजाम। साइ। हाउ(३)। अहंतेजो। हंतेजो। हंतेजः।
हाउहाउहाउ। वा॥ ए। अहंतेजः। (द्वे त्रिः)। ए। अहꣳसुवर्ज्योती२३४५ः॥

(दी. ३५। प. २७। मा. २०) ४ (फा।२३२)

(१४०।५)

हाउ(३)। दिशन्दुहे। (त्रिः)। दिशौदुहे। (त्रिः) दिशोदुहे। (त्रिः)। सर्वादुहे। (त्रिः)। हाउ(३)।
यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥ यद्वावर्चोगवामु। ता॥ सत्यस्यब्रह्मणोव। चाः॥ तेनमासꣳसृजाम।
साइ। हाउ(३)। दिशन्दुहे। (त्रिः)। दिशौदुहे। (त्रिः)। दिशोदुहे। (त्रिः)। सर्वादुहे। (त्रिः)।
हाउ(३)। वा॥ ए। दिशन्दुहेदिशौदुहेदिशोदुहेसर्वादुहे। (द्वे त्रिः)। ए।
अहꣳसुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ८५। प. ४५। मा. १५) ५ (मु।२३३)

(१४०।६)

हाउ(३)। मनोजयित्। (त्रिः)। हृदयमजयित्। (त्रिः)। इन्द्रोजयित्। (त्रिः)। अहमजैषम्।
(त्रिः)। हाउ(३)। यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥ यद्वावर्चोगवामु। ता॥ सत्यस्यब्रह्मणोव। चाः॥
तेनमास॰सृजाम। साइ। हाउ(३)। मनोजयित्। (त्रिः)। हृदयमजयित्। (त्रिः)। इन्द्रोजयित्।
(त्रिः)। अहमजैषम्। (त्रिः)। हाउ(३)। वा॥ ए। मनोजयिद्धृदयमजयिदिन्द्रोजयिदहमजैषम्।
(द्वे त्रिः)। ए। अह॰सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ४९। प. ४५। मा. ४२) ६ (ना।२३४)

(१४०।७)

हाउ(३)। वयः। (त्रिः)। वयोवयः। (त्रिः)। हाउ(३)। यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥ यद्वावर्चोगवामु।
ता॥ सत्यस्यब्रह्मणोव। चाः॥ तेनमास॰सृजाम। साइ। हाउ(३)। वयः। (त्रिः)। वयोवयः।
(त्रिः)। हाउ(३)वा॥ ए। वयोवयोवयः। (द्वे त्रिः)। ए। अह॰सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ३४। प. ३३। मा. ३०) ७ (दौ।२३५)

(१४०।८)

हाउ(३)। रूपम्। (त्रिः)। रूप॰रूपम्। (त्रिः)। हाउ(३)। यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥
यद्वावर्चोगवामु। ता॥ सत्यस्यब्रह्मणोव। चाः॥ तेनमास॰सृजाम। साइ। हाउ(३)। रूपम्।
(त्रिः)। रूप॰रूपम्। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। वा॥ ए। रूप॰रूप॰रूपम्। (द्वे त्रिः)। ए।
अह॰सुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ४९। प. ३३। मा. ३०) ८ (दा।२३६)

(१४०।९)

हिहियऊऽ२। (त्रिः)। उदपप्तम्। (त्रिः)। ऊर्ध्वानभाꣳस्यकृषि। (त्रिः)। व्यद्यौत्सम। (त्रिः)।
अततनम्। (त्रिः)। हाउ(३)। यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥ यद्वावर्चोगवामु। ता॥ सत्यस्यब्रह्मणोव।
चाः॥ तेनमासꣳसृजाम। साइ। हिहियऊऽ२। (त्रिः)। उदपप्तम्। (त्रिः)। ऊर्ध्वानभाꣳस्यकृषि।
(त्रिः)। व्यद्यौत्सम्। (त्रिः)। अततनम्। (त्रिः)। हाउ(३)। वा। ए।
उदपप्तमूर्ध्वानभाꣳस्यकृषिव्यद्यौत्समततनम्। (द्वे त्रिः)। एऽ३। पिन्वस्वाऽ२३४५॥

(दी. ५०। प. ४१। मा. ३५) १ (भु।२३७)

(१४०।१०)

हाउ(३)। प्रथे। (त्रिः)। प्रत्युष्ठाम्। (त्रिः)। हाउ(३)। यद्वर्चोहिरण्य। स्या॥ यद्वावर्चोगवामु।
ता॥ सत्यस्यब्रह्मणोव। चाः॥ तेनमासꣳसृजाम। साइ। हाउ(३)। प्रथे। (त्रिः)। प्रत्यष्ठाम्।
(त्रिः)। हाउहाउहाउ। वा॥ ए। प्रथेप्रत्यष्ठाम्। (द्वे त्रिः)। ए। अहꣳसुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ४०। प. ३३। मा. २४) १० (बी।२३८)

॥ दश सप्तमः खण्डः॥७॥

(१४१।१) ॥ कश्यपव्रतं दशानुगानम्। कश्यपो गायत्रीन्द्रः॥

हाउ(३)। हाऽ२इ। ऊऽ२। (द्वे त्रिः)। काह्वह्वह्वह्वह्व। (त्रिः)। हाऽ२इ। ऊऽ२। ऊऽ२।
ऊऽ२। (चत्वारि त्रिः)। काह्वह्वह्वह्वह्व। ऊऽ२। (द्वे त्रिः)। हाउ(३)। यस्येदमारजोयूऽ२जाः॥
तुजेजनेवनꣳसूऽ२वाः॥ हाउ(३)। हाऽ२इ। ऊऽ२। (द्वे त्रिः)। काह्वह्वह्वह्वह्व। (त्रिः)। हाऽ२इ।
ऊऽ२। ऊऽ२। ऊऽ२। (चत्वारि त्रिः)। काह्वह्वह्वह्वह्व। ऊऽ२। (द्वे त्रिः)। हाउ(३)। हाउ(३)।
आइन्द्रस्यर॥ तियाऽ३म्बृऽ५हाऽ६५६त्॥ नमःसुवरिडाऽ२३४५त्॥

(दी. १४। प. ६३। मा. २८) ११ (जै।२३९)

(१) ॥ काश्यपग्रीवा (द्वितीयं)। कश्यपोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

हाउ(३)॥ अहोऽऽअहोऽऽ। अहो। आहोऽआहोऽ। आहो॥ एऽहोएऽहो॥ एहो। वाऽ३।

हाउवाऽ३॥ प्रजाभूतमजीजनेऽ३। इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ११। मा. ८) ११ (कै।२४०)

(१४२।१) ॥ कश्यपव्रतं दशानुगानम् (तृतीयं)। कश्यपस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउ(३)। फाल्फल्फल्फल्फल्फल्। (त्रिः)। हाउ(३)। इन्द्रन्नरोनेमधिताहवाऽ२न्ताइ॥

यत्पार्यायुनजतेधियाऽ२स्ताः॥ शूरोनृषाताश्रवसश्चकाऽ२माइ॥ आगोमतिव्रजेभजातुवाऽ२न्नाः।

हाउ(२)। फाल्फल्फल्फल्फल्फल्। (त्रिः)। हाउ(३)। वा॥ मनःसुवरिडाऽ२३४५॥

(दी. २३। प. १६। मा. ५२) १३ (टा।२४१)

(१४३।१) ॥ कश्यपव्रतं दशानुगानम् (चतुर्थं)। कश्यपस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउ(३)। हाउहौहौहौहौहौ। (त्रिः)। हाउ(३)। योनोवनुष्यन्नभिदातिमाऽ२र्ताः॥

उगणावामन्यमानस्तुरोऽ२वा॥ क्षिधीयुधाशवसावातमाऽ२इन्द्रा॥ अभीष्यामवृषमणस्त्वोऽ२ताः।

हाउ(३)। हाउहौहौहौहौहौ। (त्रिः)। हाउहाउहाउ। वा॥ एवयःसुवरिडाऽ२३४५॥

(दी. ५२। प. १६। मा. २१) १४ (चा।२४२)

(१) ॥ (प्रजापतेर्हृदयं) कश्यपव्रतं दशानुगानम् (पञ्चमं)। कश्यपोऽनुष्टुप्प्रजापतिः॥

हाउ(३)। इमाः। (त्रिः)। प्रजाः। (त्रिः)। प्रजापते। होइ। (द्वे द्विः)॥ प्रजापते। हाऽ३१उ।
वाऽ२॥ ए। हृदयम्। (द्वे द्विः)। ए। हृदयाऽ३१उ। वाऽ२॥ प्रजारूपमजीजनेऽ३।
इट्स्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. २१। प. २३। मा. १६) १५ (गू।२४३)

(१) ॥ कश्यपव्रतं दशानुगानम् (इडानाम् संक्षरः षष्ठः)। कश्यपोऽनुष्टुप्प्रजापतिः॥

हाउ(३)॥ इडा। (त्रिः)। सुवः॥ (त्रिः)। ज्योतिः॥ (द्विः)। ज्योताऽ३४। औहोवा॥ ए।
इडासुवर्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. १४। प. १३। मा. ९) १६ (दो।२४४)

(१४४।१) ॥ कश्यपव्रतं दशानुगानम् (प्रथमम्)। कश्यपस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउ(३)। आइही। (त्रिः)। ओहा। ओहा। ओहाऽ३। हाउ(३)। सहस्तन्नइन्द्रदध्योऽ२जाः।
आयाऽ२उ। ऊ। आयाउ॥ (त्रीणी त्रिः)। ईशेह्यस्यमहतोविराऽ२ष्णाइन्। आयाऽ२उ। ऊ।
आयाउ॥ (त्रीणी त्रिः)। क्रतुन्ननृम्णꣳस्थविरंचवाऽ२जाम्। आयाऽ२उ। ऊ। आयाउ॥ (त्रीणी
त्रिः)। वृत्रेषुशत्रून्सहनाकृधाऽ२इनाः। आयाऽ२उ। ऊ। आयाउ॥ (त्रीणी त्रिः)। हाउ(३)।
आइही। (त्रिः)। ओहा। ओहा। ओहाऽ३। हाउहाउहाउ। वा॥ ए।
आयुर्द्धाअस्मभ्यंवर्चोधादेवेभ्याऽ२३४५ः॥

(दी. ४६। प. ५९। मा. ५१) १७ (घ।२४५)

(१४५।१) ॥ गवां व्रते द्वे, (प्रथममिदं) कश्यपस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउ(३)। तेमन्वतप्रथमन्नामगो। नाम्। नाम्। नाम्॥ हाउ(३)। त्रिस्सप्तपरमन्नामजा। नान्।
नान्। नान्॥ हाउ(३)। ताजानतीरभ्यनूषता। क्षाः। (त्रिः)॥ हाउ(३)।
आविर्भुवन्नरुणीर्यशसागा। वाः। (त्रिः)। हाउ(३)। वा॥ ए। दुघाः। (द्वे द्विः)। ए।
दुघाऽ२३४५ः॥

(दी. २७। प. २८। मा. ३०) १८ (जौ।२४६)

(१४६।१) ॥ सभासत्साम। गावस्त्रिष्टुब्गावः॥

हाउ(३)वा। सहर्षभास्सहवत्साउदेत॥ हाउ(३)वा। विश्वारूपाणिबिभ्रतीर्द्व्यूघ्नीः॥ हाउ(३)वा।
उरुःपृथुरयंवोअस्तुलोकः॥ हाउ(३)वा। इमाआपःसुप्रपाणाइहस्त। हाउ(३)वा॥
अश्वमिष्टायेऽ३हस्॥

(दी. १५। प. १०। मा. २२) १९ (मा।२४७)

(१४७।१) ॥ कश्यप पुच्छं दशमम्। कश्यपस्त्रिष्टुबिन्द्रः अग्निर्वा॥

हाउ(३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२। (त्रिः)। ऐहीहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)।
हाउ(३)वा। प्रजातोकमजीजनेहस्। इहाऽ२३४५। हाउ(३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२।
(त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आयाउ। (त्रिः)। अग्निरस्मिजन्मनाऔऽ३हो।
हाऽ२इया। औऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३होऽ३॥ हाउ(३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२।
(त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ(३)वा। इहप्रजामिहरियꣳरराणोहस्।
इहाऽ२३४५। हाउ(३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ
। (त्रिः)। आयाउ। जातवेदाऔऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३होऽ३।

हाउ(३) वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ । (त्रिः)।

हाउ(३)वा। रायस्पोषायसुकृतायभूयसेहस्। इहाऽ२३४५। हाउ(३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)।

ऐहीऽ२। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ । (त्रिः)। आयाउ। (त्रिः)।

घृतंचक्षुरमृतंमआसानौऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३होऽ३। हाउ(३)।

वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ(३)वा।

आगन्वाममिदंबृहद्धस्। इहाऽ२३४५। हाउ(३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२। (त्रिः)।

ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आयाउ। (त्रिः)। त्रिधातुरर्कोरजसोविमानाऔऽ३हो।

हाऽ२इया। औऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३होऽ३॥ हाउ(३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२।

(त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ(३)वा। इदंवाममिदंबृहद्धस्।

इहाऽ२३४५। हाउ(३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ

। (त्रिः)। आयाउ। (त्रिः)। अजस्रंज्योताइरौऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३हो। हाऽ२इया।

औऽ३होऽ३॥ हाउ(३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)।

हाहाउ। (त्रिः)। हाउ(३)वा। चराचरायबृहतइदंवाममिदंबृहद्धस्। इहाऽ२३४५। हाउ(३)।

वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ । (त्रिः)। आयाउ।

(त्रिः)। हविरस्मिसर्वामौऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३हो। हाऽ२इया। औऽ३होऽ३। हाउ(३)।

वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहीऽ२। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ । (त्रिः)। हाउ(३)वा।

एयश्लोकान्भूतमततनत्प्रजाउसमचूकुपत्पशुभ्योहस्। इहाऽ२३४५॥

(दी. ११९। प. २३८। मा. २२१) २० (ग।२४८)

(१)॥ आनुडुद्वते द्वे, निह्नवामि निह्नवौ द्वावनडुद्वते वा निह्नवम्। प्रजापतिरनुष्टुबिन्द्रः॥

इतीऽ२इति। (त्रिः)। इतिमात्राचरतिवत्सकाऽ२इति। (द्विः)॥ इतिमात्राचरतिवत्सकाऽ२३ः॥

आऽ२इ। ताऽ२३४। औहोवा॥ ए। इति। ए। इति। ए। इतीऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १५। मा. ७) २१ (ङे।२४९)

(२) ॥ अभिनिह्नव्रतेमतदनडुद्वतं वा॥

स्वयꣳस्कुन्वाइ। स्वयꣳस्कून्वाऽ२इ। (द्वे द्विः)। स्वयꣳस्कुन्वाइ। स्वयम्। स्कूऽ२। न्वाऽ२३४।

औहोवा॥ ए। स्कुन्वे। (द्वे द्विः)। ए। स्कुन्वाऽ२३४५इ॥

(दी. ७। प. १५। मा. ७) २२ (ञे।२५०)

[वाचोव्रतपर्वणि ८४ सामानि]

॥ द्वादशाष्टमः खण्डः॥८॥

॥ इति (ग्रामे) आरण्यकगाने पञ्चमः प्रपाठकः॥५॥

॥ इति वाचोव्रत-नाम तृतीयं पर्व समाप्तम्॥

॥ इति पञ्चमं गानं समाप्तम्॥

॥ अथ शुक्रिय पर्व॥

(१४८।१) ॥ अग्नेर्व्रतम्। अग्निर्गायत्री॥

हाउहाउहाउ। भ्राजाओवा। (त्रिः)। अग्निर्मूर्द्धादिऽ३वाःकाऽ१कूऽ२त्॥

पतिःपृथीवीऽ३याआऽ१याऽ२म्॥ अपाꣳरेताꣳसिऽ३जाइन्वाऽ१तीऽ२३॥ हाउ(३)।

भ्राजाओवा। (द्विः)। भ्राजाऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥ ए। विश्वस्यजगतोज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ३६। प. १३। मा. १७) १ (गे।२५१)

(१४९।१) ॥ वायोर्व्रतम्। वायुरत्यष्टिःसोमः॥

भ्राजा। (द्विः)। भ्राजाऽ३१उ। वाऽ२। अयारुचाहरिण्यापुनानः। विश्वाद्वेषाꣳसित्तरतिसयुग्वभिः।

सूरोनसयुवग्भिः। धारापृष्ठस्यरोचत। पुनानोअरुषोहरिः॥ विश्वायद्रूपापरियास्यृक्वभिः॥

सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः। भ्राजा। (द्विः)। भ्राजाऽ३१उ। वाऽ२॥ ए। विश्वस्मैजगतेज्योतिः।

ज्योऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ इट्स्थि-इडाऽ२३४५॥

(दी. ३४। प. १९। मा. १२) २ (धा।२५२)

(१५०।१) ॥ महावैश्वानर व्रते द्वे। वैश्वानरो जगती वैश्वानरः॥

हाउ(२)। ओहा। (द्विः)। ओहाइ। वयोहोइ। (त्रिः)। पयोहोइ। (त्रिः)। चक्षुर्होइ। (त्रिः)।

श्रोत्रꣳहोइ। (त्रिः)। आयुर्होइ। (त्रिः)। तपोहोइ। (त्रिः)। वर्चोहोइ। (त्रिः)। तेजोहोइ। (त्रिः)।

सुवर्होइ। (त्रिः)। ज्योतिर्होइ। (त्रिः)। प्रक्षस्यवृष्णोअरुषस्यनूमाऽ२३हाः॥

प्रनोवचोविदथाजातवेदाऽ२३साइ॥ वैश्वानरायमतिर्नव्यसेशूऽ२३चीः॥

सोमइवपवतेचारुरग्नाऽ२३याऽ३इ। हाउ(३)। ओहा (द्विः)। ओहाइ। वयोहोइ। (त्रिः)।

पयोहोइ। (त्रिः)। चक्षुर्होइ। (त्रिः)। श्रोत्र२होइ। (त्रिः)। आयुर्होइ। (त्रिः)। तपोहोइ। (त्रिः)।

वर्चोहोइ। (त्रिः)। तेजोहोइ। (त्रिः)। सुवर्होइ। (त्रिः)। ज्योतिर्होइ। (द्विः)। ज्योतिर्होऽ२।

वाऽ२३४औहोवा॥ ए। अग्निःसमुद्रमाक्षयत्। ए। अग्निर्मूर्द्धाभवद्दिवः। ए।

आयुर्द्धाअस्मभ्यंवर्चोधादेवेभ्याऽ२३४५ः॥

(दी. १००। प. ७९। मा. ७८) ३ (भै।२५३)

(१५१।१) ॥ वैश्वानरो बृहती वैश्वानरः॥

ओऽ३१म्। (त्रिः)। आयुः। (त्रिः)। ज्योतीः। (त्रिः)। ज्योतोवा। (त्रिः)। ज्योतोवाहाइ। (द्विः)।

ज्योतोवाऽ३हाउ। वा। इहस्वर्वैश्वानरायप्रदिशोज्योतिर्बृहत्। इन्दुरिडासत्यम्। सत्यम्।

सत्योवा। (त्रिः)। सत्योवाहाइ। (द्विः)। सत्योवाऽ३हाउ। वा।

इहस्वर्वैश्वानरायप्रदिशोज्योतिर्बृहत्। कायमानोवनातुवाम्। तुवाम्। तुवाम्। तुवोना। (त्रिः)।

तुवोवाहाइ। (द्विः)। तुवोवाऽ३हाउ। वा। इहस्वर्वैश्वानरायप्रदिशोज्योतिर्बृहत्॥ द्यौर्भूतंपृथिवी।

पृथिवी। (द्विः)। पृथिव्योवा। (त्रिः)। पृथिव्योवाहाइ। (द्विः)। पृथिव्योवाऽ३हाउ। वा।

इहस्वर्वैश्वानरायप्रदिशोज्योतिर्बृहत्। यन्मातृजगन्नपाः। अपाः। अपाः। अपोवा। (त्रिः)।

अपोवाहाइ। (द्विः)। अपोवाऽ३हाउ। वा। इहस्वर्वैश्वानरायप्रदिशोज्योतिर्बृहत्॥

सहस्तेजआपः। आपः। आपः। आपोवा। (त्रिः)। आपोवाहाइ। (द्विः)। आपोवाऽ३हाउ। वा।

इहस्वर्वैश्वानरायप्रदिशोज्योतिर्बृहत्। नतत्तेअग्नेप्रमृषेनिवर्तनाम्। तनाम्। तनाम्। तनोवा।

(त्रिः)। तनोवाहाइ। (द्विः)। तनोवाऽ३हाउ। वा। इहस्वर्वैश्वानरायप्रदिशोज्योतिर्बृहत्॥

उषादिशोज्योतिः। ज्योतिः। ज्योतिः। ज्योतोवा। (त्रिः)। ज्योतोवाहाइ। (द्विः)।

ज्योतोवाऽ३हाउ। वा। इहस्स्वर्वैश्वानरायप्रदिशोज्योतिर्बृहत्। यद्दूरेसन्निहाभुवाः। भुवाः। भुवाः।

भुवोवा। (त्रिः)। भुवोवाहाइ। (द्विः)। भुवोवाऽ३हाउ। वा।

इहस्स्वर्वैश्वानरायप्रदिशोज्योतिर्बृहत्। ओऽ३१म्। (त्रिः)। आयूः। (त्रिः)। ज्योतीः। (त्रिः)।

ज्योतोवा। (त्रिः)। ज्योतोवाहाइ। (द्विः)। ज्योतोवाऽ३हाउ। वा॥ घर्मोमरुद्भिर्भुवनेषुचक्रदत्।

इट्ऽस्थिइडाऽ२३४५॥

(दी. २२०। प. १२३। मा. ८२) ४ (बा।२५४)

(१५२।१) ॥ सूर्यस्य भ्राजा भ्राजे द्वे, भ्राजम्। द्वयोः सूर्यो गायत्र्यग्निः॥

भ्राजा। (द्विः)। भ्राजाऽ३१उ। वाऽ२। अग्नआयूꣳषिपवसे॥ आसुवोर्जमिषंचनः॥

आरेबाधस्वदुच्छुनाम्। भ्राजा। (द्विः)। भ्राजाऽ३१उ। वाऽ२॥ ए। भ्राज। (द्वे त्रिः)॥

(दी. २१। प. १७। मा. ५) ५ (खु।२५५)

(१५३।१) ॥ आभ्राजम्॥

आ। भ्राज। (द्वे त्रिः)। अग्निर्मूर्द्धादिऽ३वाःकाऽ१कूऽ२त्॥ पतिःपृथीविऽ३याआऽ१याऽ२म्॥

अपाꣳरेताꣳसिऽ३जाइन्वाऽ१तीऽ२॥ आ। भ्राज। (द्वे द्विः)। आ। भ्राजाऽ३उवा॥ ए।

आभ्राज। (द्वे त्रिः)॥

(दी. २१। प. २१। मा. ५) ६ (कु।२५६)

(१५४।१) ॥ वायोर्विकर्णभासे द्वे, मृत्योर्वा। विकर्णं वायुर्जगती सूर्यः॥

हाहाउ। (त्रिः)। इडा। (त्रिः)। हस्। (त्रिः)। ऋतम्मे। (त्रिः)।

विभ्राड्बृहत्पिबतुसोमियाऽ२म्माधूऽ२। आयुर्द्दधद्यज्ञपतावव्वाऽ२इह्रूताऽ२म्॥

वातजूतोयोअभिरक्षताऽ२इत्मानाऽ२॥ प्रजाःपिपर्तिबहुधाविराऽ२जातीऽ२। हाहाउ। (त्रिः)।

इडा। (त्रिः)। हस्। (त्रिः)। ऋतम्मे। (त्रिः)। औहोवाहाउ। वा॥ फाऽ२ट्। ऋतम्मे। (त्रिः)।

औहोवाहाउ। वा। फाऽ२ट्। ऋतम्मे। (त्रिः)। औहोवाहाउ। वा। भ्राऽ२ट्॥

(दी. ३४। प. ४३। मा. २२) ७ (दा।२५७)

(१५५।१) ॥ भासम्। वायुः जगती वैश्वानरः॥

हाउहाउहाउ। ओहा। (द्विः)। ओहाइ। इहौहो। (त्रिः)। इहियो। (त्रिः)। हिम्। (त्रिः)। हो।

(त्रिः)। ह्श्। (त्रिः)। इडा (त्रिः)। ऋतम्मे। (त्रिः)। हस्। (त्रिः)।

प्रक्षस्यवृष्णोअरुषस्यनूमाऽ२३हाः॥ प्रनोवचोविदथाजातवेदाऽ२३साइ॥

वैश्वानरस्यमतिर्नव्यसेशूऽ२३चीः॥ सोमइवपवतेचारुरग्नाऽ२३याऽ३इ। हाउ(३)। ओहा।

(द्विः)। ओहाइ। इहौहो। (त्रिः)। इहियो। (त्रिः)। हिम्। (त्रिः)। हो। (त्रिः)। ह्श्। (त्रिः)।

इडा। (त्रिः)। ऋतम्मे। (त्रिः)। हस्। (द्विः)। हाऽ२३४। औहोवा॥ इहौहो। भद्रम्। इहौहो।

श्रेयः। इहौहो। वामम्। इहौहो। वरम्। इहौवो। सुवम्। इहौहो। अस्ति। इहौहो।

अभ्राजीत्। इहौहो। ज्योतिः। अभ्राजीत्। इहौहो। दीदिवः। एऽ२३। हियाहाउवाऽ३॥

भाऽ२३४५म्।

(दी. ७९। प. ८३। मा. ३६) ८ (दू।२५८)

॥ ऐन्द्रं महादिवकीर्त्यं सौर्यं वा दशानुगानं। तस्य शिरश्च ग्रीवश्च स्कन्धकीकसौ च पुरीषाणि च पक्षौ चात्मा चोरू च पुच्छं चैतत्, साम॥ सुपर्णमित्याचक्षते, शिरोनाम प्रथमानुगानम्।

आत्मसामनि ऋष्यादयो नान्यत्र इन्द्रो जगतीसूर्य आत्मा॥

(१)

हाउ(३)। आयुः। (त्रिः)। ज्योतिः। (द्विः)। ज्योताऽ३४। औहोवा॥ एऽ३। वाङ्ज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. १३। प. १०। मा. ९) ९ (णो।२५९)

(२) ॥ ऐन्द्रं महादिवाकीर्त्यं सौर्यं वा। ग्रीवानाम द्वितीयानुगानम्॥

एवाहियेवाऽ२३४औहोवा। हंस्थिहंहंस्थिहंहंऽ३४। औहोवा। (त्रीणि त्रिः)॥ हियेवा।
हियग्नाइ। हिइन्द्रा। हिपूषान्। हिदेवाऽ२३४५ः॥

(दी. ३०। प. १४। मा. १३) १० (भि।२६०)

(३) ॥ ऐन्द्रं महादिवाकीर्त्यं सौर्तं वा। स्कन्धोनाम तृतीयानुगानम्॥

वयोमनोवयःप्राणाः। वयश्चक्षुर्वयःश्रोत्राम्। वयोघोषोवयोव्राताम्। वयोऽ२३भूताउ। वाऽ३॥
ईऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ६। मा. ४) ११ (च्री।२६१)

(४) ॥ ऐन्द्रं महादिवाकीर्त्यं सौर्यं वा। कीकसोनाम चतुर्थानुगानम्॥

वयोमनाऽ२३ः। होइहौवाओऽ२३४वा। वयःप्राणाऽ२३ः। होइहौवाओऽ२३४वा।
वयश्चक्षूऽ२३ः। होइहौवाओऽ२३४वा। वयःश्रोत्राऽ२३म्। होइहौवाओऽ२३४वा।
वयोघोषाऽ२३ः। होइहौवाओऽ२३४वा। वयोव्रताऽ२३म्। होइहौवाओऽ२३४वा।
वयोभूताऽ२३म्। होइहौवाओऽ२३४वाऽ६५६॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ८। प. १५। मा. २१) १२ (र्ण।२६२)

(५) ॥ ऐन्द्रं महादिवाकीर्त्यं सौर्यं वा। पक्षोनाम पञ्चानुगानम्॥

ऊऽ२र्क। हाउ(३)। होऽ३वाक्। (त्रीणि त्रिः)। धर्मोऽ२धर्मः। (त्रिः)॥

(दी. १२। प. १२। मा. १८) १३ (छै।२६३)

(६) ॥ तवश्यावीयम्, ऐन्द्रं महादिवाकीर्त्यं सौर्यं वा। पक्षोनाम षष्ठोनुगानमपि॥

धर्मविधर्म। (त्रिः)। सत्यंगाय। (त्रिः)। ऋतंवद। (त्रिः)। हꣳवंवऽ२०वंवऽ२०वम्॥ (त्रिः)॥

(दी. ३। प. १२। मा. ३) १४ (ठि।२६४)

(१५६।७) ॥ ऐन्द्रं महादिवाकीर्त्यं सौर्यं वा। आत्मा नाम सप्तमानुगानम्॥

औहौहोवाहाइ। (द्विः)। औहौहोवाहाऽ३१उ। वाऽ२३। भूऽ२३४वात्।
विभ्राड्बृहत्पिबतुसोम्यंम। ध्वौहौहोवाहोइ। औहौहोवाहोइ। औहौहोवाहाऽ३१उ। वाऽ२३।
जाऽ२३४नात्। आयुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्॥ औहौहोवाहोइ। (द्विः)। औहौहोवाहाऽ३१उ।
वाऽ२३। वाऽ२३४र्द्धात्। वातजूतोयोअभिरक्षतित्मना॥ औहौहोवाहाइ। (द्विः)।
औहौहोवाहाऽ३१उ। वाऽ२३। काऽ२३४रात्। प्रजाःपिपर्तिबहुधाविराजति। औहौहोवाहाइ।
(द्विः)। औहौहोवाहाऽ३१उ। वाऽ२॥ ए। अभ्राजीज्योतिरभ्राजीऽ२३४५त्॥

(दी. ७७। प. ३०। मा. २२) १५ (त्ना।२६५)

(८) ॥ ऐन्द्रं महादिवाकीर्त्यं सौर्यं वा। ऊरुर्नामाष्टमानुगानम्॥

भूमिः। (त्रिः)। अन्तरिक्षम्। (त्रिः)। द्यौः। (द्विः)। द्याऽ३४। औहोवा॥ एऽ३।
भूतायाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १२। मा. ८) १६ (छै।२६६)

(९) ॥ ऐन्द्रं महादिवाकीर्त्यं सौर्यं वा। ऊरुनाम नवमानुगानमपि॥

द्यौः। (त्रिः)। अन्तरिक्षम्। (त्रिः)। भूमिः। (द्विः)। भूमाऽ३४। औहोवा॥ एऽ३।
आयुषेऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १२। मा. ८) १७ (खै।२६७)

(१०) ॥ ऐन्द्रं महादिवाकीर्त्यं सौर्यं वा। पुच्छंनाम दशानुगानम्॥

हाउ(३)। ज्योतिः। (द्विः)। ज्योताऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ६। मा. ५) १८ (ट्रु।२६८)

(१) ॥ अकविंशत्यनुगाने आदित्यव्रतम्। एतत्साम सुपर्णमित्याचक्षते॥

सन्वाभूतान्यैरयन्। होइ॥ सन्वाभव्यान्यैरयन्। होइ॥ सन्वाभविष्यदैरयत्। होइ॥
सन्वाभुवनमैरयत्। होइ॥ सन्वाभूतामैरयत्। होइ॥

(दी. १४। प. १०। मा. १०) १९ (नौ।२६९)

॥ इति ग्रामे आरण्यकगाने षष्ठस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(१५७-१५९।१) ॥ आदित्यव्रतम्॥

उवीऽ२उवि। उविहोऽ२उवि। (द्वे त्रिः)। इतीऽ२इति। इतिहोऽ२इति। (द्वे त्रिः)।
असीऽ२असि। असिहोऽ२असि। (द्वे त्रिः)। अरूरुचोदिवंपृथिवीम्। असीऽ२असि।
असिहोऽ२असि। (त्रीणि त्रिः)। पतिर। स्यपामोषधीनाऽ३म्। ओइ। पताइराऽ२३४सी।
(चत्वारि त्रिः)। चाइ। त्रंदेवानामुदगादनीकम्॥
वाइश्वेषान्देवाना२समिदजस्रंज्योतिराततऽ२म्। होइ। (द्वे त्रिः)। आयुर्यन्। (त्रिः)। अवः।
(त्रिः)। चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः॥ सुवःस२सर्पस२सार्पा। (त्रिः)। जनावन२सुवाऽ२ःसुवः।

जनाऽ२वनाऽ२म्। सुवाऽ२ःसुवः। (त्रीणि त्रिः)। आप्राद्यावापृथिवीआन्तरीऽ२३क्षाऽ३म्।

सृपिप्रसृपीऐही। (त्रिः)। अस्तोषतस्वभानवाऐही। विप्रानविष्ठयामताऐही।

ग्रावाणोबर्हिषिप्रियाऐही। इन्द्रस्यरश्हियंबृहादेही। इन्द्राऽ२। स्यराऽ२। हियाऽ२म्।

बृहदिन्द्रस्यरश्हियंबृहादेही। (चत्वारि त्रिः)॥ सूर्यआत्माजगतस्तास्थूषाऽ२३श्चाऽ३।

अन्तश्चरतिरोचनाऐही। (त्रिः)। अस्यप्राणादपानताऐही। (त्रिः)। व्यख्यन्महिषोदिवामैही। (त्रिः)।

प्रोएतिप्रोएति। (त्रिः)। प्रोऽ। एति। (द्वे द्विः)। प्रोऽ२३। एताऽ२३४औहोवा॥ एऽ३।

देवादिवाज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. १६३। प. १०७। मा. ८९) १ (ठो।२७०)

॥ प्रथमः खण्डः॥१॥

(१६०।१)॥ गन्धर्वाप्सरसां आनंदप्रात्यानन्दौ द्वौ। (अतीषंगतृतीये सूर्यः) द्वयोस्सूर्यो गायत्री सूर्य॥

उविऽ२। (त्रिः)। हिगि। (त्रिः)। हिगिगि। (त्रिः)। आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदेही। (त्रिः)॥

असदन्मातरंपुराऐही। (त्रिः)॥ पितरंचप्रयन्त्स्वाऐही। (त्रिः)। उविऽ२। (त्रिः)। हिगिऽ२। (त्रिः)।

हिगिगि। (त्रिः)॥

(दी. ३६। प. २७। मा. ६) २ (खू।२७१)

(१६०।२)

उवी। (त्रिः)। हिगी। (त्रिः)। हिगिगी। (त्रिः)। आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदेही॥ असदन्मातरंपुराऐही॥

पितरंचप्रयन्त्स्वाऐही॥ उवी। (त्रिः)। हिगी। (त्रिः)। हिगिगी। (त्रिः)॥

(दी. १२। प. २१। मा. २) ३ (चा।२७२)

(१६१-१६२।११) ॥ सौर्यातीषङ्गः। उदुत्यंगायत्रीचित्रंस्त्रिष्टुप्सूर्यः॥

हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। उदुत्यञ्जा। (त्रिः)। चित्रन्देवानामुदगादनीऽ२३काऽ३म्॥

हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। तवेदसम्। (त्रिः)। चक्षुर्मित्रस्यवरुणास्यआऽ२३ग्नाऽ३इः॥

हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। देवंवहा। (त्रिः)। आप्राद्यावापृथिवीआन्तरिऽ२३क्षाऽ३म्॥

हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। तिकेतवः। (त्रिः)। सूर्यआत्माजगतस्तास्थुषाऽ२३श्चाऽ३॥

हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। दृशेविश्वा। (त्रिः)। सूर्यआत्माजगतस्तास्थुषाऽ२३श्चाऽ३॥

हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। यसूर्यम्। (द्विः)। यसूऽ२३रियाउ। वाऽ३॥ एऽ३।

देवादिवाज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. १३६। प. ५०। मा. ५४) ४ (आणी।२७३)

(१) ॥ इन्द्रस्य सधस्थम्। इन्द्रोऽनुष्टुप्सूर्यः॥

हाउहाउहाउ। सहोभ्राज। (द्विः)। सहोभ्राजा। पोभ्राजा। (द्विः)। पोभ्राज। अभ्राजीत्।

(त्रिः)। व्यभ्राजीत्। (त्रिः)। अदिद्युतत्। (त्रिः)। अदिद्युतद्विश्वंभूतंसहोबृऽ२हात्॥

अदिद्युतदभ्राट्प्राऽ२भ्राट्॥ अदिद्युतद्धर्मोअरूरूऽ२चात्॥ अदिद्युतद्धर्मउषसोअरोचाऽ२याः।

हाउ(३)। सहोभ्राज। (द्विः)। सहोभ्राजा। पोभ्राजा। (द्विः)। पोभ्राज। अभ्राजीत्। (त्रिः)।

व्यभ्राजीत्। (त्रिः)। अदिद्युतत्। (द्विः)। अदिद्युताऽ३त्। हाउवा॥ एः।

अदिद्युतद्धर्मोअरूरुचदुषसांदिविसूर्योविभातीऽ२३४५॥

(दी. ७४। प. ३९। मा. ३३) ५ (धि।२७४)

(१६३।१) ॥ मरुतां भूतिस्साम। मरुतो गायत्री सूर्यः॥

औहोऔहोवा। होइ। (द्वे द्विः)। औहोऔहोवा। हाऽ३१उ। वाऽ२३। भूऽ२३४वात्।
अन्तश्चरतिरोचना॥ औहोऔहोवा। होइ। (द्वे द्विः)। औहोऔहोवा। हाऽ३१उ। वाऽ२३।
जाऽ२३४नात्। अस्यप्राणादपानती॥ औहोऔहोवा। होइ। (द्वे द्विः)। औहोऔहोवा।
हाऽ३१उ। वाऽ२३। वाऽ२३४र्द्धात्। व्यख्यन्महिषोदिवम्॥ औहोऔहोवा। होइ। (द्वे द्विः)।
औहोऔहोवा। हाऽ३१उ। वाऽ२३। काऽ२३४रात्। औहोऔहोवा। होइ। (द्वे द्विः)।
औहोऔहोवा। हाऽ३१उ। वाऽ२३। भूऽ२३४तीः। औहोऔहोवा। होइ। (द्वे द्विः)।
औहोऔहोवा। हाऽ३१उ। वाऽ२॥ अभ्राजीज्ज्योतिरभ्राजीत्॥ औहोऔहोवा। होइ। (द्वे
द्विः)। औहोऔहोवा। हाऽ३१उ। वाऽ२३॥ एऽ३। सर्वान्कामानशीमहीऽ२३४५॥

(दी. १२१। प. ६०। मा. ४९) ६ (ङो।२७५)

(१६४।१)॥ सर्पराज्ञ्यानि (सार्पराजानो वाआ) त्रीणि। प्रजापतिर्गायत्री सूर्यः॥

हाउहाउहाउवा। ईन्दूः। भ्राजाओवा। (त्रिः)। आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदेही॥ हाउ(३)वा। ईडा।
भ्राजाओवा। (त्रिः)। असदन्मातरंपुराऐही॥ हाउ(३)वा। सात्यम्। भ्राजाओवा। (त्रिः)।
पितरंचप्रयन्त्स्वाऐही॥ हाउ(३)वा॥ दीयौः॥

(दी. ४८। प. २०। मा. २२) ७ (णू।२७६)

(१६५।१)

हाउ(३)वा। भूतम्। भ्राजाओवा। (त्रिः)। अन्तश्चरतिरोचनाऐही॥ हाउ(३)वा। पृथिवी।

भ्राजाओवा। (त्रिः)। अस्यप्राणादपानताऐही॥ हाउ(३)वा। साहः। भ्राजाओवा। (त्रिः)।

व्यख्यन्महिषोदिवामैही॥ हाउ(३)वा॥ तेजः॥

(दी. ५१। प. २०। मा. २६) ८ (ङू।२७७)

(१६६।१)

हाउ(३)वा। आपः। भ्राजाओवा। (त्रिः)। त्रिꣳशद्धामविराजताऐही॥ हाउ(३)वा। ऊषा।

भ्राजाओवा। (त्रिः)। वाक्पतङ्गायधीयताऐही॥ हाउ(३)वा। दीक्षः। भ्राजाओवा। (त्रिः)।

प्रतिवस्तोरहद्युभाऐही॥ हाउ(३)वा॥ ज्योतिः॥

(दी. ५१। प. २०। मा. २७) ९ (ङे।२७८)

(१) ॥ सर्पस्य घर्मरोचनमिन्द्रस्य वा। घर्मो (सर्पो)ऽनुष्टुप्सूर्यः॥

उवँल्लोकानरोचयः। होइ॥ इमाँल्लोकानरोवयः। होइ॥ प्रजाभूतमरोचयः। होइ॥

विश्वंभूतमरोचयः। होऽ२हाऽ२३४औहोवा॥ घर्म्मोज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. १६। प. ९। मा. ९) १० (ग़्हो।२७९)

(१६७-६९।१)॥ षडैन्द्राः परिधय ऋतूनांण् प्रथमं। इन्द्रो गायत्री सुज्यः॥

हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। दिदीहिविश्वतस्पृथुः। उदुत्यंजातऽ३वाइदाऽ१साऽ२म्॥

देवंवहन्तिऽ३काइताऽ१वाऽ२ः॥ दृशेविश्वायऽ३सूराऽ१याऽ२म्॥ श्री॥

अपत्येतायऽ३वोयाऽ१थाऽ२। नक्षत्रायन्तिऽ३याक्तूऽ१भाऽ२इः॥

सूरायविश्वऽ३चाक्षाऽ१साऽ२इ। श्री॥ अदृश्रन्नस्यऽ३काइताऽ१वाऽ२ः॥

विरश्मयोजऽ३ना२आऽ१नूऽ२॥ भ्राजन्तोअग्नऽ३योयाऽ१थाऽ२३। हाउ(३)। भ्राजाओवा।

(द्विः)। भ्राजाऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ४०। प. १९। मा. २५) ११ (भ्रु।२८०)

॥ द्वितीयः खण्डः॥२॥

(१६७-६९।२)

हाउ(३)। शुक्राओवा। (त्रिः)। दिदीहिविश्वतस्पृथुः। उदुत्यंजातऽ३वाइदाऽ१साऽ२म्॥

देवंवहन्तिऽ३काइताऽ१वाऽ२ः॥ दृशेविश्वायऽ३सूराऽ१याऽ२म्॥ श्री॥

अपत्येतायऽ३वोयाऽ१थाऽ२॥ नक्षत्रायन्तिऽ३याक्तूऽ१भाऽ२इः॥

सूरायविश्वऽ३चाक्षाऽ१साऽ२इ॥ श्री॥ अदृश्रन्नस्यऽ३काइताऽ१वाऽ२ः॥

विरश्मयोजऽ३ना२आऽ१नूऽ२॥ भ्राजन्तोअग्नऽ३योयाऽ१थाऽ२३। हाउ(३)। शुक्राओवा।

(द्विः)। शुक्राऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३४। प. १९। मा. ४५) १२ (ध्रु।२८१)

(१७०-७२।३)

हाउ(३)। भूताओवा। (त्रिः)। दिदीहिविश्वतस्पृथुः। तरणिर्विश्वऽ३दार्शाऽ१ताऽ२ः॥

ज्योतिष्कृद्इदसिऽ३सूराऽ१याऽ२॥ विश्वमाभासिऽ३रोचाऽ१नाऽ२म्॥ श्री॥

प्रत्यङ्देवाऽ३नाम्वाऽ१इशाऽ२ः॥ प्रत्यङ्ङुदेषिऽ३मानूऽ१षाऽ२न्॥

प्रत्यङ्विश्व२सुऽ३वार्दृऽ१शाऽ२इ॥ श्री॥ येनापावकऽ३चाक्षाऽ१साऽ२॥

भुरण्यन्तंजऽ३ना२ॅआऽ१नूऽ२॥ त्वंवरुणऽ३पाश्याऽ१साऽ२३इ। हाउ(३)। भूताओवा। (द्विः)।

भूताऽ३ओऽ५वाआऽ६५६॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३७। प. १९। मा. २१) १३ (झ।२८२)

(१७९-७२।४)

हाउ(३)। तेजाओवा। (त्रिः)। दिदीहिविश्वतस्पृथुः। तरणिर्विश्वऽ३दार्शाऽ१ताऽ२ः॥

ज्योतिष्कृदसिऽ३सूराऽ१याऽ२॥ श्री॥ विश्वमाभासिऽ३रोचाऽ१नाऽ२म्॥ श्री॥

प्रत्यङ्देवाऽ३नांम्वाऽ३इशाऽ२ः॥ प्रत्यङ्ङुदेषिऽ३मानूऽ१षाऽ२न्॥

प्रत्यङ्विश्व२ॅसुऽ३वार्दृऽ१शाऽ२इ॥ श्री॥ येनापावकऽ३चाक्षाऽ१साऽ२।

भुरण्यतंजऽ३ना२ॅआऽ१नूऽ२॥ त्वंवरुणऽ३पाश्याऽ१साऽ२३इ। हाउ(३)। तेजाओवा। (द्विः)।

तेजाऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३७। प. १९। मा. २१) १४ (झ।२८३)

(१७३-७५)

हाउ(३)। सत्यओवा। (त्रिः)। दिदीहिविश्वतस्पृथुः। उद्यामेषिरऽ३जाःपाऽ१र्थूऽ२॥

अहामिमानोऽ३आक्तूऽ१भाऽ२इः॥ पश्यंजन्मानिऽ३सूराऽयाऽ२॥ श्री॥

अयुक्तसप्तऽ३शून्ध्यूऽ१वाऽ२ः। सूरोरथस्यऽ३नाप्त्राऽ१याऽ२ः॥

ताभिर्यातिस्वऽ३यूक्ताऽ१इभीऽ२ः॥ श्री॥ सप्तत्वाहरिऽ३तोराऽ१थाऽ२इ॥

वहन्तिदेवऽ३सूराऽ१याऽ२॥ शोचिष्केशंविऽ३चाक्षाऽ१णाऽ२३। हाउ(३)। सत्याओवा। (द्विः)।

सत्याऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३६। प. १९। मा. २१) १५ (घ्र।२८४)

(१७३-७५।६)

हाउ(३)। ऋताओवा। (त्रिः)। दिदीहिविश्वतस्पृथुः। उद्यामेषिरऽ३जाःपाऽ१र्थूऽ२॥

अहामिमानोऽ३आक्तूऽ१भाऽ२इः॥ पश्यंजन्मानिऽ३सूराऽ१याऽ२॥ श्री॥

अयुक्तसप्तऽ३शून्ध्यूऽ१वाऽ२ः॥ सूरोरथस्यऽ३नाप्त्राऽ१याऽ२ः॥

ताभिर्यातिस्वऽ३यूक्ताऽ१इभीऽ२ः॥ श्रीः॥ सप्तत्वाहरिऽ३तोराऽ१थाऽ२इ॥

वहन्तिदेवऽ३सूराऽ१याऽ२॥ शोचिष्केशंविऽ३चाक्षाऽ१णाऽ२३। हाउ(३)। ऋताओवा। (द्विः)।

ऋताऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ३६। प. १९। मा. २१) १६ (ग्घ्र।२८५)

(१) ॥ वागादिपित्र्यंसाम (वाङ्मनः) ऋतवोऽनुष्टुप्सूर्यः॥

वाक्॥ मनःप्राणःप्राणोपानोव्यानश्चक्षुःश्रोत्रꣳशर्मवर्मभूतिःप्रतिष्ठा। आदित्यःपित्र्यम्। (त्रिः)।

आयुःपित्र्यम्। (त्रिः)॥

(दी. १५। प. ८। मा. ७) १७ (बे।२८६)

(१) ॥ चक्षुस्साम। मित्रावरुणौ गायत्री सूर्यः॥

अन्तर्देवेषुऽ३रोचाऽ१साऽ२इ। (त्रिः)। अन्तश्चरतिऽ३रोचाऽ१नाऽ२॥

अस्यप्राणादऽ३पानाऽ१ताऽ२इ॥ व्यख्यन्महिऽ३षोदाऽ१इवाऽ२म्॥

अन्तर्देवेषुऽ३रोचाऽ१साऽ२इ। (द्विः)। अन्तर्देवेषुऽ३रोऽ२३। चाऽ२। साऽ२३४। औहोवा॥

एऽ३। देवादिवाज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. २०। प. १४। मा. ९) १८ (भो।२८७)

(१७६-७७।१)॥ श्रोत्रꣳसाम। मित्रावरुणयोर्द्वितीयोऽतीषंग। उदुत्यं गायत्रीचित्रंत्रिष्टुप्सूर्यः॥

२र र १ र २ र १ र २ १ २ र १ र २
हाउ(३)। भ्राजाभ्राज। (त्रिः)। आयूरायुः। (त्रिः)। उदुत्यंजा। (त्रिः)। तवेदसम्। (त्रिः)।

१ र र र अ २ २र र १ र २ र १ र २
चित्रन्देवानामुदगादनीऽ२३काऽ३म्॥ हाउ(३)। भ्राजाभ्राज। (त्रिः)। आयूरायुः। (त्रिः)।

१र २ र १ अ २ २र र १ र २
देवंवहा। (त्रिः)। चक्षुर्मित्रस्यवरुणास्यआऽ२३ग्नाऽ३इः॥ हाउ(३)। भ्राजाभ्राज। (त्रिः)।

र १ र २ १ र २ १र र र र र अ २ २र
आयूरायुः। (त्रिः)। तिकेतवः। (त्रिः)। आप्राद्यावापृथिवीआन्तरीऽ२३क्षाऽ३म्॥ हाउ(३)॥

र १ र २ र १ र २ १ र २र
भ्राजाभ्राज। (त्रिः)। आयूरायुः। (त्रिः)। दृशेविश्वा। (त्रिः)।

१र र र अ २ २र र १ र २ र १ र २
सूर्यआत्माजगतस्तास्थुषाऽ२३श्वाऽ३। हाउ(३)। भ्राजाभ्राज। (त्रिः)। आयूरायुः। (त्रिः)।

१ र २ १ २ ^ २ २र १र र १र ३ १ १ १
यसूर्यम्। (द्विः)। यसूऽ२३रियाउ। वाऽ३॥ एऽ३। देवादिवाज्योतीऽ२३४५ः॥

(दी. ११३। प. ६०। मा. ४७) १९ (णो।२८८)

(१) ॥ इन्द्रस्य शिरस्साम। त्र्इतीयेऽतीषंग इन्द्रो गायत्री त्रिष्टुप्सूर्यः॥

२र ३र २र ३र र २ र ऽ १ २
हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। उदुत्यंजा। (त्रिः)। हाउ(३)वा। आर्चिः।

१ र र अ २ २र ३र २र ३र र २ र
इन्द्रन्नरोनेमधिताहवाऽ२३०ताऽ३इ॥ हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। तवेदसम्। (त्रिः)।

ऽ १ २ र ३र २र ३र र २र र ऽ १ २
हाउ(३)वा। शोचिः। हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। देवंवहा। (त्रिः)। हाउ(३)वा। तापः।

१ र र २ २र ३र २र ३र र २ र
यत्पार्यायुनजताइधियाऽ२३स्ताऽ३ः॥ हाउ(३)। भाजाओवा। (त्रिः)। तिकेतवः। (त्रिः)।

ऽ १ २ र ३र २र ३र र २ र र ऽ १ २
हाउ(३)वा। हारः। हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। दृशेविश्वा। (त्रिः)। हाउ(३)वा। साहः।

१र र र र अ २ २र ३र २र ३र र २ र
शूरोनृषाताश्रवसाश्चकाऽ२३माऽ३इ॥ हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। यसूर्यम्। (त्रिः)।

ऽ १ २ र ३र २र ३र र २ र र ऽ १ _
हाउ(३)वा। नारः। हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। दृशेविश्वा। (त्रिः)। हाउ(३)वा। भाऽ२ः।

आगोमतिव्रजेभजातुवाऽ२३न्नाऽ३ः। हाउ(३)। भ्राजाओवा। (त्रिः)। यसूर्यम्। (त्रिः)।

हाउ(३)वाऽ३॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १६४। प. ७६। मा. ९६) २० (त्रू।२८९)

(१) ॥ आदित्यस्योन्नयादित्यात्मा। आदित्योऽनुष्टुबादित्यात्मा॥

उन्नयामि। होइ॥ (द्वे त्रिः)। आदित्यंप्राश्चंयन्तमुन्नयामि। होइ। (द्वे त्रिः)। अहोरात्राण्यरित्राणि।

होइ। (द्वे त्रिः)। द्यौर्नौर्हाउ। तस्यामसावादित्यईयतेहाउ। (त्रिः)।

तस्मिन्वयमीयमानईयामहेहाउ॥ (त्रिः)। ईयामहेहाउ। (द्विः)॥ ईयामहेऽ३। हाउ(३)वा॥

प्रियेधामश्स्त्रियक्षरे। (द्विः)। प्रियेधामश्स्त्रियक्षरेऽ२३४५॥

(दी. ६५। प. ३४। मा. २७) २१ (भे।२९०)

[शुक्रियपर्वणि ४० सामानि]

॥दशतृतीयः खण्डः॥३॥

इति (ग्रामे) आरण्यकगाने षष्ठः प्रपाठकः॥६॥

॥ इति शुक्रिय नाम चतुर्थं पर्व सामाप्तम्॥

॥ इति षष्ठं गानं समाप्तम्॥

॥ इति गेयगानम्॥

॥ अथ महानाम्न्यार्चिकः॥

(१) ॥ महानाम्नी साम। इन्द्रो विराडिन्द्रः, इन्द्रः शक्वरीन्द्रः॥

एऽ२। विदामघवन्विदाः॥ गातुमनुशꣳसिषः। दाइशाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा॥ एऽ२।

शिक्षाशचीनाम्पताइ॥ पुर्वीणाम्पूरूऽ२। वसाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा। आभिष्ट्वमभाऽ२इ।

ष्टिभिराऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा। स्वर्न्नाꣳशूऽ२ः। हाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा। प्रा।

चेतनप्रचेतया॥ ईन्द्रा॥ द्युम्नायनाऽ२इषाइ। इडा॥ ईन्द्रा॥ द्युम्नायनाऽ२इषाइ। अथा॥ ईन्द्रा॥

द्युम्नायनाऽ२इषाइ। इडा। एवाहिशक्रोरायेवाजायवाऽ१ज्रीऽ३वाः। शविष्ठवज्रिनाऽ३।

जासाइ॥ मꣳहिष्ठवज्रिन्नाऽ२३हो॥ जासाऽ३१उवाऽ२३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥ आया।

हिपिबमाऽ२त्सुवा॥ इडाऽ२३४५॥

(दी. २२। प. ३६। मा. २०) १ (चौ।१)

(२)

एऽ२। विदारायेसुवीरियाम्॥ भुवोवाजानाम्पतिर्वशाऽ२ꣳ। अनुआऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा॥

एऽ२। मꣳहिष्ठवज्रिन्नृञ्जसाइ। यःशविष्ठःशूराऽ२। णाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा॥

योमꣳहिष्ठोमघोऽ२। नाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा॥ अꣳशुर्नशोचाऽ२इः। हाऽ३१उवाऽ२३।

ईऽ३४डा। चाइ। किबोअभिनोनया॥ ईन्द्रो॥ विदेतमूऽ२स्तुहाइ। इडा॥ ईन्द्रो॥

विदेतमूऽ२स्तुहाइ। अथा॥ ईन्द्रो। विदेतमूऽ२स्तुहाइ। इडा।

इशेहिशक्रस्तमूतयेहवाऽ१माऽ३हाइ।। जेतारमपराऽ३। जाइताम्॥ सनःस्वर्षदताऽ२३होइ॥

द्वाइषाऽ३१उवाऽ२३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥ क्रातूः॥ छन्दऋताऽ२म्बृहात्॥ इडाऽ२३४५॥

(दी. २३। प. ३५। मा. २४) २ (टी।२)

(३)

एऽ२। इन्द्रन्धनस्यसातया॥ हवामहेजेतारमपराऽ२। जितमाऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा॥

एऽ२। सनःस्त्वर्षदतिद्विषाः॥ सानःस्त्वर्षदताऽ२इ। द्विषआऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा।

पूर्वस्ययत्तआऽ२। दिव्रआऽ३१उवाऽ२३। ईऽ३४डा। अ२शुर्मदायाऽ२। हाऽ३१उवाऽ२३।

ईऽ३४डा। सू। म्नआधेहिनोवसाउ। पूर्त्तीः॥ श्रविष्ठश्राऽ२स्यताइ। इडा॥ पूर्तीः॥

श्रविष्ठश्राऽ२स्याताइ। अथा॥ पूर्त्तीः॥ श्रविष्ठश्राऽ२ऽस्यताइ। इडा।

वशीहिशक्रोनूनन्तन्नव्य२साऽ१न्याऽ३साइ। प्रभोजनस्यवाऽ३। त्राहान्॥ समर्येषुब्रुवाऽ२३होइ॥

वाहाऽ३१उवाऽ२३॥ इट्स्थिइडाऽ२३४५॥ शूरो॥ योगोषुगाऽ२च्छताइ॥ इडा॥ साखा॥

सुश्रेवोऽ२द्वयूः॥ इडाऽ२३४५॥

(दी. १८। प. ३९। मा. २५) ३ (ढु।३)

॥ अथ पञ्च पुरीषपदानि॥

(४)

आइवा॥ हियेवाऽ२३४५। होइ॥ हो। वाहाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ३४डा॥ आइवा॥

हियग्नाऽ२३४५इ। होइ॥ हो। वाहाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ३४डा॥ आइवा॥ हिइन्द्राऽ२३४५।

होइ॥ हो। वाहाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ३४डा॥ आइवा॥ हिपुषाऽ२३४५न्। होइ॥ हो।

वाहाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ३४डा॥ आइवा॥ हिदेवाऽ२३४५ः। होइ॥ हो।

वाहाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ३४डा॥

(दी. ८। प. ३०। मा. १९) ४ (णो।४)

॥ इति पञ्च पुरीषपदानि॥

(१) ॥ उद्वयामेकं साम॥

उद्वयाऽ६मे॥ तमऽ३सास्पराऽ२इ। ज्योतिःपश्यन्ताउत्तराऽ२म्॥ स्वःपश्यन्ताउत्तराऽ२म्॥

देवंदेवत्रासूराऽ२याऽ२३४औहोवा॥ अगन्मज्योतिरुत्तमाऽ१म्॥

(दी. ८। प. ६। मा. ७) ५ (टे।५)

(१)

तत्सवितुर्वरेण्योम्॥ भर्गोदेवस्यधीमाहीऽ२। धियोयोनःप्रचोऽ१२१३॥ हिम्०स्थिआऽ२। दायो॥

आऽ३४५॥

(दी. ६। प. ६। मा. २) ६ (का।६)

॥ अथ भारुण्ड साम॥

हाउ(३)। ऊऽ२वदः। (त्रिः)। वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)। यमोहाउ। (त्रिः)।

पितरोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डोहाउ। (त्रिः)। इमꣳस्तोमाम्। अर्हातेजा। तावेदसहोयेऽ३।

होयेहोये॥ हाउ(३)। ऊऽ२वदः। (त्रिः)। वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)।

यमोहाउ। (त्रिः)। पितरोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डोहाउ। (त्रिः)। रथामिवा। संमाहेमा।

मानीषयहोयेऽ३। होयेहोये॥ हाउ(३)। ऊऽ२वदः। (त्रिः)। वदोवदः (त्रिः)।

वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)। यमोहाउ। (त्रिः)। पितरोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डोहाउ। (त्रिः)।

भद्राहिनाः। प्रमातिरा। स्यासꣳसदहोयेऽ३। होयेहोये॥ हाउ(३)। ऊऽ२वदः। (त्रिः)।

वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)। यमोहाउ। (त्रिः)। पितरोहाउ। (त्रिः)।
भारुण्डोहाउ। (त्रिः)। अग्नाइसख्याइ। माराइषामा। वायंतवहोयेऽ३। होयेहोये॥ हाउ(३)।
ऊऽ२वदः। (त्रिः)। वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)। यमोहाउ। (त्रिः)।
पितरोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डोहाउ। (द्विः)। भारुण्डोऽ३हाउ। वा॥ ए।
वदोवदोनृम्णानिपुराययमोवःपितरोभारुण्डः। ए। वदोवदोनृम्णानिपुराययमोवःपितरोभारुण्डः।
ए। वदोवदोनृम्णानिपुराययमोवःपितरोभारुण्डाऽ२३४५ः॥

(दी. १५४। प. ११८। मा. ११३) ७ (दि।७)

[आरण्यकगान सामसंख्या २९०]

॥ इत्यारण्यकगाने भारुण्डेनसह महानाम्नी सप्तमं गानं समाप्तम्॥

॥ इति आरण्यकगानं समाप्तम्॥

॥ अथ भारुण्डस्य पाठान्तरम्॥

उद्वयाम्। तमसस्पारीऽ२। ज्योतिःपश्यन्तउत्तराऽ२म्। स्वःपश्यन्तउत्तराऽ२म्।
देवन्देवत्राऽ२सूऽ२३४रीम्। अगन्मज्योतिरुत्तमाऽ१म्। स्वसारः। आतोतुनआतोतूऽ३४।
औहोवा। ओऽ२वातः। (त्रिः)। वातोवातः। (द्विः)। वातोनृम्णानिपूऽ३याः। यमोहाउ। (त्रिः)।
पितरोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डोहाउ। (त्रिः)। इमाꣳस्तोऽ२३४माम्। अर्हातेऽ२३४जा।
तावेदसेऽ३। होइ। होइयेऽ३। (त्रिः)। होइये। (त्रिः)। उऽ२वातः। (त्रिः)। वातोवातः। (द्विः)।
वातोनृम्णानिपुराऽ३याः। यमोहाउ। (त्रिः)। पितरोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डोहाउ। (त्रिः)।
रथामीऽ२३४वा। सम्माहेऽ२३४मा। मानीषया। (त्रिः)। होइ। होइयेऽ२। (त्रिः)। होइये।

(त्रिः)। उऽ२वातः। (द्विः)। वातोवातः। (द्विः)। वातोनृम्णानिपुराऽ३याः। यमोहाउ। (त्रिः)।
पितरोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डोहाउ। (त्रिः)। भद्राहीऽ२३४नाः। प्रमातीऽ२३४रा।
स्यासꣳसदेऽ३। होइ। होइयेऽ३ (त्रिः)। होइये। (त्रिः)। उऽ२वातः। (त्रिः)। वातोवातः।
(द्विः)। वातोनृम्णानिपुराऽ३याः। यमोहाउ। (त्रिः)। पितरोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डोहाउ। (त्रिः)।
अग्नाइसाऽ२३४ख्याइ। माराइषाऽ२३४मा। वायन्तवाऽ३। होइ। होइयेऽ३। (त्रिः)।
होइये। (त्रिः)। उऽ२वातः। (त्रिः)। वातोवातः। (द्विः)। वातोनृम्णानिपूऽ३याः। यमोहाउ।
(त्रिः)। पितरोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डोहाउ। (त्रिः)। भारुण्डाऽ३४औहोवा। ए।
वातोनृम्णानिपुरायद्यमःपितरोभारुण्डः। (द्विः)। ए। वातोनृम्नानिपुरयद्यमःपितरोभारुण्डाऽ२।
ईऽ२३४५॥ १॥

ॐ नमस्सामवेदाय।

अथ शखान्तरस्थं तवश्यावीयं साम॥

हरिः ॐ

ॐ हꣳऽ२३४५। ओंभूः। ओंभूमिर्द्दिवमन्तरिक्षम्। ओंभुवः। ओंऋचोयजुꣳषिसामानि।
ओंभार्गोदेवस्यधीमाहीऽ२३४५। ओंस्वः। ओंप्राणोपानोव्यानःसमानउदानः।
ओंधियोयोनःप्रचोऽ२३४५। ओंमहः। ओंजनः। ओंतपः। ओंसत्यम्। ओंपुरुषाः।
ओंपरोरजोअमृतोम्। ओंहꣳऽ२३४५। हिम्। आऽ२। दायो। आऽ२३४५।
ओंभूमिरन्तरिक्षन्द्यौः। ओंतत्सवितुर्वरेणियोम्। ओंऊऽ२र्के। हाउ(३)। होऽ३वाक्।
ओंबह्मोओयजोअमृतोम्। ओंऊऽ२र्के। हाउ(३)। होऽ३वाक्। (त्रिः)।

ओंप्राणोपानौ(नो)व्यानोसमानउदानः। धियोयोनःप्रचोऽ२३४५। ओंऊऽ२र्के। हाउ(३)।
होऽ३वाक्। (त्रिः)। धर्मोऽ२धर्मः। (त्रिः)। धर्मविधर्म। (त्रिः)। सत्यङ्गाय। (त्रिः)। ऋतंवद।
(त्रिः)। हꣳवंवऽ२म्। वंवऽ२म्। वम्। (त्रिः) ॥१॥

॥ इति तवश्यावीयं साम समाप्तम्॥